# उमेश मिश्र

गोविन्द झा

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
817.230 92
M 687 J

MT
817.230 92
M 687J

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

उमेश मिश्र

भारतीय साहित्यक निर्माता

# उमेश मिश्र

गोविन्द झा

साहित्य अकादेमी

*Umesh Mishra* : A monograph by Govinda Jha on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1984),
**SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

MT
817 230 92
M 687 J

© साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 M 687 J
00117142

**प्रथम संस्करण** : 1984

साहित्य अकादेमी

**प्रधान कार्यालय**

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001

**क्षेत्रीय कार्यालय**

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता 700029
29, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास 600018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400014

**SAHITYA AKADEMI**
REVISED PRICE Rs. 15.00

Indian Institute of Advance
117142
9.12.04
SHIMLA

**मुद्रक** :
संजय प्रिंटर्स,
दिल्ली 110032

# प्रासंगिक विज्ञप्ति

एहि पुस्तकमे बहुत-रास बात अनकासँ पूछि-पूछि लिखए पड़ल अछि। असंभव नहि जे तें किछु भ्रान्तो बात लिखाए गेल हो। एहि प्रकारक पोथीमे प्रत्येक तथ्यक सूचना-स्रोतक निर्देश करब अव्यावहारिक। अतः एहिमे एहन जे कोनो भ्रान्त बात आएल हो तकर दोष हम अनका सिर पर नहि पटकि अपने उपर लैत छी आ' एहि हेतु क्षमा प्रार्थी छी।

म०म० डा० उमेश मिश्रसँ हमरा किछुए दिन प्रत्यक्ष सम्पर्क भेल : जखन ई मिथिला संस्कृत इन्स्टिच्यूटक निदेशक रहथि आ' हमर पिता महावैयाकरण दीनबन्धु झा ओहिमे प्राचीन पण्डितक पद पर रहथि। एहि सम्पर्के जे कतोक बात हम प्रत्यक्षतः जनैत छलहुँ तकर उपयोग एहि पुस्तकमे कएल अछि।

हम पण्डितक बालक छी। स्वयं प्राचीन रीतिसँ संस्कृत व्याकरण पढ़ने छी। प्राच्य विद्यामे विशेष रुचि अछि। तें स्वभावतः हमरा म०म० मिश्रक प्रति असीम श्रद्धा अछि। एहि श्रद्धातिरेकवश यदि हुनक प्रशंसामे हमरासँ किछु अत्युक्ति कएना गेल हो तँ ताहिसँ आन कोनो विद्वान् कृपया अपना पर आक्षेप नहि बूझथि से हमर नम्र निवेदन।

म०म० मिश्रक जाहि प्रकारक साजल ओ माजल जीवन छन्हि ताहिमे लाख चेष्टा कएलहु पर हम रोचकता नहि आनि सकलहुँ। तथापि जनिका मैथिली-जगत् ओ संस्कृत-जगत्सँ सम्बन्ध वा अनुराग होएतन्हि तनिका ई इतिवृत्तात्मको विवरण नीरस नहि लगतन्हि से आशा अछि।

हम डा० जयकान्त मिश्र, भूतपूर्व प्रोफेसर, प्रयाग विश्वविद्यालयक भूरि-भूरि कृतज्ञ छी जे प्रचुर सामग्री ओ सूचना दए हमर एहि काजकें सरल बनाए देलन्हि।

—गोविन्द झा

# वस्तुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 1. | देश ओ काल | 9 |
| 2. | संक्षिप्त जीवनवृत्त | 12 |
| 3. | कुल-परिवार | 15 |
| 4. | शिक्षा-दीक्षा | 19 |
| 5. | मातृवाणीक मन्दिरमे | 24 |
| 6. | राष्ट्रवाणीक मन्दिरमे | 35 |
| 7. | भारतीय दर्शनक प्रांगणमे | 38 |
| 8. | सर गंगानाथ झाक चटिसारमे | 49 |
| 9. | संस्कृत शिक्षामे नव युगक अवतारणा | 53 |
| 10. | जीवनक शीतल सन्ध्यामे | 61 |
| 11. | व्यक्तिगत वैलक्षण्य | 63 |
| | परिशिष्ट 1 : कृतिक विवरण | 71 |
| | परिशिष्ट 2 : वंशावली | 77 |

# 1

# देश ओ काल

विहार प्रदेशक अन्तर्गत उत्तर ओ ईशान कोणमे अवस्थित, उत्तर-दिस नेपाल तराइ, पश्चिम-दिस सदानीरा (गंडकी), दक्षिण-दिस गंगा ओ पूव-दिस कोसीसँ दुर्गवत् परिवेष्टित, मध्यमे शतशः नदी-उपनदीसँ परिसिंचित, पर्वत-पहाड़सँ सर्वथा रहित तथा सस्य-सम्पदासँ सदा हरित-भरित जे भूभाग अछि सएह थिक आजुक मिथिला आ एही मिथिलाक एक सपूत छलाह महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र, एम० ए०, डी० लिट्०, जनिक चरित एहि पुस्तिकामे लिखल जाए रहल अछि।

मिथिला, अपन विशिष्ट भौगोलिक परिवेशक कारण प्रागैतिहासिक कालहि सँ दुर्गम रहल अछि। अनेक हजार वर्ष पूर्व माथव विदेघ 'कृणुत विश्वमार्यम्' केर संकल्प लए पश्चिमसँ पूव-दिस प्रयाण करैत-करैत सदानीराक तट पर पहुँचलाह आ अपन सहयात्री प्रबुद्ध ऋषिलोकनिक एक हेंजक संग सदानीराकेँ पार कए मिथिलाक भूमिपर आबि वसलाह। ई भारतवर्षक प्रागैतिहासिक कालक एक महान् घटना सिद्ध भेल। प्रायः सर्वप्रथम ताही समयमे एतए जे ज्ञानक उज्ज्वल दीप बारल गेल से हाल धरि बरैत रहल अछि। भारतक विशाल भूमिपर एहि सुदीर्घ अवधिक बीच विभिन्न समयमे अवश्यमेव नाना प्रकारक राजनैतिक ओ वैचारिक विहारि उठैत रहल आ किछु-ने-किछु अपन प्रभाव छोड़ि शान्त होइत गेल। परन्तु मिथिलाक जनजीवन पर एहि प्रकारक बाह्य प्रभाव अन्य क्षेत्रक तुलनामे बहुत कम पड़ल आ' परिवर्तनक गति एतए परम मन्द रहल। तथापि अलक्षित रूपेँ परिवर्तन होइत गेल। वैदिक मिथिला स्थानीय विभिन्न धर्म, पुराख्यान, भाषा एवं संस्कृति केँ आत्मसात् करैत सम्राट् अशोकक कालमे आबि पूर्णतः स्मार्त एवं पौराणिक मिथिला भए गेल आ' ओकर समाज नाना प्रकारक व्यवसायमूलक जाति-प्रजातिक एक अद्भुत सम्मेलन बनि गेल। मिथिलाक ई रूप-रंग तकरा बाद बहुतो दिन धरि यथावत् स्थिर रहल आ' एकर झलक गत शताब्दीक अन्त धरिक लोक अपन आँखि सँ देखलक।'

भारतक इतिहासमे जहिना गंगाक दक्षिणमे मगध राजनीतिक उर्वर भूमि रहल अछि तहिना गंगाक उत्तरमे मिथिला विद्याक भूमि। वैदिक कालहिसँ एकर विद्या दू धाराक संगम छल—वैदिक धर्म ओ औपनिषदिक दर्शन, जे परवर्ती काल

मे कर्मकाण्ड ओ ज्ञानकाण्ड शब्दसँ विदित भेल। म०म० डा०उमेश मिश्र एही पुण्य संगममे आजीवन डुबकी लैत रहलाह आ' एही संगममे अवभृथ-स्नान कए अपन जीवन-महायज्ञक अवसान कएलन्हि। धर्म हिनक आराधना छल आ' दर्शन साधना। इएह छल हिनक देशक परम्परा आ' इएह छल हिनक कालक आदर्श। जीवनमे भोग-विलास, आमोद-प्रमोद, परपीड़क स्पर्धा हेय बूझल जाइत छल आ' एहि प्रकारक भावना पर सदा निग्रह राखब आवश्यक मानल जाइत छल।

परन्तु मनुष्य मनुष्य थिक। ओ एहि भावनाकेँ कम कए सकैत अछि, मुदा जड़ि-मूलसँ समाप्त नहि कए सकैत अछि। अतः धर्म ओ दर्शनक धाराकेँ अवाधित रखैत समय-समय पर रमणीयार्थप्रतिपादक वा रसात्मक रचना आ' तकर चर्वणा सेहो कए लेल जाइत छल। तदनुसार म०म० मिश्र सेहो गौण रूपमे साहित्यक सर्जना ओ चर्वणा कएलन्हि ओ एहू रूपमे जे किछु लिखि गेल छथि से हुनका 'भारतीय साहित्यक निर्माता'क प्रतिष्ठित पद देअएबाक हेतु पर्याप्त अछि।

म०म० मिश्रक जन्म 1895 इ०मे भेल। एहि काल धरि मिथिला, भारतक अन्यान्य भागक विपरीत, पतनोन्मुख एवं विकृत गतानुगतिकताक जालमे छेकल छल आ' स्वभावतः बाहरसँ आएल उत्तमोत्तमो नव वस्तुकेँ अग्राह्य-अपवित्र बूझि लैत छल। एतए अङरेजी राजक स्थापनासँ पूर्व बहुत दिन धरि मुसलमानक शासन रहल आ' ओकर भाषा फारसी रहलैक। फारसी जननिहार उच्च पद ओ प्रतिष्ठा पबैत छलाह। किन्तु मिथिलामे, विशेष कए मैथिल ब्राह्मणमे, जे विद्याक अनन्य प्रहरी मानल जाइत छलाह,इएह नारा चलैत रहल जे 'न वदेद् यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि।' जखन फारसीक प्रति एतेक घृणा तखन अङरेजीक कोन कथा। एकर नाम तँ हालहिमे हुनकालोकनिक कानमे पड़ल छलन्हि। फारसीक वा अङरेजीक ज्ञाता एतए कदाचिते केओ-केओ भेलाह। शिक्षाक अर्थ होइत छल संस्कृत भाषामे परम्परागत शास्त्रक पठन-पाठन, जाहिमे वेद, धर्मशास्त्र, मीमांसा, न्याय, व्याकरण ओ ज्यौतिष—इएह पाँच-छओ विषय रहैत छल। परम्परानुसार जे केओ विद्या पढ़ए चाहैत छलाह तनिका एहि सभसँ कोनो एक विषय मुख्य रूपेँ पढ़ए पड़ैत छलन्हि, अन्य कोनो वाह्य वा नव विषय पढ़ब, संस्कृत छाड़ि कोनो आन भाषा सीखब अनावश्यके नहि, प्रत्युत वर्जित बूझल जाइत छल।

यौवनावस्थामे सम्प्राप्त किछु छात्रलोकनि चोराए-नुकाए यदा-कदा संस्कृतक काव्य वा आधुनिक भाषाक गीत-कवित्त पढ़ि-लिखि लैत छलाह। जे युवा छात्र कनेको काव्य-रचना-दिस झुकैत छलाह तनिक गुरुजनबीच निन्दा होइत छल आ' कहल जाइत छल—'हिनका की विद्या होएतन्हि, ई तँ रजनी-सजनीमे लागि गेलाह।' अतः जे एहि रजनी-सजनीसँ दूर रहि शास्त्र पढ़ि विद्वान होइत छलाह आ' अपन परम्परागत धर्म-कर्म तथा आचार-विचार पर दृढ़ रहैत छलाह से समाज मे 'पण्डित' कहबैत छलाह। ओहि समयमे 'पण्डित' शब्दक इएह टा विशेष अर्थ

होइत छल। समाजमे पण्डितक एक विशेष स्थान होइत छल। धार्मिक वा आचार-व्यवहारसम्बन्धी कोनो विवाद उत्पन्न भेला पर पण्डिते व्यवस्था दैत छलाह आ' ओहि व्यवस्थाक पालन समाज परम आस्थासँ करैत छल। समाजपर पण्डितक मतामतक बड़ प्रभाव पड़ैत छल, अतः ओ समाजक मानू 'नेता' सेहो होइत छलाह। पण्डितक सभसँ महत्त्वपूर्ण काज होइत छल विद्या-दान करब। जे-केओ पढ़ए चाहए तकरा निःशुल्क पढ़ाएब हुनक कर्तव्य आ व्यसन होइत छल। नीक छात्र जुटने हुनक प्रतिष्ठा बढ़ैत छल आ हुनक घर स्वयं एक विद्यालयमे परिणत भए जाइत छल जे ओहि समय 'चौपाड़ि' कहबैत छल। पण्डितकें नियत आयक ने कोनो साधन रहैत छलन्हि आ ने तकर चिन्ते। हुनक भरण-पोषण समाजसँ समय-समयपर अनायास प्राप्त दान-दक्षिणहिसँ भए जाइत छलन्हि वा ई कहू जे जतवे जे नगद वा वस्तुरूप मे सम्प्राप्त भए जाइत छलन्हि ततवहिसँ सन्तोष कए आनन्दपूर्वक निर्वाह कए लैत छलाह। इएह छल पण्डितक आदर्श। एहन आदर्श पण्डित समाजमे कैक हजार मध्य केओ-केओ होइत छलाह। साक्षरता ब्राह्मणवर्गहुमे अत्यल्प रहि गेल छल, अन्य वर्गक तँ कथे कोन। हँ, कायस्थ साक्षर होइत छलाह। समाजकें जँ किछु लिखएवा-पढ़एबाक आवश्यकता भेलैक तँ से कायस्थसँ करबैत छल। सामान्य लोक खेतीकें एकमात्र जीवनोपाय बुझैत छल आ' ताहिमे साक्षरताक कोनो टा आवश्यकता नहि होइत छलैक। केवल धनिक वा कुलीन घरक बच्चाकें अक्षर ज्ञान ओ गणितज्ञान कराओल जाइत छलैक। एहि काजमे पारिश्रमिक पर कायस्थ नियोजित कएल जाइत छलाह।

विद्या पढ़बाक स्थान दू प्रकारक छल-पहिल पण्डितक चौपाड़ि(गृह-पाठशाला) आ' दोसर जमिन्दारक दरबार। समृद्ध जमिन्दारलोकनि अपन आश्रयमे पण्डित कें रखैत छलाह। पण्डित हुनका धार्मिक कर्म करबैत छलथिन्ह आ' ताहिसँ भिन्न समयमे अध्यापन सेहो करैत छलाह। इएह जमिन्दारलोकनि वास्तवमे शिक्षाक, विशेषतः उच्च शिक्षाक संरक्षक छलाह। पैघ-पैघ जमिन्दार, जे समाजमे राजाक सदृश पूजित होइत छलाह, नीक पण्डितकें अपन दरबारक शोभे नहि, प्रतिष्ठा सेहो बुझैत छलाह। परन्तु सभ पण्डितकें एहि प्रकारक आश्रयदाता नहि भेटैत छलथिन्ह अतः अधिकतर पण्डित की तँ अपन बाड़ीक साग-पातसँ निर्वाह करैत अपन घरहि पर चौपाड़ि चलबैत छलाह आ कि आश्रयदाताक अन्वेषणमे दूर देश चल जाइत छलाह। इएह छल म०म० मिश्रक जन्म-कालमे मिथिलाक सामान्य शैक्षिक ओ शैक्षणिक अवस्था।

# 2

# संक्षिप्त जीवनवृत्त

महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र, एम० ए०, डी० लिट्०, काव्यतीर्थक जन्म 1895 (अठारह सए पंचान्नब्बे) इसवीमे नभम्बर मासक 18 (अठारह) तारीख कें, नेपाल राज्यक अन्तर्गत जनकपुर धामक निकट अपन मातृक विन्ही गाममे, सोदरपुर दिगोन मूलक शाण्डिल्यगोत्रीय मैथिल ब्राह्मणक कुलमे भेलन्हि। हिनक पिता छलाह महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र ओ माताक नाम छलन्हि सूगा देवी। हिनक पैतृक निवास छल बिहार प्रदेशक उत्तरी सीमाक निकट वर्तमान मधुबनी जिलाक बाबू बर्ही प्रखण्डक अन्तर्गत गजहरा गाममे, जे राजनगर रेलवे स्टेशनसँ लगभग तेरह किलोमीटर पूब अछि।

1902 इ० मे, जहिआ ई सातें वर्षक छलाह, हिनक माता सूगा देवीक असामयिक निधन भए गेल। तकरा बादसँ हिनक पालन-पोषण करबाक तथा लिखएबा-पढ़एबाक सभ भार हिनक पिताकें स्वयं उठाबए पड़लन्हि। एहि समयमे हिनक पिता म० म० जयदेव मिश्र महाराजाधिराज मिथिलेश रमेश्वर सिंहक आश्रयमे दरभंगामे रहैत छलाह। बालक उमेश पिताक संग दरभंगा अएलाह आ' एतहि अक्षर-शिक्षा पओलन्हि। 1903 इ० मे म० म० जयदेव मिश्र वाराणसीक दरभंगा पाठशालामे अध्यापक नियुक्त भेलाह आ' पुत्रकें अपना संग वाराणसी आनि ओतए विधिवत् शिक्षा देबए लगलाह।

वाराणसीमे महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र (संक्षेप मे 'म० म० मिश्र') कें उत्कृष्ट आधुनिक शिक्षा प्राप्त करबाक अवसर भेलन्हि। संगहि प्राचीन रीतिक शिक्षा पितासँ अनायास भेटैत रहलन्हि। 1914 इ० मे म०म० मिश्र वाराणसीक बंगाली टोला हाइ स्कूलसँ मैट्रिक परीक्षा पास कएलन्हि तथा एहि परीक्षामे संस्कृतमे सर्वोच्च स्थान पाबि 'शिरोमणि-स्वर्ण-पदक' प्राप्त कएलन्हि। तकरा बाद बनारस गभर्नमेन्ट संस्कृत कालेजमे प्रविष्ट भए 1916 इ० मे मध्यमा परीक्षा पास कएलन्हि। तखन संस्कृत कालेजसँ नाम कटाए सेन्ट्रल हिन्दू कालेज, वाराणसी मे प्रविष्ट भेलाह आ ततएसँ 1918 इ० मे इन्टरमीडिएट परीक्षा पास कएलन्हि। एही वर्ष 22 वर्षक अवस्थामे मङरौनी गामक सुरेन्द्र झाक कन्या कुमुदिनी देवी (प्रसिद्ध नाम नूनू दाइ) सँ विवाह कएलन्हि। 1920 इ० मे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयसँ बी० ए० कएलन्हि आ' ओतहिसँ 1922 इ० मे विशेष विषय भारतीय

दर्शनक संग संस्कृतमे एम० ए० कएलन्हि। 1923 इ० मे बंगाल संस्कृत एसोसिएशनसँ काव्यतीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण कएलन्हि।

1923 इ० मे प्रयाग विश्वविद्यालयक संस्कृत विभागमे व्याख्याताक पद पर नियुक्त भेलाह। एतए महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झाक निकट सम्पर्कमे अएलाह आ हुनकासँ प्रेरणा तथा मार्गदर्शन पवैत अध्यापनक संग-संग प्राच्यविद्याक गहन स्वाध्याय एवं ग्रन्थलेखनादि कार्य निरन्तर करैत रहलाह। 1923 ई० सँ 1959 ई० धरि एहि रूपें सरस्वतीक सेवामे लागल रहलाह। एहि बीच अङरेजी, मैथिली, हिन्दी ओ संस्कृत भाषामे अनेक ग्रन्थ लिखलन्हि, अनेक शोधमूलक निवन्ध लिखलन्हि, अनेक जटिल ग्रन्थ सभक सम्पादन कएलन्हि आ' प्राच्यविद्यासम्वन्धी एवं साहित्य-सम्वन्धी अनेक संस्थाक स्थापना कएलन्हि वा एहन संस्था सभमे नाना रूपें योगदान कएलन्हि। एहि सभमे कतोक विशेष उल्लेखनीय अछि। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक तृतीय अधिवेशनक अध्यक्षता कएलन्हि। पुनः उक्त परिषद द्वारा आयोजित मैथिली शैली निर्धारण समितिक अध्ययक्षपदकें सुशोभित कएलन्हि। हुनक दुहू भाषण मैथिलीक माइलस्टोन मानल जाइछ। 1943 इ० मे नव-वर्ष दिवसक अवसर पर महामहोपाध्यायक सर्वोच्च उपाधि पओलन्हि। एही वर्ष विहार सरकारक संस्कृत शिक्षा सुधार समितिक सदस्य वनाओल गेलाह; अखिल भारतीय प्राच्यविद्या-सम्मेलन (ओरिएन्टल कान्फरेन्स)क वाराणसी अधिवेशनमे धर्म एवं दर्शन विभागक अध्यक्षता कएलन्हि; अपन प्रेरणा-पुरुष महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झाक निधन भेलापर हुनक स्मारक रूपमे 'गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट' क स्थापना कएलन्हि आ तकर सचिव नियुक्त भेलाह। एतएसँ प्राच्यविद्यासम्वन्धी जर्नल चलओलन्हि। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक मुजफ्फरपुर अधिवेशनमे मैथिली शैली-निर्धारण-समितिक अध्यक्षता कएलन्हि आ' मैथिली वर्तनी (स्पेलिङ) मे एकरूपता स्थापित कएलन्हि। 1946 इ० मे पुनः अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनक नागपुर अधिवेशनमे धर्म ओ दर्शन विभागक अध्यक्षता कएलन्हि। 1948 इ० मे अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनक दरभंगा अधिवेशनक हेतु स्थानीय सचिव नियुक्त भेलाह आ' सभ सूत्र अपना हाथमे लए उक्त अधिवेशन अभूतपूर्व सफलतापूर्वक सम्पन्न कएलन्हि। पुनः एही वर्ष अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मेरठ अधिवेशनमे दर्शन विभागक अध्यक्षता कएलन्हि।

म० म० मिश्र 1923 इ०सँ लए 1959 इ० धरि छत्तीस वर्ष प्रयाग विश्वविद्यालयमे रहलाह। एहि बीच केवल चारि वर्ष 1949 इ० सँ 1952 इ० धरि महाराज मिथिलेश सर कामेश्वर सिंह बहादुरक अनुरोधसँ हुनक संस्थापित मिथिला रिसर्च इन्स्टिच्यूट, दरभंगामे निदेशकक पद पर रहलाह आ' एहि नव संस्थाकें सुव्यवस्थित मार्ग धराए पुनः अपन मूल पद पर घुरि अएलाह।

1961 इ० मे जखन उक्त दरभंगा-महाराजक उदारतापूर्ण दानसँ दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना भेल तखन ई प्रथम कुलपति बनाओल गेलाह आ' जनवरी 1961 सँ फरवरी 1964 इ० धरि एहि पदपर आसीन रहलाह।

1964 इ० मे कुलपति-पदसँ मुक्त भेला पर ई अपन जीवनक चतुर्थ चरणमे प्रवेश कएलन्हि। एतएसँ हिनक विद्योन्मुख जीवन विशेष रूपें धर्मोन्मुख भए गेल। एही वर्ष अपन निवास-ग्राम गजहरामे एकटा पोखरि खुनओलन्हि। 1966 इ०मे एही गाममे अपन पिता ओ माताक स्मृतिमे शिव-मन्दिर बनबओलन्हि, आ ताहिमे जयदेवेश्वर एवं सूगेश्वर नामसँ दुइ गोट शिव-लिंगक स्थापना कएलन्हि। एहि मन्दिरमे अष्टादश महापुराणक पोथी स्थापित कएलन्हि आ' 1967 इ०क मइ मासमे एतए अठारहो पुराणक पाठरूप महायज्ञ कएलन्हि।

हिनका छओ बालक भेलथिन्ह। छबोकें अपन पर्यवेक्षणमे उत्तम रूपें लालन-पालन करैत पढ़ाए-लिखाएकें विद्वान बनओलन्हि; छबो एम० ए० कए पिताक जीवन-कालहिमे स्व-स्वानुरूप प्रतिष्ठित पद पर आसीन भेलाह।

एहि प्रकारें ई सफल जीवन बिताए 73 वर्षक अवस्थामे 1967 इ०क सितम्बर मासक आठ तारीखकें स्वर्गारोहण कएलन्हि।

ई अपन कीर्तिरूपमे छओ सुयोग्य पुत्र, तेरह गोट मौलिक ग्रन्थ, करीब तीस गोट सम्पादित-संकलित ग्रन्थ, पचाससँ अधिक शास्त्रीय निबन्ध, शताधिक श्रेष्ठ शिष्योपशिष्य, स्वस्थापित अनेक संस्था, एक पोखरि, एक मन्दिर आदि अवदान अग्रिम पीढ़ीकें देने गेलाह। हिनक जीवनक एक-एक पक्षपर विशेष विवरण अगिला अध्याय सभमे देल जाएत।

# 3

# कुल-परिवार

मैथिल पंजीमे[1] म० म० मिश्रक वंशावली हिनकासँ तैस पुरुष उपर धरि अभिलिखित अछि। वंशावली परिशिष्ट 2 मे देल गेल अछि। ई देखलासँ ज्ञात होएत जे हिनकासँ उपर तैसम पुरुष हलायुधक मूल सिंहासम छलन्हि अर्थात ई सिंहासम नामक गामक निवासी रहथि। सत्रहम पुरुष महामहोपाध्याय रत्नेश्वर उक्त सिंहासमसँ उपटि सोदरपुर नामक गाममे आवि बसलाह। तहिआसँ ई कुल सोदरपुर मूलक कहबए लागल ओ एहि कुलक लोक 'सोदरपुरिए' कहओलन्हि। चौदहम पुरुष रघुनाथक पुत्र ओ भातिजलोकनि सोदरपुरसँ उपटि भिन्न-भिन्न गाममे जाए बसलाह : जोरा तथा म०म० जीवनाथ दिगोनमे, म०म० भवनाथ ओ म०म० देवनाथ सरिसवमे, डालू कटकामे, तथा वाराह भौआलमे। एहि प्रकारें ई सोदरपुर मूल चारि शाखामे विभक्त भेल—सोदरपुर दिगोन, सोदरपुर सरिसव, सोदरपुर कटका ओ सोदरपुर भौआल। अतः म०म० उमेश मिश्र मैथिल पंजीक अनुसार सोदरपुरिए दिगोन मूलक कहवैत छथि।

मिथिलामे ई सोदरपुर कुल मानू विद्याक खानि छल। एकर प्रमाण अछि मैथिल पंजी जाहिमे नामक संग-संग विद्यामूलक प्रतिष्ठा सेहो उल्लिखित रहैत अछि। ई प्रतिष्ठा चारि श्रेणीक छल—(1) महामहोपाध्याय, (2) महोपाध्याय, (3) सत् (सदुपाध्याय, सन्मिश्र, सट्ठक्कुर आदि), तथा (4) सामान्य, जेना वै० अर्थात् वैयाकरण, नै० अर्थात् नैयायिक इत्यादि। एहि कुलमे जतेक महामहोपाध्याय भेल छथि ततेक प्रायः मैथिल ब्राह्मणक अन्य कोनहु कुलमे नहि। सोदरपुर कुलक प्रवर्तक (जे मैथिल पंजीमे बीजी पुरुष कहवैत छथि) रत्नेश्वर स्वयं महामहोपाध्याय छलाह। हिनका तीन पुत्र छलथिन्ह—हलेश्वर, सुरेश्वर, आ' जीवेश्वर, तीनू महामहोपाध्याय। सोलहम पुरुष सुरेश्वरकें दू पुत्र—सरबय आ विश्वनाथ, दुनू महामहोपाध्याय। विश्वनाथकें छओ, ताहिमे तीन महामहोपाध्याय—रविनाथ, रघुनाथ ओ लक्ष्मीनाथ। रविनाथकें तीन पुत्र—जीवनाथ, आयाची भवनाथ प्रसिद्ध

---

1. मिथिलाक कर्णाटवंशी राजा हरिसिंह देव (1275-1335 इ०) मैथिल ब्राह्मण ओ कायस्थलोकनिक वंशावली अभिलिखित करबाक व्यवस्था कएलन्हि। एही अभिलेखक नाम थिक मैथिल पंजी, जे तहिआसँ आइ धरि अभिलिखित होइत आएल अछि।

दूवे तथा देवनाथ, तीनू महामहोपाध्याय। अयाची भवनाथक पुत्र छलाह विख्यात दार्शनिक महामहोपाध्याय शंकरमिश्र। सोदरपुर भौआल शाखाक रामनाथक पौत्र हरिनाथ महामहोपाध्याय छलाह आ' तनिक पुत्र जयदेवापरपर्याय पक्षधर प्रसिद्ध पाखे(तत्त्वचिन्तामण्यालोककार) महामहोपाध्याय भेलाह। कटका शाखाक प्रवर्तक डालूक प्रपौत्र केशवमिश्र (प्रख्यात धर्मशास्त्री) महामहोपाध्याय छलाह जे म०म० भवनाथक संग गाहडवाल राजा माणिक्यचन्द्रक राजसभाकें अलंकृत कएने छलाह। पुनः म०म० मिश्रक छठम पुरुष हरिनन्दन महामहोपाध्याय छलाह, चारिम पुरुष कालिकादत्त वैयाकरण रहथि ओ हिनक पिता जयदेव मिश्र सेहो महामहोपाध्याय रहथि। एहि प्रकारें महामहोपाध्यायमयी रत्नावलीसँ जगमगाइत सोदरपुर कुलकें अलंकृत कएलन्हि महामहोपाध्याय उमेशमिश्र ओ हिनकासँ अलंकृत भेल ओ कुल। संस्कृत साहित्यक इतिहासमे एहि कुलक पाँच व्यक्ति विशेष विख्यात भेलाह— म०म० शंकरमिश्र, म०म० पक्षधरमिश्र, म०म० केशवमिश्र, म०म० जयदेव मिश्र ओ म०म० उमेशमिश्र।

म०म० मिश्रक पिता महामहोपाध्याय जयदेवमिश्र आरम्भमे मधुवनीसँ कोसेक उत्तर-पश्चिम दिस सौराठ गाममे म०म० राजनाथ मिश्र (प्रसिद्ध रजेमिश्र) सँ हुनक चौपाड़ि (गृह-पाठशाला) मे पढ़ब आरम्भ कएलन्हि। किछु दिनक बाद म०म० रजेमिश्र ओतएसँ गन्धवारि डेओढ़ी (पंडौल रेलवे स्टेशनसँ साठ-आठ किलोमीटर पश्चिम) मे दरभंगा-नरेश महाराज रुद्रसिंह (1840-1850 इ०) क वैमात्रेय भ्राता महाराजकुमार बाबू वासुदेव सिंहक धर्मपरायणा पत्नी चन्द्रवती बहुआसिनिक आश्रयमे आबि अध्यापन करए लगलाह। म०म० जयदेवमिश्र सेहो अपन गुरुक लग आबि पढ़ए लगलाह। जहिआ ई डेओढ़ी स्थापित भेल तहिअहिसँ एतए संस्कृत पाठशाला चलैत छल, जतए मिथिलाक दिग्गज विद्वानलोकनि जुटल छलाह, यथा म०म० रजेमिश्र, म०म० परमेश्वर झा, पण्डितप्रवर खुद्दी झा, कवीश्वर चन्दा झा, आदि। एहन-एहन महान पण्डितलोकनिक संनिधिमे रहैत म० म० जयदेवमिश्र कालक्रमे विलक्षण विद्वान भए गेलाह।

एतए ई बात विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि जे महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झा एहि चन्द्रवती बहुआसिनिक दौहित्र छलाह; तें स्वभावतः बहुधा एतए आबथि आ' बहुत-बहुत दिन एतए रहथि। एही क्रममे म०म० जयदेव मिश्रकें बालक गंगानाथसँ सम्पर्क भेलन्हि जे अन्ततः पारिवारिक अन्तरंगताक संग गुरु-शिष्यक सम्बन्धमे परिणत भेल ओ म०म० उमेश मिश्रक भावी जीवन-धाराक नियामक-निरूपक भेल।

1899 इ० मे चन्द्रवती बहुआसिनिक स्वर्गवास भेल। गन्धवारि डेओढ़ी उजड़ि गेल। जमिन्दारी दरभंगा राजमे मिला लेल गेल। परन्तु पण्डितलोकनि अशरण नहि भेलाह। तत्कालीन विद्याप्रेमी मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह

ओहि डेओढ़ीक सकल पण्डित एव छात्रलोकनिकें दरभंगामे अपन आश्रयमे राखि लेलन्हि। एतए महाराजक आश्रयमे आओरो वहुत रास दिग्गज विद्वानलोकनि रहैत छलाह, यथा म०म० कन्हाइ झा, नैयायिकप्रवर वबुजन झा, वैयाकरण हली झा, नैयायिक विश्वनाथ झा, म०म० चित्रधर मिश्र, म०म० शिवकुमार मिश्र, नैयायिक केदार भट्टाचार्य आदि। जयदेवमिश्रक प्रतिभा एवं पांडित्य एहि पण्डित पुंगवलोकनिक सम्पर्क पावि असाधारण रूपें चमकि उठल।

जयदेव मिश्र जहिआ गन्धवारि डेओढ़ीमे रहैत छलाह ताही समय कतोक दिन काशीमे रहि म०म० तात्याशास्त्री आदि विद्वानसँ व्याकरण ओ शब्दखंडक उच्च अध्ययन कएने रहथि तथा एही प्रवासमे म०म० डा० सर गंगानाथ झाकें एम०ए० क पाठ्यग्रन्थ पढ़ओलन्हि। एहि प्रसंग सर झा स्वयं लिखैत छथि :

> "सौभाग्यवश हमरा महामहोपाध्याय पण्डित जयदेवमिश्रक सहज ओ निःस्वार्थ सहायता प्राप्त भेल। ई गन्धवारिमे हमर मातामहीक आश्रयमे रहि पढ़ने छलाह आ' एही सम्बन्धें अपनाकें हमरालोकनिक पारिवारिक लोक बुझैत छलाह, जकर निर्वाह ई आजीवन कएलन्हि।"[1]

पुनः आगाँ सर झा हिनका प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छथि :

> "पण्डित जयदेवमिश्रक सहज सहायतासँ हम द्वितीय श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलहुँ।"[2]

1902 इ० मे हिनक पत्नी सूगादेवीक अकस्मात् स्वर्गवास भए गेल। तकर एक वर्षक वाद अपन आठ वर्षक पुत्र वालक उमेशकें संग लए ई काशी गेलाह आ' ओतए दरभंगा राजक पाठशालामे अध्यापन कए जीवन-निर्वाह करैत आजीवन विद्या-व्यवसाय करैत रहलाह। ई व्याकरणमे तीन गोट विशिष्ट ग्रन्थक रचना कएलन्हि—'शास्त्रार्थरत्नावली','परिभाषेन्दुशेखर''टीका-विजया' तथा शक्तिवाद-टीका 'जया'। हिनक ई ग्रन्थ सभ अनेक वेर छपल ओ तत्कालीन पण्डित-मण्डल एवं छात्रमण्डलमे भारत भरि प्रचलित भेल। ई अनेक शास्त्रार्थमे पैघ-पैघ विद्वानकें परास्त कएलन्हि। सम्भवतः 1922 इ० मे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमे अध्यापक नियुक्त भेलाह आ' महामहोपाध्यायक सर्वोच्च उपाधि प्राप्त कएलन्हि। अपन निवासग्राम गजहरामे एक पोखरि खुनओलन्हि आ तकर यज्ञ चातुश्चरण विधानसँ वड़े उप्साहपूर्वक कएलन्हि। एहि यज्ञक अवसर पर म०म० परमेश्वर झा, सर गंगानाथ झा आदि अनेकानेक विद्वान आमन्त्रित भेल छलाह।

हिनका तीन वालक भेलथिन्ह, पहिल म०म० डा० उमेश मिश्र जे एहि पुस्तकक चरितनायक छथि, दोसर रमेश मिश्र प्रसिद्ध मिसरी मिश्र, आ तेसर डा० श्रीकृष्ण मिश्र जे चन्द्रधारी मिथिला कालेजमे अङरेजी विभागक अध्यक्ष रहथि

---

1. आत्मकथा, मैथिली अनुवाद, पृ० 30।
2. एइजन, पृ० 30।

आ' सम्प्रति हमरा-लोकनिक सौभाग्यसँ जीबैत छथि। ई अपन दुइ पुत्रकें मनोयोग सँ पढ़ाए-लिखाए विद्वान बनाओल ओ देशकें अपन सुयोग्य पुत्ररत्न समर्पित कए अपने 1926 इ० मे स्वर्गारोहण कएलन्हि।

हिनक सफल जीवनक विषयमे हिनक प्रिय शिष्य म०म० डा० सर गंगानाथ झा जे एक श्लोक बनाए गेल छथि से एतए उपसंहार रूपमे उद्धृत करैत छी :

जयः कुले जयोऽभ्यासे जयः पण्डितमण्डले।
जयो मृत्यौ जयो मोक्षे जयदेवः सदा-जयः॥

# 4

# शिक्षा-दीक्षा

वालकक पाँचम वर्ष पूर्ण भेला पर अक्षरारम्भ कराओल जाइत अछि। म०म० मिश्रहुक अक्षरारम्भ तदनुसार 1900 ई० मे कराओल गेल होएत। परन्तु अक्षरारम्भ वस्तुतः कहिआ ओ कतए भेलन्हि से ठीक-ठीक ज्ञात नहि अछि। बहुत सम्भव जे मातृकमे, जनकपुर धामक निकट विन्ही गाममे, भेल होइन्ह, कारण जे मातामह सुखी-संपन्न रहथिन्ह आ' पिता गामसँ वाहर गन्धवारि डेओढ़ीमे रहैत छलथिन्ह। मुदा सातमे वर्षक अवस्थामे हिनका मातृवियोग भए गेलन्हि। वालक उमेश 'टुअर' भए गेलाह। एहन 'टुअर' नेनाक प्रति पिताक स्नेह ओ दायित्व दूनू वढ़ि जाइत छैक। तें सम्भव जे माताक परोक्ष भेला पर पिता लालन-पालनक हेतु ओ विशेषतः शिक्षा देवाक उद्देश्यसँ हिनका अपना लग दरभंगा लए अनने होएताह।

तकरा एके वर्षक वाद म०म० जयदेवमिश्र दरभंगा छाड़ि वाराणसी गेलाह आ ओतए मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक विद्यालयमे, जे 'दरभंगा पाठशाला' कहवैत छल, अध्यापन करए लगलाह। अपना संग पुत्र उमेशकें सेहो लेने गेलाह। अतः हिनक शिक्षा ठीक-जकाँ आठम वर्षक अवस्थामे 1903 इ० मे वाराणसी मे आरम्भ भेल। पहिने घरहि पर तिरहुता (मैथिली लिपि) सिखलन्हि जे मिथिला मे ओहि काल धरि मुख्य रूपें प्रचलित छल। अपन वैयक्तिक ओ सामाजिक काज मे एही लिपिक व्यवहार करैत रहलाह। पाछाँ देवनागरी सिखने होएताह। अङ्रेजी लिपि स्कूलमे भरती भेला पर सिखलन्हि। प्राथमिक शिक्षा कोन स्कूलमे भेलन्हि से ज्ञात नहि अछि। प्राथमिक शिक्षा, सम्भव जे गामहि पर पितासँ प्राप्त कएने होथि जाहिमे तत्कालीन परिपाटीक अनुसार अमरकोश, लघुसिद्धान्तकौमुदी, हितोपदेश तथा रघुवंश पढ़ने होएताह। प्राचीन रीतिक एतवा शिक्षाक बाद हिनक नाम वंगाली टोला हाइस्कूल, वाराणसीमे लिखाओल गेलन्हि। ओतहिसँ ई 1914 इ० मे 18 वर्षक अवस्थामे मैट्रिक पास कएलन्हि। एहिमे ई संस्कृत विषयमे सर्वोच्च स्थान पओलन्हि आ' शिरोमणि-स्वर्णपदकसँ पुरस्कृत भेलाह।

एहि ठाम शिक्षाक तत्कालीन नीति ओ रीतिक विषयमे प्रसंगवश कतोक बातक उल्लेख आवश्यक प्रतीत होइत अछि। गत शताब्दीक अन्तिम दशकमे शिक्षाक स्वरूप ओ माध्यमक विषयमे उदारमार्गी ओ परम्परामार्गी वा यूरोपीय

प्रणाली ओ भारतीय प्रणालीक समर्थक दल-द्वयक बीच जे विवाद उठल छल से शताब्दीक अन्त होइत-होइत समाप्तप्राय भए चुकल छल। आधुनिक शिक्षा-पद्धति प्रदेशान्तरमे लोकप्रिय होइत-होइत मिथिलहुमे पसरए लागल छल। परन्तु एतए बहुत परवर्ती कालो धरि आधुनिक शिक्षा सुसंस्कृत परम्परावादी समाजमे बहुत हेय मानल जाइत रहल। एहि शिक्षाकें पण्डितलोकनि 'अङरेजी पढ़ब' कहैत छलाह आ से केवल भाषाक आधार पर; ओहिमे विषय की पढ़ाओल जाइत छैक तकर ने हुनकालोकनिकें ठीक-ठीक ज्ञाने छलन्हि आ ने जिज्ञासे। ओलोकनि अङरेजीकें म्लेच्छ भाषा बुझैत छलाह। हुनकालोकनिकें दृढ़ विश्वास छलन्हि, आ' से बहुत अंश धरि यथार्थ छलन्हि, जे अङरेजी पढ़ने 'आचार-विचार' भ्रष्ट भए जाइत छैक। अतः जे केओ अपना बालककें लोभवश अङरेजी पढ़बैत छलाह तनिका लाभ तँ होइत छलन्हि किन्तु समाजमे निन्दा होइत छलन्हि।

एहन स्थितिमे म०म० जयदेव मिश्र अवश्य एहि द्विविधामे पड़ल होएताह जे बेटाकें कोन बाट धरावी। अन्तमे अङरेजीक पक्षमे झुकि बेटाक नाम हाइ-स्कूलमे लिखओने होएताह। जँ ओहि दिन हुनक निर्णय म०म० उमेशमिश्रकें संस्कृत पढ़एबाक पक्षमे भेल रहैत तँ निश्चये ई जे भेलाह से नहि भेल रहितथि। भए सकैत अछि, शुद्ध संस्कृत विद्या पढ़िओकें ई पैघ पण्डित होइतथि आ' भए सकैत अछि जे महामहोपाध्याय सेहो भए जइतथि; मुदा एतबा निश्चय जे तखन ई आधुनिक दृष्टिसँ हीन रहबाक कारण मिथिलाकें ओ देशकें ओतेक अवदान नहि दए सकितथि जतेक ई दए गेल छथि।

म०म० जयदेव मिश्र कट्टर सनातनी पण्डित रहथि, तखन जे अपन पुत्रकें अङरेजी पढ़ओलन्हि से अवश्यमेव हुनक अन्तर्निहित प्रगतिशील विचार ओ साह-सिकताक प्रमाण थिक। सम्भव जे हुनक दृष्टिमे ई उदारता काशी-सन शहरमे चिरकाल धरि रहबाक परिणाम हो; कारण जे काशीमे ओहि समयमे जे-केओ विशिष्ट मैथिल पण्डित रहैत छलाह से सभ संस्कृत शिक्षाक भविष्य अन्धकारमय देखि अपन-अपन पुत्रकें अङरेजिए पढ़ाबए लागि गेल छलाह। एतए ओहि पण्डित लोकनिक नामोल्लेख हम नहि करए चाहैत छी। ताहूसँ बेसी सम्भव ई लगैत अछि जे म०म० जयदेव मिश्र सर गंगानाथ झाकें बाल्यकालहिसँ जाहि रूपें पढ़ैत देखने छलाह से हुनका बड़ पसिन्द भेल होएतन्हि। किएक तँ सर झा जे मार्ग पकड़ने छलाह ताहिमे 'अङरेजी पढ़ब' तँ समाविष्ट छल किन्तु 'संस्कृत पढ़ब' कें तिलांजलि दएकें नहि; अथ च एहि मार्गमे पश्चिमीय ज्ञान-विज्ञान ओ जीवना-दर्शक ग्रहण तँ छल किन्तु अपन धार्मिक एवं पारम्परीण सदाचार-विचारकें तिलां-जलि नहि देल जाइत छल। इएह वैशिष्टय—इएह प्राच्य-पाश्चात्यक मणिकांचन संयोग—लक्षित भेल होएतन्हि म०म० जयदेव मिश्रकें सर झाक मार्गमे, आ' तें ओ अपन पुत्रक हेतु एकरहि अनुसरणीय मानने होएताह। ई बात म०म० उमेश

मिश्रक जीवनक निर्माणमे तथा अग्रिम जीवन-क्रममे वड़ पैघ महत्त्वक अछि जे आगाँ स्पष्ट होएत। अतः सर झा जेना राज स्कूलसँ मैट्रिक पास कएने रहथि तहिना म०म० मिश्र सेहो वंगाली टोला हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास कएलन्हि। संगहि घर पर संस्कृत व्याकरण ओ साहित्यक शिक्षा जे पितासँ भेटल छलन्हि तकरा वल पर संस्कृत।वषयमे 'शिरोमणि-स्वर्णपदक' पओलन्हि।

सफल मैट्रिक्युलेशनक वाद पुनः पिता ओ पुत्र दुनू द्विविधामे पड़ल होएताह जे कतए नाम लिखाओल जाए—क्वीन्स कालेजमे, गभर्नमेंट संस्कृत कालेजमे वा सेन्ट्रल हिन्दू कालेजमे? अङरेजी शिक्षाक प्रति लोकक आकर्षण उत्तरोत्तर तीव्र होइत जाए रहल छल। ई विद्या सद्यः अर्थकरी सिद्ध भए चुकल छल। एकर विपरीत समाजहुमे संस्कृत पण्डितक मान-मर्यादा घटल जाए रहल छल। ई सभ वात अङरेजी पढ़वा दिस प्रेरित कए रहल छल। मुदा दोसर दिस प्राचीन विद्या ओ धार्मिक आचार-विचारक संरक्षण आवश्यक, से वात संस्कृत पढ़बा दिस प्रेरणा दए रहल छल। वहुत सम्भव जे पिता प्राचीन पीढ़ीक लोक होएवाक कारण अथवा विना खर्च उपलभ्य होएवाक कारण आगाँ पुत्रकें संस्कृत पढ़एवाक पक्ष मे आवि गेल होथि आ' पुत्र अङरेजी शिक्षाक जोति देखैत अङरेजी पढ़बाक दिस जोर करैत रहल होथि। अस्तु, परिणाम ई भेल जे पिता जितलाह आ' म०म० मिश्रक नाम गभर्नमेन्ट संस्कृत कालेजमे लिखाए गेल।

एहि समयमे एहि कालेजक प्रिन्सिपल छलाह डा० भेनिस। म०म० मिश्र अपन प्रतिभासँ हुनक ध्यान आकृष्ट कएल आ ओ हिनका अपन शिष्य मानए लगलथिन्ह। ओ अपन कालक प्रख्यात प्राच्यविद्याविद् रहथि, तें म.म. मिश्रकें आधुनिक रीतिसँ प्राच्यविद्याक अध्ययन दिस प्रेरणा किशोरावस्थामे हिनकासँ प्राप्त भेलन्हि। ई दुइ वर्ष धरि एतए पढ़लन्हि आ' 1916 इ०मे मध्यमा पास कएलन्हि।

फेर ओएह द्विविधा उपस्थित भेल। आचार्य करथि कि एम०ए०? एहि समय धरि म०म० मिश्र वाइस-तैस वर्षक अवस्थामे पहुँचि वालिग भए चुकल छलाह। अतः पिता अपन आग्रहकें शिथिल कए देलन्हि। सर झाक आदर्श सामने छलन्हिए। पढ़एवामे किछु खर्चक प्रश्न अवश्य छलैक, मुदा पुत्रकें भविष्णु देखि पिता खर्च उठएवाक हेतु तैआर भए गेलाह। अतः निर्णय भेल जे आगाँ अङरेजी पढ़थि। तहिआ वाराणसीमे दू गोट नीक कालेज चलि रहल छल—क्वीन्स कालेज आ' सेन्ट्रल हिन्दू कालेज। क्वीन्स कालेज प्राचीन ओ सुप्रतिष्ठत छल; एही कालेजक परिसरमे गमर्नमेन्ट संस्कृत कालेज सेहो चलैत छल। अतः सम्भव छल जे म०म० मिश्र एहीमे प्रविष्ट होथि। मुदा से भेल नहि। तकर अनेक कारण। क्वीन्स कालेजमे फीस बहुत लगैत छलैक, जाहिसँ अल्प आयवाला लोक अपन वच्चाकें एहिमे पढ़एवामे नहि सकैत छल। एकर विपरीत नव-स्थापित सेन्ट्रल हिन्दू कालेज कम खर्चवाला छल। ततवे नहि, एकर स्थापना

11742
9.12.04

मे म०म० जयदेव मिश्रक प्रिय शिष्य सर झाक महत्त्वपूर्ण भूमिका छलन्हि जे हुनक आत्मकथाक निम्नलिखित संन्दर्भसँ स्पष्ट होइत अछि :

"हमारालोकनि 1890 इ०मे कालेज मे पढ़ितहिं रही तहिएसँ हमरा लोकनिक मण्डलीमे विचार चलैत रहए जे क्वीन्स कालेजसँ कम खर्चवाला एक कालेज शहरक निकट स्थापित कएल जाए। शनैः-शनैः ई विचार लोकक मनमे दृढ़ होइत गेल आ' जखन श्रीमती एनी वेसेन्ट काशी अइलीह आ' एकरहि अपन मुख्यालय बनएबाक निर्णय कएलन्हि तखन लगले सेन्ट्रल हिन्दू कालेज स्थापित भए गेल।...श्रीमती वेसेन्ट प्रबन्ध-समितिक अध्यक्ष रहथि, बाबू उपेन्द्रनाथ बसु उपाध्यक्ष, आ' बाबू भगवानदास सचिव।... ओ लोकनि चाहैत रहथि जे हमहूँ शिक्षकवर्गमे आबि जाइ। ...हम शिक्षक-वर्गमे तँ सम्मिलित नहि भेलहुँ मुदा कालेजक प्रबन्ध-व्यवस्थासँ अति निकटतः सम्बन्धित रहलहुँ।"[1]..."जाधरि पण्डित सुन्दरलाल जीवित रहलाह हम हिन्दू कालेजक हेतु अपना भरि काज करैत रहलहुँ आ' कखनो-कखनो घंटाक-घंटा आ भरि-भरि दिन भूख-पिआस बिसरि एकर काजमे लागल रहि जाइ।"[2]

अतः ई नव उत्साहसँ भरल सेन्ट्रल हिन्दू कालेज उचिते म०म० जयदेव मिश्र कें आकृष्ट कएलकन्हि। ततबे नहि, एहि कालेजक स्थापनामे तीन भावना परोक्ष रूपसँ प्रेरक छल—हिन्दुत्वभावना, स्वराज्यभावना ओ अध्यात्मभावना (थियोसाफी)। तें एहि कालेजक भावना-पक्ष सेहो पिता ओ पुत्र दुनूकें आकृष्ट कएलक। ई कालेज हिन्दू विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध छल। आरम्भ-कालमे हिन्दू विश्वविद्यालयक आरम्भ-स्थल होएबाक सौभाग्य एकरहि प्राप्त छलैक। जखन विश्वविद्यालय अपन नवीन स्थल पर चल गेल तखनहुँ कालेजक प्रबन्ध ओकरे हाथ मे रहलैक।

सेन्ट्रल हिन्दू कालेजमे प्रवेशक बादसँ म०म० मिश्रक शिक्षा-मार्गमे कोनो मोड़ नहि आएल। ई आधुनिक रीतिसँ कालेजमे अध्ययन करैत रहलाह आ' संगहि पितासँ प्राचीन रीतिसँ पढ़ल करथि। चित्त पूर्णतः एकाग्र छलन्हि; ने कहिओ दहिना देखलन्हि ने बामा; अपन मार्ग पकड़ने सोझे आगाँ बढ़ैत गेलाह। 1918 इ० मे सेन्ट्रल हिन्दू कालेजसँ इन्टरमीडिएट कएलन्हि, 1920 इ० मे बनारस हिन्दू विश्व विद्यालयसँ बी० ए०, तथा ओतहि सँ 1922 इ० मे विशेष विषय भारतीय दर्शनक संग संस्कृतमे एम०ए० कएलन्हि।

परीक्षाफलक प्रकाशन ओ जीविका-प्राप्तिक प्रतीक्षामे जे एक-डेढ़ वर्ष

---

1. आत्मकथा, मैथिली अनुवाद, पृ० 93।
2. एइजन, पृ० 94-95।

वितलन्हि तकर उपयोग पढ़ल विषयकें मजवामे कएलन्हि तथा वंगाल संस्कृत एसोसिएशनसँ प्राइभेट छात्रक रूपमे काव्य-तीर्थ परीक्षा पास कएलन्हि।

दुर्भाग्यवश म०म० मिश्रकें एतेक दिन धरिक अध्ययनमे सर गंगानाथ झासँ वा हुनका अधीनमे पढ़वाक सौभाग्य नहि भेलन्हि। ई क्वीन्स कालेज छोड़लन्हि 1916 मे आ सर झा एतए अएलाह तकर दू वर्षक वाद 1918 मे। ओहि समय ई एम०ए० करवामे व्यस्त छलाह। जखन ई 1922 मे एम०ए० क पढ़ाइ समाप्त कएलन्हि तखन सर झा कुलपति भए पुनः प्रयाग चल गेलाह।

हँ, सर झाक वाद गभर्नमेन्ट संस्कृत कालेजक प्रिन्सिपल भेलाह महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज। ई म०म० मिश्रक प्रतिभासँ आकृष्ट भए हिनका अपन पट्टशिष्य वनओलन्हि आ' प्राच्यविद्याक क्षेत्रमे आधुनिक रीतिसँ अध्ययन-अनुसन्धान करवाक प्रेरणा एवं मार्गदर्शन देलथिन्ह।

एहि प्रकारें म०म० मिश्रक शिक्षा-दीक्षा 1923 इ० मे सम्पन्न भेल आ ई जीवनक द्वितीय सोपान दिस प्रस्थान कएलन्हि।

# 5

# मातृवाणीक मन्दिरमे

"बहुधा देखल जाइत अछि जे हमर विद्वान्लोकनि अपन मातृभाषाक उपेक्षा करैत छथि— ओ संस्कृत सदृश अगाध साहित्यक रसमे ततेक सराबोर भए जाइत छथि जे हुनका अपन मातृभाषाक दिस कन-डेरिओ तकवाक पलखति नहि होइत छन्हि। एकर विपरीतो उदाहरण भेटैत अछि। मिथिलहुमे मैथिलीक उद्भव ओ प्रतिष्ठापनक समय मध्य-युगहिसँ कतोक एहनो दिग्गज विद्वानलोकनि भेलाह अछि जे संस्कृत तथा अपन मातृभाषा दुनूक सेवा कएलन्हि अछि,आ' एहन विद्वत्परम्पराक आरम्भ हलायुध ओ ज्योतिरीश्वरसँ होइत अछि।"[1] आ एही परम्पराक एक रत्न भेलाह महामहोपाध्याय उमेशमिश्र।

प्राय: प्रत्येक व्यक्तिकें अपन मातृभाषाक सुललित लोक-साहित्यक रसास्वादन करबाक अवसर अपन माइक कोरहिसँ भेटए लगैत छैक, भनहि ओकर मातृभाषाक साहित्य विकसित रहौक वा अविकसित। म०म० मिश्र एकर अपवाद नहि छल होएताह। साते वर्षक अवस्थामे मातृवियोग होएबाक कारण माइक मुहसँ मातृ-भाषाक रसास्वादन करबाक सुख हिनका अधिक दिन नहि प्राप्त रहलन्हि। परन्तु ई तकरा बाद पिताक संग जतए-जतए गेलाह ततए-ततए देववाणीक गहन-गम्भीर शास्त्रक गङ्गा एवं काव्यक यमुनामे अन्त:सलिला मैथिली सरस्वतीक कलकल निनाद सेहो सुनबामे अबैत रहलन्हि।

म०म० मिश्र माताक देहावसान भेला पर सात वर्षक अवस्थामे पिताक संग दरभंगा अएलाह। एतए एक वर्ष रहलाह। एहि ठाम, जेना कहि चुकल छी, महा-राज लक्ष्मीश्वर सिंहक आश्रयमे दिग्गज पण्डितलोकनिक एक वेस पैघ मण्डली छल। एहि मण्डलीक अनेक पण्डित मातृभाषा मैथिलीक आराधना ओ संवर्धना दिस जागरूक भए चुकल छलाह आ' पाछाँ जाए आधुनिक मैथिली साहित्यक निर्माताक रूपमे स्थापित भेलाह। कवीश्वर चन्दा झा आशु कवि छलाह; विलक्षण नचारी (शिवपार्वतीलीला-गीत) तथा अन्यान्य गीत मैथिलीमे रचैत छलाह आ' स्वयं गबैत छलाह। हिनक रचनाक ई विशेषता छल जे आबाल-वनिता-वृद्ध, मूर्ख वा

1. सुनीति कुमार चटर्जी— मिसेजेज ऐंड ट्रिब्यूट्स, उमेश मिश्र कमेमरेशन भाल्युम, जर्नल आफ दि गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट, प्रयाग।

विद्वान सभ समान रूपें हिनक रचनासँ आकृष्ट होइत छल। बालक उमेश हिनक कतोक गीत अवश्यमेव सुनने ओ कण्ठस्थ कएने होएताह—

चलु शिव कोबराक चालि हे दोपटा ओढ़ू भोला।
अछि भरि नगर हकार हे भलमानुस टोला॥

हिनक 'मिथिला-भाषा रामायण' क किछु अंश ता लिखाए चुकल छल। एकर छन्द सभ ललनालोकनि कोमल कंठसँ गाएब आरम्भ कए देने छलीह—

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ दशकंठपुरी हम आइलि छी
सिंहक त्रासें महावनमे हरिणीक समान डराइलि छी

एकर पाँती-सभ म०म० मिश्रक बाल-हृदय पर अवश्य किछु रंग चढ़ओने होएत ओ मातृभाषानुरागक बीज-निक्षेप कएने होएत। पण्डितप्रवर रजेमिश्र मैथिलीक अनन्य अनुरागी ओ प्राचीन साहित्यक ज्ञाता-अनुसन्धाता छलाह, जे पाछाँ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रथम व्याख्याता भेलाह तथा ज्योतिरीश्वरक विख्यात ग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'क तथा अन्यान्य प्राचीन मैथिली ग्रन्थक अध्यापनार्थ प्रतिलिपि कएलन्हि। म०म० परमेश्वर झा 'मिथिलातत्त्वविमर्श' नामसँ मिथिलाक इतिहास तथा 'सीमन्तिनी आख्यायिका' मैथिलीमे लिखलन्हि। मुन्शी रघुनन्दनदास 'मिथिला नाटक' आदि लिखि पाछाँ मैथिलीमे विशेष ख्याति कएलन्हि।

मैथिलीक समस्या पर सेहो एहि मण्डलीमे बहुधा गप्प होइत रहैत छल। कतोक सूत्रसँ ज्ञात होइत अछि जे एहि कालमे दरभंगामे 'मिथिला-अनुसन्धान-समिति' नामक एक गोट संस्था स्थापित भेल जकर मुखिआ छलाह नवटोलनिवासी चेतनाथ झा (सरसकवि ईशनाथ झाक पितामहभ्राता) ओ मन्त्री छलाह पाहीटोलक बाबू केशीमिश्र, बी० ए०। एकर प्रमुख सदस्य-मंडलमे छलाह म०म० मुकुन्द झा बक्सी, म०म०परमेश्वर झा, कवीश्वरचन्दा झा, मुन्शी रघुनन्दनदास, पं० योगानन्द कुमर, बाबू तुलापतिसिंह, पंडित गणनाथ झा (म०म०सर गंगानाथ झाक जेठ भाए) आदि। ई लोकनि दरभंगामे समवेत होइत छलाह आ' प्रतिभावान् आठ वर्षक बालक उमेश टुकुर-टुकुर देखैत रहैत छलाह। एहि स्थितिमे बालकक काँच चित्तपर मैथिली भाषा ओ साहित्यक प्रति अनुराग अंकुरित होएब स्वाभाविक छल। बाल्या-वस्थाक एहने छोट-छोट घटना आ' वातावरण बहुधा भविष्यमे जीवन-मार्गक निर्धारक तत्त्व बनि जाइत अछि।

1903 इ० मे म०म० मिश्र अपन पिताक संग वाराणसी पहुँचलाह। ताहि दिन वाराणसी भारतीय विद्याक सर्वोच्च केन्द्र भए गेल छल। स्वभावतः विद्याव्यवसायी आ' विद्याव्यसनी मैथिललोकनि बहुत संख्यामे एतए रहैत छलाह। म०म० ज्योतिषी मुरलीधर झाक तत्त्वावधानमे मैथिलीक मासिक पत्रिका 'मिथिला-मोद' एतहिसँ 1905 इ० मे चलल आ सोलह वर्ष (1921-22 इ० पर्यन्त) चलैत रहल। रानी चन्द्रावतीक श्यामा-मन्दिर, तारा-मन्दिर, दरभंगा पाठशाला, महा-

राजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंहक धर्मपत्नी महारानी लक्ष्मीवती साहिवाक दरवार, काशी नरेशक दरवार आदि एहन स्थान छल जतए मैथिललोकनि विद्या वा धर्मक निमित्त जुटल रहैत छलाह। मैथिल पण्डितलोकनिक एक संगठन सेहो छल जकर नाम छल मैथिल विद्वज्जन समिति। एहि काशीस्थ मैथिल पण्डितलोकनि मे अधिकतर व्यक्ति संस्कृतक संग-संग मैथिली-दिस सेहो उन्मुख छलाह। एहि सभक प्रभाव म०म० मिश्रपर अपन छात्र-जीवनमे पड़व अनिवार्य छल।

परन्तु लगैत अछि जेना ई अपन समस्त छात्रत्व-कालमे एकमात्र संस्कृतकें साध्य-आराध्य वूझैत रहलाह। हिनक मातृभाषानुराग अन्तःसलिला सरस्वती जकाँ हिनक हृदयक अन्तस्तलहिमे नुकाएल पड़ल रहल। तकर कारण छल। हिनक पिता म०म० जयदेव मिश्र शुद्ध शास्त्रज्ञ पण्डित रहथि। सम्भवतः हुनक ई विचार रहन्हि जे अध्ययन-कालमे सरस काव्यक रचना वा चर्वणा-दिस कनेको प्रवृत्ति भेलासँ छात्र शुष्क शास्त्रसँ विमुख भए जाएत। ओहि समयमे प्रायः सभ कड़गर गुरुजन प्रायः एहने विचार रखैत छलाह। तथापि संस्कृतमे जँ किछु काव्य पढ़ि लेलक वा किछु श्लोक बनाए लेलक तँ से कथंकथमपि सह्य मानल जाए सकैत छल, किन्तु 'भाखा' मे 'रजनी-सजनी करव' (अर्थात् गीत-कवित्त रचब वा पढ़व) तँ अक्षम्य अपराध बूझल जाइत छल। म०म० मिश्र बाल्यकालहिसँ परम विनीत एवं गुरुजनक आज्ञाकारी छलाह, तें एहि विषयमे पूर्णतः पिताक अनुशासन मानैत मैथिलीमे 'रजनी-सजनी' करवासँ आजीवन दूर रहलाह। संस्कृतहुमे तथैव च। जे किछु लिखलन्हि तकरा 'रजनी-सजनी' क कोटिसँ बहुत उपर राखए पड़त।

मैथिलीमे ई कहिआ कलम उठओलन्हि से ठीक-ठीक कहब कठिन अछि। हिनक प्राचीनतम रचना जे हमरा दृष्टिगत भेल अछि से थिक 1922 इ० मे काशीस्थ मैथिल विद्वज्जन समिति प्रबन्धानुमोदित मासिक पत्र 'मिथिला-मोद' मे प्रकाशित एक शास्त्रीय अनुसन्धानात्मक निवन्ध 'चोरि विद्या'। ज्ञातव्य जे एही वर्ष 1922 इ० मे ई अपन अध्ययन समाप्त कएने छलाह आ छात्र-कालीन संयम-नियमसँ मुक्त भेल छलाह। तहिआसँ हिनक लेख मैथिलीक विविध पत्र-पत्रिका मे यदा-कदा आवए लागल। परन्तु वाराणसीमे जे मैथिलीक नवीन जागरण 1905 इ० सँ आरम्भ भेल ओ अनेकानेक काशीस्थ मैथिल विद्वज्जन मैथिलीकें समृद्ध करबाक हेतु कटिबद्ध भेलाह तकर गतिविधिक सूचना म०म० मिश्रकें अपन छात्रत्व-कालहु मे अवश्य होइत रहल होएतन्हि आ तकर हिनका पर प्रभाव अवश्य पड़ल होएतन्हि।

अध्ययन सम्पन्न कए म०म० मिश्र 1923 इ० मे प्रयाग गेलाह। ओतए ओहन मैथिलाम वातावरण नहि छलैक जेहन वाराणसीमे। परन्तु कहबी छैक जे एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति, से एतए एके गोटए म०म० डा० सर गंगानाथ झा हिनका

मैथिलीक क्षेत्रमे अवतीर्ण होएवाक हेतु पर्याप्त प्रेरणा ओ आत्मवल देवामे समर्थ छलाह।

एहि समयमे मैथिलीकें साहित्य-सर्जनाक समस्या तेहन कठिन नहि छलैक जेहन एकर जनसाधारणमे जागरणक आ मान्यता-प्राप्तिक समस्या छलैक। प्रयाग अवैत देरी ई दुनू तरहें मातृभाषा मैथिलीक सेवामे कटिवद्ध भए गेलाह। कवीश्वर चन्दा झा ओ सर जार्ज ग्रियर्सनक पीढ़ी मैथिलीकें जगएवाक हेतु जतेक दूर धरि आगाँ वढ़ल छल, ताहिसँ आगाँ ई मैथिलीक झंडाकें अपना हाथमे लेलन्हि आ म०म० डा० सर गंगानाथ झाक आशीर्वादसँ तथा पश्चात् हुनक आत्मोपम पुत्र डा० अमरनाथ झाक सहयोगसँ मैथिलीक सर्वतोमुखी सेवामे अग्रसर भेलाह।

मैथिली आन्दोलन कोनो सत्तासँ वा कोनो वर्गविशेषसँ लड़ाइ नहि छल। ई लड़ाइ छल अपने घरमे अपने वन्धुसँ लड़ाइ, मैथिली-भाषी विद्वान् एवं जन-सामान्यकें अपन मातृभाषा, अपन संस्कृति-दिस आँखि खोलवाक लड़ाइ। एहि छोट-सन जीवन-वृत्तमे एहि विषयमे विस्तारसँ किछु लिखव विषयान्तर-दिस वहवक होएत, अतः संक्षेपमे एतवे कहि एकर उपसंहार करैत छी जे गत शताब्दीक अन्तिम चरणमे 'भर्नाकुलर एडुकेशन' क नाम पर जे आधुनिक शिक्षा भारत भरि मे अङरेजी शासकलोकनि पसारलन्हि ताहिमे अधिकारी-लोकनिक दृष्टि मैथिली पर नहि पड़लन्हि जकर घातक परिणाम मैथिली आइ धरि भोगि रहल अछि। तहिं मैथिलीक साहित्यकें समृद्ध करवाक प्रश्नसँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न छल मैथिलीकें उचित मान्यता देअएवाक आ' शिक्षा एवं शिष्ट व्यवहारमे जीवित-मर्यादित रखवाक।

मैथिलीक प्रथम उत्थान-कालक पुरना पीढ़ीक कर्णधार-लोकनि, जेना म०म० मुरलीधर झा, म०म० परमेश्वर झा, म०म० चन्दा झा आदि, 1926 इ० अवैत-अवैत स्वर्गवासी भए चुकल छलाह। नवीन पीढ़ीक लोक जे हुनका-लोकनिक स्थान ग्रहण कएलन्हि ताहिमे अग्रणी छलाह बाबू भोलालाल दास, राजपण्डित वलदेव मिश्र आदि। ई लोकनि 1926 इ० मे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना कएलन्हि आ तीन वर्षक वाद एकर तृतीय विशाल सम्मेलन घोंघरडीहामे आयोजित भेल। एकर अध्यक्षता कएलन्हि म०म० मिश्र। ताहि दिन ई केवल चौंतीस-पैंतीस वर्षक युवक छलाह। ने डी० लिट्० उपाधि पओने छलाह आ' ने महामहोपाध्याय भेल छलाह; परन्तु हिनक प्राचीन मैथिली साहित्यक गहन अध्ययन, मातृभाषाक प्रति प्रगाढ़ अनुराग एवं उत्साह एतवे अवस्थामे ततेक विख्यात भए गेल छलन्हि जे असंख्य वयोवृद्ध विद्वानलोकनिक रहितहुँ इएह अध्यक्ष बनाओल गेलाह। अध्यक्षक आसनसँ ओहिमे ई जे भाषण देलन्हि से ततेक वैदुष्यपूर्ण, ततेक उत्साहवर्धक, ततेक उत्कृष्ट मार्गदर्शक छल जे ओ मैथिली साहित्यक एक ऐतिहासिक अभिलेख सिद्ध भेल, अनेक ठाम अनेक वेर मुद्रित भए व्यापक प्रसार पओलक।

हालहुमे पटनाक मैथिली अकादमी जे मैथिली साहित्यक सिंहावलोकनात्मक तीन अध्यक्षीय अभिभाषण 'भाषणत्रयी' नामसँ प्रकाशित कएलक अछि ताहिमे इहो सम्मिलित अछि; शेष दूभाषणमे एक थिक डा० अमरनाथ झाक आ' दोसर थिक कुमार गंगानन्द सिंहक।

एही समयमे पं० कुशेश्वर कुमर ओ बाबू भोलालाल दासक सम्पादकत्वमे विलक्षण मासिकपत्र 'मिथिला' क प्रकाशन आरम्भ भेल। 'मिथिला-मिहिर' साप्ताहिक ओ 'मिथिला-मोद' मासिक (अनियमित रूपें) चलिए रहल छल। अगिला वर्ष 1930 इ० मे पं० जीवनाथ राय आदिक प्रयाससँ 'मिथिलाक्षरांकन प्रबन्धक समिति' मिथिलाक्षरक काँटा ढरओलक। मैथिल महासभा सेहो किछु विशेष चड़फड़ी देखओलक। एहि सभसँ एकरा मैथिली आन्दोलनक द्वितीय तरंग काल कहि सकैत छी। एहि कालमे दू प्रकारक काज भेल, पहिल प्रचारात्मक आ' दोसर सर्जनात्मक। म०म० मिश्र दूनू प्रकारक कार्यमे अग्रणी रहलाह; तथापि ई शास्त्रीय स्तरक कार्य द्वारा मैथिलीक सेवा विशेष रूपें कएलन्हि।

मैथिली-साहित्यमे म०म० मिश्रक अवदान अमूल्य अछि। ई मैथिली-साहित्यक इतिहासकें एकटा ठोस धरातल देलन्हि। एहि हेतु विशाल मात्रामे पोथी, पत्र-पत्रिका, पांडुलिपि आदि सामग्रीक संग्रह कएलन्हि। अनेक प्राचीन पुस्तक सभक सुसमीक्षित संस्करण-सम्पादन कएलन्हि। मैथिलीक गद्यकें आ तकर लेखशैली (वर्तनी) कें एकटा ठोस रूप देलन्हि। पाठ्य-पुस्तकक संकलन-सम्पादन कएलन्हि। किछु सर्जनात्मक ओ विशेषतः विवेचनात्मक वस्तु लिखि मैथिली-साहित्यकें समृद्ध कएलन्हि। जतए-जतए, जखन-जखन अवसर आएल मैथिलीक विरोधीलोकनिक मुंह तर्कद्वारा बन्द कएलन्हि। बृहत्तर मिथिलाक आ ताहिसँ बाहरोक प्रबुद्ध वर्ग कें मैथिली भाषा ओ साहित्यक यथार्थ स्वरूपसँ परिचित करओलन्हि। अनेक संस्थाक स्थापना कए मैथिलीक जागरणकें बल देलन्हि। आ' सभसँ बढ़ि, नव पीढ़ीक एक विशाल प्रबुद्ध वर्गकें प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं मार्गदशन द्वारा मैथिलीक सेवामे दीक्षित कएलन्हि। संक्षेपमे इएह भेल मैथिली-साहित्यकें हिनक अवदान आ' एही अवदानक बलपर ई मैथिली-साहित्यक निर्मातालोकनिमे अग्रणी मानल जाइत छथि। आगाँ हिनक विशिष्ट अवदानक एक-एक कए वर्णन कएल जाएत।

म०म०मिश्र जखनहि अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति साकांक्ष भेलाह तखनहि सँ मैथिलीमे प्रकाशित एक-एक पोथी, पत्र-पत्रिकाक एक-एक अंक, तथा प्राचीन साहित्यक एक-एक पोथीक पांडुलिपि संगृहीत करए लगलाह। सौभाग्यवश हिनक ज्येष्ठ पुत्र डा० जयकान्तमिश्र सेहो पिताद्वारा आरम्भ कएल एहि कार्यमे अल्पे अवस्थासँ संलग्न रहलाह आ' ओहि परम्पराकें आइ धरि काएम रखने छथि। परिणामस्वरूप सम्प्रति मैथिली साहित्य सम्बन्धी जतेक सामग्री एहि परिवारमे संगृहीत-सुरक्षित अछि ततेक कदाचिते कतहु अन्यत्र एक ठाम भेटि सकैत अछि।

यद्यपि मैथिलीक नव-जागरण वर्तमान शताब्दीक आदिअहिसँ आरम्भ भेल, तथापि बहुत दिन धरि मैथिली साहित्यक क्रमवद्ध इतिहासक ढाँचा ठाढ़ नहि कएल जाए सकल छल, कारण जे प्राचीन लेखकलोकनिक कृति ओ वैयक्तिक परिचय दुरवगाह छल। सामग्री कतहु एकत्र संगृहीत नहि छल जकरा देखि शृंखलावद्ध इतिहास लिखल जाए। तहिं म०म० मिश्र सभसँ पहिने संग्रह-कार्य कएलन्हि जकर उल्लेख पूर्व कंडिकामे कए चुकल छी। ततःपर क्रमवद्ध इतिहासक उद्धारमे लगलाह। हिनक एहि प्रयासक प्रथम परिणाम प्रकाशमे आएल घोंघरडीहाक हिनक अध्यक्षीय अभिभाषणमे जकर चर्चा पूर्वमे कए चुकल छी। तकरा वाद ई अनेक पुस्तकक विद्वत्तापूर्ण भूमिकामे ओ छिटफुट लेखमे मैथिलीक प्राचीन लेखकलोकनिक परिचय प्रकाशित करैत गेलाह। अन्तमे इतिहास-लेखनक काज अपन जेठ पुत्र डा० जयकान्तमिश्रक योग्य हाथमे मानू उत्तराधिकार रूपमे सौंपि देलन्हि जे काज डा० मिश्र अपूर्व विद्वत्ता, उत्साह, ओ परिश्रमसँ सम्पन्न कएलन्हि। फल-स्वरूप हुनक 'ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर' दू खंडमे हमरालोकनिक हाथमे अछि। मिथिलाक ओ विशेषतः मैथिली साहित्यक इतिहासक विषयमे वादमे प्रो० रमानाथ झा, वावू लक्ष्मीपति सिंह आदि अनेक व्यक्ति काज कएलन्हि, किन्तु हुनका लोकनिक श्रमक परिणाम शृंखलावद्ध रूपमे प्रकाशमे नहि आवि सकल। मैथिली साहित्यक इतिहासक विषयमे पाछाँ जतए-कतहु विवेचन होअए ततए म०म० मिश्रक मत श्रद्धापूर्वक उल्लिखित कएल जाए, भनहि हिनक कतोक मत परवर्ती अनुसन्धानसँ शंकाग्रस्त भए गेल हो।

म०म० मिश्र उच्चतम स्तर धरि आधुनिक रीतिसँ संस्कृत साहित्य ओ दर्शनक अध्ययन कएने छलाह। प्राचीन रीतिमे ऐतिहासिक दृष्टिक सर्वथा अभाव रहैत छल। गत शताब्दीक अन्त ओ वर्तमान शताब्दीक आरम्भमे विदेशी विद्वान् लोकनि, विशेषतः प्राच्यविद् लोकनि, भारतीय विद्वान्कें ऐतिहासिक रुचि देलन्हि। म०म० मिश्र एहि नवीन रीतिक शिक्षामे अद्भुत ऐतिहासिक दृष्टि पओलन्हि। ई संस्कृत साहित्यक अध्यापक भेलाह। साहित्यक संग ओकर इतिहास सेहो हिनका पढ़वाक आ पढ़एवाक भेलन्हि। संस्कृत साहित्यक, विशेषतः भारतीय दर्शनक इतिहासक अर्थ छल लगभग पचास प्रतिशत मिथिलाक इतिहास, आ मिथिलाक इतिहासमे समाहित छल मैथिली साहित्यक इतिहास अर्थात् मैथिलीक प्राचीन साहित्यकारलोकनिक परिचय। कारण जे मैथिलीक प्राचीन साहित्यकारलोकनि अधिकांशतः अपना समयक पण्डिते लोकनिमे छलाह आ' बहुत गोटए मैथिलीक संग-संग संस्कृतहुमे किछु-ने-किछु रचना कएने छलाह। अतः म०म० मिश्रकें बहुत रास प्राचीन मैथिली लेखकलोकनिक परिचय संस्कृत साहित्यक ऐतिहासिक अध्ययनक क्रममे अनायास भेटैत गेलन्हि। भारतीय दर्शनक इतिहास (जकर चर्चा आगाँ आओत) लिखबाक समय तँ हिनका मिथिलाक समस्त इतिहासक आलोड़न

करए पड़ल छलन्हि जकर साक्षी स्वयं उक्त पुस्तक अछि। एहि तरहें म०म० मिश्र मैथिली साहित्यक इतिहासक शिलान्यासकर्ता मानल जाइत छथि।

मैथिलीमे 1905 इ० क बाद आधुनिक गद्यक लेखन आरम्भ भेल। पत्र-पत्रिका सभ बहराए लागल। कथा-उपन्यास, विचार-विवेचन, आलोचना-प्रत्यालोचना मैथिलीक समकालीन लोक-मुखाश्रित भाषामे लिखल जाए लागल। एहि सँ पूर्वक जे मैथिली गद्य भेटैत अछि से तत्कालीन मुख-भाषाक स्वरूपमे नहि अछि, अपितु शुद्ध साहित्यक भाषामे अछि। मुखभाषा निरन्तर बदलैत गेल; ओहिमे नव-नव प्रकारक ध्वनि, नव-नव प्रकारक उच्चारण विकसित होइत गेल, मुदा लिपि ओतहि रहल जतए कैक हजार वर्ष पूर्व छल। ओहि लिपिमे आजुक मुख-भाषाकें यथाश्रुत रूपमे अंकित करबाक क्षमता नहि रहलैक। एहन नव-विकसित ध्वनि सभकें स्वभावतः विभिन्न लेखक भिन्न-भिन्न लिपि-संकेतसँ व्यक्त करए लगलाह। फलतः वर्तनी (स्पेलिङ)मे बहुरूपता वा उच्छृंखलता जकाँ आवए लागल। मैथिली साहित्यक निर्मातालोकनि एहि स्थितिकें अवांछनीय बुझलन्हि। अतः मैथिलीक वर्तनीमे (जे ओहि समयमे 'लेखशैली' वा सोझे 'शैली' कहवैत छल) एकरूपता अनबाक प्रयास चलल, जकर नाम पड़ल 'शैली-निर्धारण'। पूर्वमे एहि-दिस किछु-किछु प्रयास 'मिथिला-मोद' क संचालक म०म० मुरलीधर झा, तथा अन्यान्य पत्र-पत्रिकाक सम्पादकलोकनि कएने छलाह, किन्तु समस्या किछुओ सोझराएल नहि छल। अतः अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, जकर तृतीय अधिवेशन घोंघरडीहामे म०म० मिश्रक अध्यक्षतामे भेल छल, एहि वर्तनीक समस्या-दिस साकांक्ष भेल, आ' एकर चतुर्थ अधिवेशन जे मुजफ्फरपुरमे बड़े धूमधामसँ भेल ताहिमे एक शैली-निर्धारण-समिति बनल। एकर अध्यक्ष बनाओल गेलाह म०म० मिश्र। ई शैलीक सम्बन्धमे गहन अध्ययन कए अपन ठोस ओ स्पष्ट विचार अध्यक्षीय भाषणक रूपमे प्रस्तुत कएलन्हि जे 'मैथिलीक लेखशैली'क नामसँ पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। उक्त समितिमे आओर जे-जे प्रस्ताव आएल आओर अनुशंसित भेल ताहि आधार पर पं० जीवननाथ राय सेहो 'शैली-निर्धारण' नामक पुस्तक प्रकाशित कएलन्हि। एकर पाँच-छओ वर्षक बाद प्रो० रमानाथ झा जखन एक मासिक ग्रंथ-माला 'साहित्य-पत्र' नामसँ चलएबाक नेआर कएलन्हि तँ शैलीक विषयमे पुनः अनेक विद्वान्सँ परामर्श कएलन्हि आ' एकटा शैली निर्धारित कएलन्हि, जकर कोनो सिद्धान्त ग्रन्थ तँ नहि छपल किन्तु व्यावहारिक रूपमे 'साहित्य-पत्र'मे प्रयोग कएल गेल। रमानाथ झा एहि काजमे मुख्य रूपसँ तीन गोटाक मतकें आधार बनओलन्हि, महावैयाकरण दीनबन्धु झा, म०म० डा० उमेश मिश्र ओ डा० सुभद्र झा। एहि तीनू विद्वान्मे मतभेद बहुत कम छल, तें प्रो० रमानाथ झा जाहि शैलीक ग्रहण कएलन्हि से वस्तुतः म०म० मिश्र हिक पूर्वस्थापित शैली थिक, भेद मोटा-मोटी एतवे जे म०म० मिश्र द्वितीया विभक्तिक रूप 'कएँ'

लिखैत छलाह, किन्तु 'साहित्य-पत्र' मे 'कें' राखल गेल। पाछाँ इएह शैली, बहुत थोड़ हेर-फेरक संग, मुख्यतः लघु 'ए' क स्थानमे 'य' राखि 'मिथिला मिहिर', मैथिली अकादमी, पटना आदि प्रकाशन सभमे व्यापक रूपें अपनाओल गेल। म०म० मिश्रक शेलोक वा 'साहित्य-पत्र' क शैलीक कट्टर अनुगामी भेलाह डा० सुभद्र झा, प्रो० रमानाथ झा, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, श्री उपेन्द्र नाथ झा' 'व्यास' प्रो० तन्त्रनाथ झा, प्रो. उमा नाथ झा, डा० जयकान्त मिश्र आदि। उपर्युक्त तथ्यसँ सिद्ध होइत अछि जे आधुनिक मैथिलीक लेखशैली अर्थात् वर्तनीकें वैज्ञानिक भित्ति पर एकरूपता प्रदान करबामे म०म० मिश्रक प्रयास अग्रणी रहल। हिनक मत सुश्रृंखल रूपमे सभसँ पहिने आएल आ अन्त धरि टिकल रहल।

पूर्वमे कहि चुकल छी जे म०म० मिश्र छात्र-जीवनमे 'रजनी-सजनी' मे नहि पड़लाह। एहि मैथिली पद-बन्धक अर्थ होइत अछि 'रजनी' शब्दक तुक 'सजनी' शब्दसँ मिलाएब, अर्थात् तुकबन्दी वा पद्यरचना करब। ई छात्र जीवनमे एहि सँ जे परहेज कएलन्हि से प्रायः जीवन भरि कएनहि रहि गेलाह। कौतुकवशो हिनक बनाओल कोनो संस्कृत श्लोक वा मैथिली पद्य हमरा दृष्टिगत नहि भेल अछि। ई विशुद्ध गद्य-लेखक रहि गेलाह। अपन प्रतिभाक समस्त छटा ई गद्यहि मे देखाओल। मैथिली गद्यकें ई एकटा नव स्वरूप देलन्हि, जाहिमे कृत्रिमताक लेश नहि अछि, पाण्डित्यक घमण्ड नहि अछि आ ग्राम्यताक गन्ध नहि अछि। हिनका सँ पूर्वक मैथिलीक गद्यकार-लोकनि ईश्वर चन्द विद्यासागर कालीन बङलाक गद्य जकाँ अधिकाधिक संस्कृत शब्दराशिक प्रयोगहिकें चमत्कारक एकमात्र साधन मानैत छलाह आ मैथिलीक जे अपन वाग्भंगी छैक, अपन जे लौकिक आ व्यावहारिक छटा छैक तकर अवलम्बन कदाचिते करैत छलाह। किछु लेखक तँ तेहन-तेहन कठकोकाँड़ि संस्कृत शब्द सभ अपन गद्यमे ठूसि दैत छलाह जे पण्डितेतर पाठकक बोधार्थ तकर व्याख्या सेहो कोष्ठमे वा पाद-टिप्पणीमे स्वयं कए देबए पड़ैत छलन्हि। उदाहरण म०म० मुकुन्द झा बक्शीक 'खण्डवलाकुल इतिहास' मे देखल जाए सकैत अछि। तकर विपरीत म०म० मिश्र शब्दक चयनमे बड़ विवेकी छलाह तथा पाठकक रुचि एवं क्षमताक सम्यक् ध्यान रखैत छलाह। एहि विषयमे कहि सकैत छी जे हिनक गद्य-शैली म०म० परमेश्वर झा ओ म०म० मुरलीधर झा दुनूक गुणसँ गुम्फित अछि,। म०म० मिश्रक गद्य-शैलीक स्पष्टतः दू भेद अछि, एक व्यावहारिक वा लौकिक आ दोसर शास्त्रीय। लौकिक शैलीक प्रयोग ई अपन सर्जनात्मक कृतिसभ मे कएने छथि तथा शास्त्रीय शैलीक प्रयोग विवेचनात्मक कृति सभमे। उपसंहार मे ई कहल जाए सकैत अछि जे मैथिलीक गद्य-शैलीक विकासमे म०म० मिश्रक अमूल्य योगदान अछि।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागरे जकाँ म०म० मिश्रमे सर्जन-प्रतिभा बड़ अल्प छल वा तकर उपयोग ई बड़ थोड़ कएलन्हि। हुनकहि जकाँ ई मातृभाषा मैथिलीमे

जे किछु सर्जनात्मक रचना कएलन्हि से केवल अपन मातृभाषाक सेवाक भावना सँ, तथा स्वयं अग्रगामी उदाहरण बनि अन्यान्य प्रतिभावान् लेखकलोकनिकें मातृ-भाषामे लिखबा दिस प्रवृत्त करएबाक उद्देश्यसँ। एहि प्रकारक कृतिमे भावगत ओ भाषागत रमणीयता विशेष अपेक्षित बूझि पड़लन्हि। दोसर बात ई जे एहिमे अपन पूर्वाचार्यक सरणिसँ विचलित भए चलबाक साहस थोड़ छलन्हि। तहिं ई अपन रचनाक वस्तुओ ओहने चुनलन्हि जेहन हुनक अग्रज लेखकलोकनि चुनैत छलाह। हिनक 'नलोपाख्यान' तथा अन्यान्यो उपाख्यान सभ एही प्रकारक वस्तु अछि। हिनकासँ पूर्व अनेक उपाख्यान लिखाए चुकल छल, आ' ओहि उपाख्यान सभक जे गद्यशैली छलैक तकरे आभास हिनको उपाख्यान सभमे भेटत। पाँच गोट उपाख्यान ई लिखने छथि आ' पाँचो लगभग एके परम्पराक, एके शैलीक अछि। हिनक एकमात्र उपन्यास अछि 'कमला' जे 'मिथिला-मिहिर' मे सम्भवतः 1930 इ० सँ पूर्व अंशमात्र प्रकाशित भेल छल। ओ प्रायः सम्पूर्ण नहि कएल जाए सकल। एकर गद्य अवश्यमेव पूर्वोक्त उपाख्यान सभक गद्यसँ किछु भिन्न तरहक होएबाक चाही।

हिनक अपन विशिष्ट गद्य-शैलीक दर्शन होइत अछि हिनक विचारात्मक लेख सभमे, जेना 'मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता' (1961), विविध स्वसम्पादित ग्रन्थक भूमिका, विविधविषयक विवेचनात्मक निबंधसभ, ओ भाषण-अभिभाषण सभ मे।

मैथिली भाषा ओ साहित्यसँ बृहत्तर क्षेत्रकें समय-समय पर परिचित-प्रबोधित करबैत रहब म०म० मिश्र अपन कर्तव्य जकाँ बनाए लेने छलाह। एहि प्रसंगक चर्चा अधिकतर हिन्दी ओ अङरेजी भाषाक पत्र-पत्रिका सभमे उठबैत छलाह वा सभा-सोसाइटी मध्य भाषणमे वा वैयक्तिक वाद-विवादमे। हिनके सत्प्रयास सँ विश्वव्यापी संस्था पी०ई०एन० मैथिलीकें साहित्यिक भाषाक मान्यता दए अपन मंच पर स्थान देलक। तकरा बाद जे एहि संस्थासँ 'दि इन्डिअन लिटरेचर टुडे' प्रकाशित भेल ताहिमे 'मैथिली 1900-1945' शीर्षक निबन्ध द्वारा ई देश-विदेशक साहित्यकारकें मैथिलीसँ परिचित कराओल।एहिना प्रयागक प्रख्यात हिन्दी पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' मे 'मैथिली साहित्य' शीर्षक लेख प्रकाशित कए हिन्दी जगतकें मैथिलीक परिचय देलन्हि। मैथिली साहित्यक मूर्धन्य कवि ओ हुनक काव्यक परिचय मिथिलासँ बाहर प्रचारित करबाक उद्देश्यसँ ई 'विद्यापति ठाकुर' नामक पुस्तक हिन्दीमे लिखलन्हि जकर चारि संस्करण भए चुकल अछि। अनेक बेर मैथिली भाषा ओ साहित्यक सम्बन्धमे रेडियो वार्ता प्रसारित कएलन्हि। एहि तरहें ई मैथिलीक प्रतिष्ठाक एक प्रौढ़ प्रहरी मानल जाइत रहलाह।

म०म० मिश्र जे मैथिलीक प्रचारात्मक कार्य कएल ताहिमे प्रायः सभसँ

महत्त्वपूर्ण अछि अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समितिक स्थापना ओ तकर तत्त्वावधानमे दिल्लीमे आयोजित मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी। एहिमे अनेक भाषाक विशिष्ट साहित्यकारलोकनि तथा तत्कालीक प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू सेहो अपन आँखिसँ मैथिलीक प्राचीन एवं नवीन साहित्यक प्रत्यक्ष दर्शन कएलन्हि आ हुनकालोकनिकेँ पहिले-पहिल ई विश्वास भेलन्हि जे मैथिली सेहो एक स्वतन्त्र भाषा थिक आ' एकरा वङला, असमिया आदि क्षेत्रीय भाषाक पंक्तिमे समकक्ष स्थान भेटवाक चाही। जाहि मैथिली साहित्य समितिक तत्त्वावधानमे ई प्रदर्शनीक लगाओल गेल छल तकर अध्यक्ष ओहि समय मे म०म० मिश्र छलाह। एहि प्रदर्शनी आयोजनमे हिनक प्रमुख भूमिका छल। एकर सफलताक सम्बन्धमे तँ एतेक धरि कहल जाइत अछि जे एहीसँ प्रभावित भए साहित्य अकादेमीक सदस्यलोकनि मैथिलीकेँ अकादेमीमे मान्यता देलन्हि।

मिथिलावासी प्राचीन पण्डितलोकनि अपन-अपन संस्कृत ग्रन्थमे प्रसंगवश वहुधा मैथिलीक शब्द उद्धृत कएने छथि। एहन प्राचीन मैथिली शब्द सभक संग्रहार्थ म०म० मिश्र वहुत परिश्रम कएलन्हि। एहि विषयक हिनक तीन गोट निवन्ध प्रकाशित अछि—(i) 'चण्डेश्वर ठाकुर एण्ड मैथिली', इलाहाबाद यूनिभर्सिटी स्टडीज, खंड 7; (ii) 'मैथिली एण्ड रुचिपति', जर्नल ऑफ दि बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, 1928; तथा (iii) 'मैथिली ऐण्ड जगद्धर', ओतहि।

मैथिलीक पत्र-पत्रिकासँ म०म० मिश्रकेँ वड़ अनुराग रहैत छलन्हि। 1922 इ० मे छात्र जीवन समाप्त होइतहिं ई जे मैथिली-दिस झुकलाह तहिआसँ मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे यदा-कदा हिनक लेख वहराइत रहल। वाराणसीसँ प्रकाशित 'मिथिला-मोद' मे 1922 इ० मे हिनक प्रायः प्रथम मैथिली लेख 'चोरि विद्या' प्रकाशित भेल। तकरा वाद 1923 इ० मे 'तिरहुता लिपि', 'शास्त्रार्थ-परिपाटी', 'शंकर मिश्र ओ हुनक कृति' आदि लेख प्रकाशित भेल। 'मिथिला-मिहिर' मे एक लघु उपन्यास 'कमला' अंशतः प्रकाशित भेल। एकर 'मिथिलांक' नामक वृहत् विशेषांकमे 'मिथिला मैथिल मैथिली' शीर्षक लेख 1935 इ० मे छपल, तथा 'देश-दशा' एकरे आस-पासमे वहराएल। 1943 मे 24 जुलाइक अंकमे 'सांख्यतत्त्व कौमुदीमे सन्देह' शीर्षक लेख अङरेजीसँ मैथिलीमे अनूदित भए प्रकाशित भेल आ तकर अग्रिम अंक सभमे ओकर उत्तर-प्रत्युत्तर सभ छपल। 'वैदेही' (मासिक, दरभंगा) मे मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता' धारावाही छपल आ पाछाँ दू खंडमे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। 'स्वदेश' (मासिक, दरभंगा) मे 'ऋतुवर्णन' प्रकाशित भेल। एहिमे अद्भुत वर्णनच्छटा अछि। एकर अंश सम्प्रति विहारक इन्टरमीडिएट मैथिली गद्य-पद्य-संग्रहमे समाविष्ट अछि। एहीं तरहेँ मैथिलीक आनहु पत्र-पत्रिका सभकेँ हिनक सहयोग भेटैत रहलैक अछि।

म०म० मिश्र मैथिलीक अनेक प्राचीन ग्रन्थक जीर्णोद्धार कए सुसमीक्षित

सम्पादन कएने छथि। सर्वप्रथम मनबोध (1870-90) क 'कृष्णजन्म'क सम्पादन कएलन्हि, जकर प्रथम संस्करण पुस्तक भंडार, लहेरियासरायसँ 1946 इ० मे प्रकाशित भेल ओ परवर्ती संस्करण तीरभुक्ति प्रकाशन, प्रयागसँ। मैथिल अपभ्रंश मे लिखित कवि-कोकिल विद्यापतिक 'कीर्तिलता'क सम्पादन मैथिली अनुवादक संग कएलन्हि जे 1960 मे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, प्रयागसँ प्रकाशित भेल। पुनः विद्यापतिक दुर्लभ ग्रन्थ 'कीर्तिपताका' क सम्पादन अपन सुयोग्य पुत्र डा० जयकान्त मिश्रक संग कएलन्हि जे उक्त समिति सँ 1960 इ० मे प्रकाशित भेल।

पटना विश्वविद्यालय जखन मैट्रिक कक्षामे मैथिली स्वीकृत कएलक तखन म०म० मिश्र एहि परीक्षाक हेतु एक गद्य-संग्रह ओ एक पद्य-संग्रह क्रमशः 'मैथिली गद्य-कुसुमांजलि' तथा 'मैथिली कुसुमांजलि' नामसँ प्रस्तुत कएलन्हि जे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, लहेरिआसरायसँ 1936 इ० मे प्रकाशित भेल।

दरभंगा मे 1948 इ० मे जे चतुर्दश अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन विशाल स्तर पर म०म० मिश्रक तत्त्वावधानमे भेल रहए ताहिमे ई नव मैथिली विभाग सेहो रखवओलन्हि आ' एहि विभागमे प्रस्तुत बहुत रास साहित्य ओहि सम्मेलनक प्रोडिङसमे हिनक सम्पादकत्व मे प्रकाशित भेल। ततबे नहि, एहि ऐतिहासिक महत्त्वक अखिल भारतीय सम्मेलनकअवसर पर हिनक प्रेरणासँ मैथिली कें क्षेत्रीय भाषाक रूपमे ओ तिरहुताकें स्थानीय लिपिक रूपमे जे प्रमुखता देल गेल ताहिसँ मैथिल मात्र गौरवक अनुभव कएलन्हि।

ई संस्कृतक दू गोट विशिष्ट ग्रन्थक मैथिलीमे अनुवाद ओ व्याख्या लिखलन्हि। पहिल, ईश्वरकृष्णकृत 'सांख्यकारिका' क ओ दोसर विश्वनाथकृत 'साहित्यदर्पण' क। ई दुनू एखन धरि अप्रकाशित अछि।

अन्तमे, मैथिलीक प्रति म०म०मिश्रक एक आओर योगदान उल्लेखनीय अछि। एकर खूब आशंका छलैक जे मैथिली आन्दोलन हिन्दी-विरोधी भए जाए। परन्तु जें एकर सूत्र म०म० मिश्र-सन गम्भीर विवेकी राष्ट्रभक्त नेताक हाथमे पड़ल तें मिथिलामे हिन्दीक विरोध कहिओ मुखर नहि भेल, प्रत्युत राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दी एतए सदा पूजित रहल। म०म० मिश्रकें ई राष्ट्रहितैषी भावना म०म० सर गंगानाथ झा ओ डा० अमरनाथ झासँ प्राप्त भेल छलन्हि जेलोकनि राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दीक कट्टर समर्थक-सम्पोषक मानल जाइत रहलाह। इहो म०म० मिश्रहिक सुफल छल जे मैथिली आन्दोलन सदा शान्तिपूर्ण रहल।

# 6

# राष्ट्रवाणीक मन्दिरमे

म०म० उमेश मिश्रक सोदरोपम वन्धु डा० अमरनाथ झाक उद्घोष छलन्हि—"हमरा मातृभाषा मैथिलीक प्रति प्रेम अछि, राष्ट्रभाषा हिन्दीक प्रति आदर अछि आ' देवभाषा संस्कृतक प्रति भक्ति अछि।" प्रत्येक उद्वुद्ध मैथिल वा भारतक प्रत्येक विवेकी नागरिक डा० झाक एहि भावनासँ सहमत अछि। म०म० मिश्र तँ सहजहि अपन क्रिया द्वारा एहि भावनाक परिचय देलन्हि अछि। मातृभाषा मैथिली सँ हिनका केहन प्रेम छलन्हि तकर परिचय पूर्व अध्यायमे कराओल जा चुकल अछि। एहि अध्यायमे ई देखएवाक अछि जे राष्ट्रभाषाक प्रति हिनका कतेक आदर छलन्हि आ' ताहि हेतु ई की-की कएलन्हि।

म०म० मिश्रक मुख्य विषय छलन्हि भारतीय दर्शन एवं संस्कृत साहित्य। आरम्भहिसँ ई अपनाकेँ प्राच्यविद्याविशारद (ओरिएन्टलिस्ट) लोकनिक पंक्तिमे स्थापित करवाक प्रयास करैत रहलाह। प्राच्य-विद्याक क्षेत्रमे हिनकासँ पूर्व वा हिनक समकालमे जे केओ देशी वा विदेशी विद्वान काज कएलन्हि तनिक विवेचनक माध्यम अङरेजी होइत छल आकि जर्मन वा फ्रेंच। एहिसँ भिन्न केवल संस्कृत भाषा छल जे विश्व भरि समस्त प्राच्यविद्याक क्षेत्रमे किछु-ने-किछु वोधगम्य छल तथापि एकरहु आधुनिक रीतिएँ प्राच्यविद्या-विवेचनक माध्यम होएवाक सौभाग्य नहि प्राप्त भेलैक, कारण जे किछु प्राच्यविद्यानुरागी एहनो छलाह जे संस्कृत नाम मात्रे जनैत छलाह, केवल अनुवादक शरण लए विषय अवगत करैत छलाह। दोसर बात इहो छल जे विदेशी भाषाक अवलम्वन कए साधारणो पण्डित देश-देशान्तर मे ख्याति पावि लैत छलाह। एहि प्रसंगमे डा० सर गंगानाथ झाक निम्नलिखित उक्ति देखवाक योग्य अछि :

> "हम साहित्यविषयक मुख्य कार्य अङरेजी भाषाक माध्यमसँ कएने छी जकर मुख्य कारण उपयोगितावादी अछि। वाल्यकालहिसँ हम देखल जे भारतीय भाषामे ग्रन्थ लिखनिहार विद्वानक अपेक्षा अङरेजीमे लिखनिहारक वेसी आ व्यापक मूल्यांकन होइत अछि।···हमर पुरान मित्र महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा संस्कृतमे हमरासँ कतेको वेसी ठोस विद्वान् आ आधुनिक विद्वत्तामे सेहो हमरासँ वेसी कृतविद्य रहथि, मुदा कलकत्ता, पटना आ' वाराणसीसँ आगाँ हुनक ख्याति हमरासँ वेसी नहि भेल। एकर एकमात्र

कारण इएह जे हमर माध्यम अङरेजी छल आ हुनक हिन्दी। निस्सन्देह हुनक श्रेय हमरासँ वेसी छन्हि, किन्तु हम तँ केवल कारण देखाए रहल छी जे हम किएक अङरेजीकें अपनओलहुँ। डा० थीवो आ' डा० भेनिसक दृष्टान्त आ प्रभाव सेहो एकर कारण छल।"[1]

आ' दोसर वात इहो छलैक जे हिन्दीमे वा अन्य भारतीय भाषामे प्रकाशक सेहो वड़ कम भेटैत छलैक। एहि परिस्थितिसँ वाध्य भए म०म० मिश्र अपन दर्शन सम्वन्धी तथा ऐतिहासिक अनुसन्धान सम्वन्धी अधिकांश गुरुगम्भीर लेखन अङरेजीमे कएलन्हि। परन्तु सर झा जाहि स्थितिक वर्णन कएलन्हि से लगभग 1900 इ० क थिक। तहिआसँ पचीस-तीस वर्षक वाद म०म० मिश्र लेखन-कार्य आरम्भ कएलन्हि। एहि वीचमे स्थिति किछु-किछु वदलल छल। हिन्दीक प्रतिष्ठा अखिल भारतीय स्तर पर प्राप्त भए गेल छल। एहि परिवर्तित स्थितिकें म०म० मिश्र नीक जकाँ देखैत छलाह। अतः जतए-जतए जखन-जखन हिन्दीमे लिखवाक अवसर भेलन्हि, हिन्दीमे लिखि एकर आदर कएलन्हि। ई अपन जीवनक मुख्य भाग प्रयागमे वितओलन्हि। प्रयाग ओहि समयमे हिन्दीक गढ़ छल। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मुख्यालय ओतहि अछि। हिन्दुस्तानी एकेडमीसन ठोस प्रकाशन-संस्था ओतहि अछि। एहि दूनू संस्थासँ ई निरन्तर सम्वद्ध रहलाह। हिनक गहन मैथिली-प्रेम हिन्दीक प्रति आदर-भावनामे कहिओ कमी नहि होअए देलक। प्रमाणस्वरूप ई हिन्दीमे अनेक ग्रन्थ लिखलन्हि। हिन्दीक पत्र-पत्रिकामे निरन्तर किछु-किछु लिखैत रहलाह। एहि सभसँ हिन्दी जगतमे सेहो ई पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कएलन्हि। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनमे ई धर्म एवं दर्शन विभागक अध्यक्ष बनाओल गेलाह। हिन्दीमे ई जे किछु लिखलन्हि ताहिसँ हिनक प्रतिष्ठा तँ वढ़वे कएल संगहि हिन्दी तकरो प्रतिष्ठा बढ़ल, कारण जे ओहि काल धरि श्रेष्ठ विद्वान हिन्दीमे कमे लिखैत छलाह। खास कए शास्त्रीय विषय पर हिन्दीमे लिखनिहार तँ आओरो कम छलाह।

ई हिन्दीमे जे ग्रन्थ वा निवन्ध लिखलन्हि से विषयानुसार तीन वर्गमे विभक्त अछि। प्रथम वर्गमे अवैत अछि हिनक दर्शनविषयक रचना। ओहि समयमे हिन्दीकें भारतीय दर्शनक गहन विवेचनात्मक ग्रन्थक आवश्यकता नहि छलैक। आवश्यकता छलैक एहन पुस्तकक जाहिसँ संस्कृत तथा अङरेजी नहिओ जननिहार सामान्य पाठक तथा दर्शनशास्त्रमे प्रवेशार्थी छात्र भारतीय दर्शनक सामान्य रूप-रेखा जानि सकथि। एही दृष्टिसँ ई हिन्दीमे तीन गोट पोथी लिखलन्हि—(i) भारतीय तर्कशास्त्रकी रूपदेखा (1950), (ii) सांख्य-योग-दर्शन (1958), तथा (iii) भारतीय दर्शन (1960)। ई तीनू, ततेक प्रामाणिक, ततेक स्पष्ट आ ततेक

---

1. आत्मकथा, मैथिली अनुवाद, पृ० 124-25।

सरल भेल जे दर्शनविषयक हिन्दी लेखकक रूपमे हिनक नाम विख्यात भए गेल। ओना तँ एहिसँ पूर्वहि ई हिन्दी जगतमे ततवा प्रतिष्ठा प्राप्त कए चुकल छलाह जे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मेरठ अधिवेशन, 1948 मे धर्म एवं दर्शन विभागक अध्यक्ष वनाओल गेल रहथि। एहि अध्यक्षपदसँ देल गेल हिनक अभिभाषण 'भारतीय दर्शन की रूप-रेखा' सेहो एहि कोटिक मानूएक ग्रन्थे अछि।

हिनक हिन्दी कृतिक दोसर वर्गमे अवैत अछि हिन्दी जगत्कें मैथिली भाषा ओ साहित्यक यथार्थ स्वरूपसँ परिचित करओनिहार ग्रन्थ ओ लेख सभ जकर चर्चा पूर्व अध्यायमे कएल जाए चुकल अछि।

तेसर वर्गमे अवैत अछि प्राच्यविद्या सम्वन्धी विविध विषयक लेख सभ जे अधिकांशतः नाना स्मृतिग्रन्थ ओ अभिनन्दनग्रन्थ सभमे ओ किछु पत्रपत्रिकामे प्रकाशित अछि। एहिमे विशेष उल्लेखनीय अछि—(i) ऋग्वेदमे कर्म-विचार, श्री कृष्णसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ, (ii) भारतीय दर्शनों का स्वरूप-निरूपण, विक्रम स्मृति ग्रन्थ, ग्वालियर। (iii) प्राचीन भारतमे शल्यविद्या, विक्रम-स्मृति ग्रन्थ, कानपुर; (iv) गोवर्धनाचार्य और उनकी सप्तशती, 'वैशाली' मुजफ्फरपुर; आदि।

म०म० मिश्र धर्मक विषयमे जेहने कट्टर छलाह, भाषाक विषयमे तेहने उदार छलाह। मैथिलीक सेवाक संग-संग हिन्दीक सेवाक जे आदर्श ई स्थापित कएलन्हि से हिन्दीक हेतु बड़ लाभकर भेल। फलतः मैथिलीक क्षेत्रमे सदा भाषात्मक समन्वयक सुखद वातावरण वनल रहल आ तकर श्रेय म०म० मिश्र सन-सन विवेकी विद्वानकें छन्हि।

1966 इ० मे उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन उचिते हिनका 'साहित्य-वारिधि' सम्मानोपाधि प्रदान कएलक।

# 7

# भारतीय दर्शनक प्रांगणमे

मिथिला भारतीय दर्शनक जन्मभूमि मानल जाइत अछि। 'अक्षपाद, वात्स्यायन ओ उद्योतकरक जन्मभूमि तथा कर्मभूमि तिर्हुत छल।'[1] वृद्ध वाचस्पति मिश्र (841 इ०) एतहि छबो हिन्दू दर्शनपर टीका लिखलन्हि आ 'तकरा बादसँ तँ ब्राह्मण न्यायशास्त्रपर तिर्हुतक एकच्छत्र राज्य रहल।'[2] ई परम्परा मिथिलामे किछु उत्कर्षापकर्षक संग उनैसम शताब्दीक अन्त ओ बीसम शताब्दीक आरम्भ धरि अविच्छिन्न रहल। काशीमे भट्टोजिदीक्षित, नागेश भट्ट ओ बालशास्त्रीक गुरु-परम्परा द्वारा नव्य व्याकरण शास्त्रक विकास भेलापर एहि परम्पराक प्रवेश गत शताब्दीमे मिथिलामे सेहो भेल आ' एहिसँ दर्शनक पठन-पाठनक क्षेत्र किछु संकुचित अवश्य भेल; मुदा उदयन, गंगेश ओ पक्षधरक नव्य न्यायपरम्परा एतए अनुवर्तमान रहल। पाछाँ तँ नव्य व्याकरणहुमे नव्य न्यायशैलीक तर्कवाद प्रविष्ट भए गेल, फलतः नीक वैयाकरण ओएह मानल जाए लगलाह जनिका नव्य न्यायहुमे प्रवेश होइन्ह। ततवे नहि, प्रत्येक नीक पण्डितकें, बरु ओ वैयाकरण होथु वा मीमांसक वा धर्मशास्त्री, छबो दर्शनक एक-एक टा प्रारम्भिक पुस्तक पढ़ब अनिवार्य छल, जेना सांख्यतत्त्वकौमुदी, वेदान्त-परिभाषा, मुक्तावली, अधिकरण-कौमुदी आदि।

म०म० मिश्रक पिता ओ आरम्भिक गुरु म०म० जयदेव मिश्र स्वयं भट्टोजि-नागेश-परम्पराक नव्य व्याकरण पढ़ने छलाह तथा संग-संग विविध दर्शनक प्रारम्भिक अध्ययन कए नव्य न्यायक वाद-रीतिमे विलक्षण पटुता प्राप्त कएने छलाह आ' ताहि बलें अखिल भारतीय स्तर पर उत्कृष्ट पण्डितक पंक्तिमे स्थान पाबि चुकल छलाह। एहि देशीय आ पैतृक परम्पराक अनुसरण करैत म०म० मिश्र उचिते अपन अध्ययनक मुख्य विषय दर्शन-शास्त्रकें बनओलन्हि। पिता नैयायिक नहि, वैयाकरण रहथिन्ह। अतः पुत्रो जँ पहिने व्याकरण पढ़ितथि पाछाँ दर्शन तँ से अधिक स्वाभाविक होइत। परन्तु आधुनिक रीतिसँ भारतीय विद्याक जे शिक्षा विदेशी ओ देशी विद्वानलोकनि चलओलन्हि ताहिमे अष्टाध्यायी ओ काशिकासँ आगाँक

---

1. राहुल सांकृत्यायन, मिथिलांक, पृ० 11।
2. ओतहि।

व्याकरणशास्त्रीय विवेचनकें कोनो विशेष महत्व नहि देल गेल । विश्व-विद्यालयक पाठचर्यामे केवल दू ग्रुप राखल गेल, साहित्य ओ दर्शन । सम्भवतः एही कारणें म०म० मिश्र व्याकरण-दिस उन्मुख नहि भेलाह । साहित्य हिनक विषय तँ छल किन्तु तकरा मिथिलामे कहिओ शास्त्रक दरजा नहि देल गेलैक, प्रत्युत ओ विनोदक साधन मात्र बूझल जाइत रहल । मैथिल नैयायिकलोकनि जखन 'कर्कश तर्कक अभ्यास करैत-करैत थाकि जाथि तखनहि चित्तकें विश्राम देबाक हेतु काव्यक रचना वा आस्वादन करथि ।'[1] तें ने म०म० जयदेवमिश्रे एहि विषयकें विषय बुझलन्हि आ ने हुनक पुत्रे। तखन रहि गेल केवल दर्शन । एही परिस्थितिमे म०म० मिश्र सभ शक्ति लगाए दर्शनक प्रांगणमे प्रवेश कएलन्हि ।

मिथिलामे एहि कालमे प्राचीन रीतिक पठन-पाठनमे दर्शन शास्त्रक केवल दू शाखा प्रचलित छल : न्याय ओ मीमांसा । एहिमे न्यायशास्त्र वेसी जोतिगर छल, मीमांसाक तीव्र गतिएँ ह्रास भए रहल छल । वेदान्तक प्रचार नाममात्र छल । सांख्य आ योग गम्भीर अध्ययनक वस्तु नहि बुझल जाइत छल, अपितु केवल अंग रूपमे न्यायशास्त्रक संग पढ़ल जाइत छल । परन्तु आधुनिक शिक्षामे सभ दर्शन एकत्र कए देल गेल । नव्य न्याय पूर्णतः छाँटि देल गेल । किएक तँ ओ आधुनिक दृष्टिएँ विशेष उपयोगी रहितहुँ ततेक गहन छल जे आधुनिक विद्वान् ओहिमे डूबब असाध्य बुझलन्हि । जें आधुनिक शिक्षामे सभ दर्शन एक संग पढ़ाओल जाइत छल तें एहिमे कोनहु दर्शनक गम्भीर अध्ययन सम्भव नहि छल । एहना स्थिति मे प्राचीन रीतिक 'पंडित' नवीन रीतिक 'विद्वान' कें पल्लवग्राही बूझैत छलाह आ नवीन रीतिक विद्वान् प्राचीन रीतिक पंडितकें कूप-मंडूक । अस्तु, म०म०मिश्र एहि मे मध्यम मार्गक अवलम्बन कएलन्हि—आधुनिक रीतिसँ 'व्यापक' अध्ययन ओ प्राचीन रीतिसँ 'गहन' अध्ययन । ई सोनमे सुगन्धिक काज कएलक आ' थोड़बहि दिनमे हिनक पाण्डित्य-प्रकर्ष नव्य ओ प्राच्य दुनू विद्वद्वर्गमे विख्यात भए गेल ।

ई आरम्भमे दर्शनक ग्रन्थ अपन पितासँ पढ़लन्हि । गभर्नमेन्ट संस्कृत कालेज, वाराणसीमे तत्कालीन अनेक अध्यापकसँ पढ़ने होएताह । परन्तु ई अपन गुरु म. म. गोपीनाथ कविराजकें मानैत रहलाह । कविराज हिनका पढ़एवे टा नहि कएलन्हि, अपन जीवनक बहुत रास आदर्श हिनकामे भरलन्हि तथा आधुनिक रीतिसँ शोधात्मक अध्ययनक दृष्टि सेहो देलन्हि । एहि प्रकारें म०म० मिश्र दर्शनक अध्ययन सम्पन्न तँ कएलन्हि, मुदा दर्शन शास्त्र हिनका अपन प्रांगणसँ कहिओ हँटए नहि देलक । 1967 मे आठ सितम्बरकें जहिआ ई स्वर्गवासी भेलाह ताहू दिन अपन भारतीय दर्शनक इतिहासक तेसर खंडक प्रेस-कापी 285 पृष्ठ धरि

1. म०म० शंकर मिश्र 'रसार्णव' मे लिखने छथि—

तर्काभ्यासपरिश्रान्तस्वान्त-विश्रन्तिहेतवे ।
ये श्लोका विहितास्तेषां संग्र होऽयंविधीयते ॥

शुद्ध कएलन्हि।

अपन जीवन भरिमे म० म० मिश्र जतेक लिखलन्हि ताहिमे दर्शनसम्बन्धी लेख अस्सी प्रतिशतसँ कम नहि होएत। दर्शनक क्षेत्रमे ई जे सभसँ पैघ काज कएलन्हि से छल भारतीय दर्शनक इतिहास(History of Indian Philosophy)। ई प्रस्तुत इतिहास लिखब कोना प्रारम्भ कएलन्हि तकरो एकटा इतिहास अछि। 1934-35 इ० मे म०म० डा० सर गंगानाथ झासँ मैथिलीमे कोनो दार्शनिक ग्रन्थ लिखि देवाक आग्रह कएल गेलन्हि। ओ एकटा छोट-सन पोथी 'वेदान्त-दीपक' नामसँ लिखलन्हि जे दरभंगासँ मैथिली साहित्य परिषद द्वारा 1936 इ० मे प्रकाशित भेल। एहिमे सर झा एक नव प्रश्न उठाए ओकर समाधान देलन्हि। प्रश्न छल : जखन ऋषि-मुनि यथार्थदर्शी होइत छलाह आ परम सत्य एक होइत अछि तखन भिन्न-भिन्न ऋषि भिन्न-भिन्न दर्शनमे भिन्न-भिन्न तत्त्वकें कोना स्वीकार कएलन्हि आ' एहि प्रकार दर्शनमे एना मतभेद किएक? एकर समाधान मे सर झा कहलन्हि—छवो दर्शन वस्तुतः एक थिक, जें अधिकारी भिन्न-भिन्न बौद्धिक स्तरक होइत छथि, तें तत्त्वक विवेचन क्रमशः स्थूलसँ सूक्ष्म दिस चलैत गेल अछि; प्रथम अवस्थाक थिक वैशेषिक दर्शन; चरम अवस्थाक वेदान्त दर्शन। छवो दर्शन सूक्ष्मता-क्रमें सीढ़ी-जकाँ चलैत अन्तमे एके चरम लक्ष्यपर पहुँचैत अछि।

एही छोट-सन वातसँ प्रेरित भए म०म० मिश्र भारतीय दर्शनक इतिहास लिखवामे प्रवृत्त भेलाह। छोट-सन रूप-रेखाक ध्यान कए आरम्भ कएल गेल ई काज विशालसँ विशालतर, गहनसँ गहनतर होइत गेल। ई 1940 क आस-पास आरम्भ कएल गेल आ जीवनक अन्तकाल धरि चलैत रहल।

तीन खंडक एहि विशालकाय ग्रन्थमे दर्शनक विकास-क्रमक नवीन दृष्टिसँ वर्णन तँ अछिए, दार्शनिकलोकनि, विशेष कए मैथिल दार्शनिक सभक परिचय गहन अन्तरंग ओ बहिरंग अध्ययन द्वारा एहिमे उद्घाटित कए लेखक एकर महत्त्वकें ऐतिहासिक दृष्टिएँ चौगुन कए देने छथि। ढेरक ढेर मैथिल ओ मैथिलेतर दार्शनिक लोकनिकें तथा तनिक हराएल-भोतिआएल मूल्यवान् ग्रन्थसभकें सर्व-प्रथम प्रकाशमे अनवाक श्रेय एहि ग्रन्थकें छैक। एहिसँ पूर्व जे केओ भारतीय दर्शनक इतिहास लिखने छलाह से दार्शनिक विवेचनमे तँ अवश्य सफल भेल छलाह परन्तु मिथिलाक परम्परासँ, ओकर इतिहाससँ आ' ओकर इतिहासक सर्वाधिक प्रामाणिक स्रोत मैथिल पंजीसँ बड़ थोड़ परिचित छलाह, तें हुनका-लोकनिक कृति मे मैथिल विद्वान्लोकनिक अवदान स्वभावतः उपेक्षित रहि गेल छल। तहिं म०म० मिश्र एहि उपेक्षित अंशक पूर्ति करैत दर्शनक नव इतिहास लिखवामे प्रवृत्त भेलाह। ई एतेक सरल शैली ओ सोझ भाषामे लिखल गेल अछि जे दर्शनमे साधारणो रुचि रखनिहार व्यक्ति एहिसँ भारतीय दर्शनक बहुत किछु ज्ञान प्राप्त कए सकैत अछि। एकर प्रथम खंड 1957 मे तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, प्रयागसँ

प्रयागसँ प्रकाशित भेल ओ द्वितीय खंड 1966 इ० मे। तृतीय खंडक प्रकाशन बाँकी अछि।

कहल जाए चुकल अछि जे म०म० मिश्र दर्शनक अध्ययन आधुनिक रीतिसँ कएलन्हि जाहिमे दर्शनक सभ शाखा संगहि पढ़ाओल जाइत छल। अतः ई स्वाभाविक छल जे वृद्ध वाचस्पति जकाँ हिनक ध्यान सभ दर्शन पर समान रहए। ई छवो दर्शन पर लगभग समान रूपें काज कएने छथि। विभिन्न दर्शन पर ई जे-जे काज कएलन्हि तकर विवरण एक-एक कए नीचाँ देल जाइत अछि।

### (क) वैशेषिक दर्शन :

सभसँ पहिने ई वैशेषिक दर्शनक विशेष अध्ययन कएल। एही दर्शनसँ अपन डी०लिट्० उपाधि हेतु शोध-विषय चुनलन्हि—'तत्त्व-विचार' अथवा अङरेजी मे Concept of Matter According to Nyāya Vaiśeṣika। ई शोधप्रबन्ध पाछाँ काल एही नामसँ किछु परिवर्तन-परिवर्धनक संग 1936 इ० मे तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, प्रयागसँ प्रकाशित भेल। एकर प्राक्कथन म०म०डा० सर गंगानाथ झा लिखलन्हि। एहिमे वैशेषिक' दर्शनमे प्रतिपादित द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष, समवाय ओ अभाव एहि सात पदार्थक पृथक्-पृथक् अस्तित्वक विवेचन कएल, गेल अछि।

एहि शास्त्र पर हिनक कतोक छोट-छोट निबन्ध सेहो अछि ; जेना Physical Theory in Indian Thought, जे इलाहाबाद यूनिभर्सिटी स्टडीजमे प्रकाशित अछि; दोसर The Nature of Physical World According to Nyāya-vaiśeṣika, जे रामकृष्ण मिशनसँ प्रकाशित Cultural Heritage of India, खंड iv मे समाविष्ट अछि।

### (ख) सांख्य एवं योग दर्शन

यद्यपि त्रिगुणात्मक सृष्टि-सिद्धान्त पर स्थापित सांख्य-दर्शन पुराण ओ महाभारतादिमे बड़ प्रसिद्ध रहल अछि तथापि दर्शन शास्त्रक प्राचीन परम्परामे एकर विकास मीमांसादि दर्शनान्तरक अपेक्षया कम भेल। परन्तु आधुनिक परम्परामे एहि दर्शनपर विशेष ध्यान देल गेल अछि। तें स्वभावतः म०म० मिश्र एकर विशेष

1. ई विषय थिक मुख्यतः वैशेषिक दर्शनक। परन्तु जें न्यायदर्शन सेहो इएह सभ आ एतवे पदार्थ मानैत अछि तें एहि सिद्धान्तक नाममे न्यायदर्शनहुक नाम जोड़वाक प्राचीन परिपाटी अछि, जेना अन्नंभट्टक 'तर्कसंग्रह' मे :

कणादन्यायमतयोर्बालव्युत्पत्ति सिद्धये।
अन्नंभट्टेन विदुषः रचितस्तर्कसंग्रहः॥

अध्ययन कएने छलाह। एहि दर्शन पर ई बहुत रास महत्त्वपूर्ण निबन्ध लिखलन्हि ओ अनेक ग्रन्थक सम्पादन कएलन्हि। एकर ऐतिहासिक पक्षक विवेचन अपन हिस्ट्री आफ इन्डिअन फिलासफी मे विस्तारपूर्वक देने छथि तथा संक्षिप्त परिचय अपन 'भारतीय दर्शन' (1960) मे देने छथि।

सांख्यदर्शन विषयक हिनक प्रथम ओ रोचकतम लेख अछि: Stray Thoughts on the Great Vācaspati and his Tattvakaumudi, जे ई अखिल भारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलन (ओरिएन्टल कान्फरेन्स) क मैसूर अधिवेशन, 1935 मे पढ़ने छलाह आ' ओकर प्रोसीडिङ्समे छपल। एहिमे प्रतिपादित एक बातक बड़ तीव्र प्रतिक्रिया भेल, कारण जे एहिमे एक ठाम वृद्ध वाचस्पतिक भ्रान्तत्वशंका उठाओल गेल छल। प्राचीन पण्डितलोकनिकें ई बात कोना सह्य होइतन्हि जे वृद्ध वाचस्पतिकें भ्रम भेलन्हि। प्रो० रमानाथ झा म०म० मिश्रक उक्त निबन्धक एतत्सम्बद्ध अंशकमैथिलीमे अनुवाद कए मिथिला-मिहिर (मैथिली साप्ताहिक, दरभंगा) क 24.7.1943 क अंकमे प्रकाशित कराओल आ' एहिमे उठाओल गेल शंकाक समाधान करबाक हेतु पण्डितलोकनिक आह्वान कएल। अगिला अंकमे महावैयाकरण दीनबन्धु झा म०म० मिश्रक मतक खंडन करैत वृद्ध वाचस्पतिकें निर्भ्रान्त सिद्ध कएलन्हि। पुनः म०म० मिश्र एकर प्रत्युत्तर देलन्हि, आ' पुनः महावैयाकरण प्रत्युत्तरक उत्तर क्रमशः तीन अंकमे देलन्हि। एहि वाद-विवादकें मिथिलाक पण्डितलोकनि बहुत रुचिसँ पढ़लन्हि।

एहि विवादक आओर परिणाम जे भेल हो, परन्तु म०म० मिश्रकें एकराबाद सँ महावैयाकरण दीनबन्धु झाक प्रति ओ हुनक विद्वत्ताक प्रति असीम श्रद्धा भए गेलन्हि, आ' जखन दरभंगामे मिथिला विद्यापीठ (संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूट) क स्थापना भेल आ म०म० मिश्र प्रथम निदेशक भए अएलाह तँ महावैयाकरणकें प्राचीन पण्डितक पद पर नियुक्त कए अपना ओतए राखि लेलन्हि।

एहिसँ अतिरिक्त सांख्य-दर्शन पर हिनक एक शोधात्मक निबन्ध अछि—A Missing Kārikā of Sāṅkhyasaptati, जे बम्बैक विद्याभवन पत्रिकामे प्रकाशित अछि।

हिन्दीमे एहि दर्शन पर हिनक एक स्वतन्त्र ग्रन्थ अछि 'सांख्य-योग दर्शन'। ई तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, प्रयागसँ 1958 मे प्रकाशित अछि। एहिमे सांख्य-दर्शनक संग योग-दर्शन सेहो समाविष्ट अछि। एहि दूनू दर्शनक पृथक्-पृथक् अस्तित्व तँ निर्विवाद अछि, परन्तु प्राचीन परम्परामे दुनू एकत्र पढ़ाओल जाइत अछि आ' परवर्ती कालहुमे विविध प्रचलित संस्कृत परीक्षा सभमे दुनूक समावेश एक शास्त्र जकाँ अछि। गीतामे सेहो कहल गेल अछि—'सांख्ययोगौ पृथग् बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।' एहि पुस्तकमे सरल हिन्दीमे सांख्य एवं योग दर्शनक संक्षिप्त परिचय देल गेल अछि। पहिनहि कहि चुकल छी जे ई हिन्दीमे एही

प्रकारक वस्तु लिखलन्हि; गम्भीर वस्तु सदा अङरेजीमे लिखैत रहथि।

एहिसँ पूर्व ई सांख्यशास्त्र सम्बन्धी दू निबन्ध आओर लिखलन्हि : पहिल Gauḍapāda and Māṭharavṛtti, जे इलाहाबाद यूनिभर्सिटी स्टडीज, खंड viii मे प्रकाशित अछि तथा Pramāṇas in Sāṅkhya, जे 'सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ' मे 1950 मे प्रकाशित अछि। प्रथम निबन्धमे सांख्यसूत्र पर लिखल गेल दू भाष्यक तुलनात्मक समीक्षा कएल गेल अछि ओ दोसरमे सांख्यसम्मत प्रत्यक्षादि प्रमाण सभक विवेचन अछि।

ई ईश्वरकृष्ण कृत 'सांख्य-कारिका'क टीका मैथिलीमे लिखने छथि जे एखन धरि अप्रकाशित अछि।

### (ग) योग-दर्शन

प्रतीत होइत अछि जे म०म० मिश्रकें योगदर्शनमे कोनो विशेष रुचि नहि छलन्हि, कारण जे फूट कए एहि दर्शन पर हिनक ने कोनो मौलिक ग्रन्थे अछि आ' ने निबन्धे। अपन वैयक्तिक जीवनहुमे योग-साधना-दिस हिनक प्रवृत्ति नहि छलन्हि। अतः योगविषयक हिनक ज्ञानक आभास उपर्युक्त हिनक पुस्तक 'सांख्य योग दर्शन' सँ तथा दर्शनशास्त्रक इतिहाससँ होएत।

### (घ) मीमांसा-दर्शन

मीमांसा-दर्शनमे म०म० मिश्रक सभसँ उपादेय ओ रोचक कृति अछि 'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः' शीर्षक निबन्ध, जे ई अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनमे पढ़ने छलाह आ' ओकर प्रोसीडिङ्समे 1928 इ० मे प्रकाशित भेल। शाबर भाष्यक बाद मीमांसा-दर्शन दू सम्प्रदायमे फुटि गेल : एक कुमारिल भट्टक जे भाट्ट-सम्प्रदाय कहओलक, आ' दोसर प्रभाकरक जे प्राभाकर-सम्प्रदाय वा गुरु-सम्प्रदाय कहओलक। म०म० मुरारि मिश्र सर्वथा मौलिक विचारक मीमांसक भेलाह। ओ ने प्रभाकरक अनुयायी भेलाह, ने भट्टक; अपितु अपन एक तेसरे नव मार्ग स्थापित कएलन्हि। तत्कालीन मीमांसकलोकनि जे भट्ट वा प्रभाकर दुइए गोटाकें प्रमाणभूत आचार्य मानैत छलाह, आरम्भमे हिनक नव मतक उपहास 'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः' कहिकें करए लगलाह। संस्कृत साहित्यमे एखनहु 'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः' ई लोकोक्ति ठीक ओहने अर्थमे बाजल जाइत अछि जेहन अर्थमे मैथिलीमे कहैत छिऐक—'कनही गाएकें भीने बथान'। परन्तु ई उपहास अधिक दिन उपहास नहि रहल। अन्ततोगत्वा म०म० मुरारि मिश्र मीमांसाक तृतीय मार्गक स्थापना कइए लेलन्हि। प्रस्तुत निबन्धमे म०म० मिश्र ई देखओलन्हि अछि जे कोन-कोन बातमे मुरारि मिश्रकें प्रभाकर ओ भट्टसँ मतभेद छलन्हि।

मीमांसामे कर्म सभसँ उपर मानल गेल अछि। इएह सुख-दुःख ओ बन्ध-

मोक्षक कारण कहल गेल अछि। एहि कर्मक स्वरूप विवेचन म०म० मिश्र कैक टा निवन्धमे कएने छथि। पहिल अछि, Law of Karman in the Vedic Saṁhitās। एहिमे मीमांसाक कर्मवादक मूलान्वेषण वैदिक संहितामे कएल गेल अछि। लगभग इएह विषय हिन्दी भाषामे 'ऋग्वेद मे कर्म विचार' शीर्षकसँ लिखलन्हि जे 'श्रीकृष्ण सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ' मुंगर मे प्रकाशित भेल।

ई एहि शास्त्रक कैक गोट महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक सम्पादन कएने छथि। पहिल थिक मुरारिमिश्रकृत 'एकादशाद्यधिकरण'। ई भंडारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टिच्यूट, पूना सँ प्रकाशित अछि। मुरारि मिश्रक सम्भवतः इएह एक टा ग्रन्थ उपलब्ध अछि। एही ग्रन्थक आधारपर म०म० मिश्र 'मुरारेस्तृतीयः पन्थाः' शीर्षक उपर्युक्त निवन्ध लिखने छथि। दोसर थिक, हलायुधकृत 'मीमांसासारसर्वस्व' जे विहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटीसँ 1934 इ० मे प्रकाशित भेल। तेसर थिक, पार्थसारथि मिश्र कृत तन्त्ररत्न, भाग 1, जे ई म. म. डा० सर गंगानाथ झाक संग मिलिकें सम्पादित कएने छलाह। ई सरस्वती-भवन टेक्स्ट सीरीज, वाराणसीसँ 1930 इ० मे प्रकाशित भेल।

एहि शास्त्र पर ई दू गोट ग्रन्थवैज्ञानिक (bibliographical) कार्य सेहो कएने छथि। पहिल थिक 'मीमांसाकुसुमांजलि' अर्थात् अङरेजीमे Critical Bibliography of Mīmāṁsā। एकरो सम्पादन ई म०म० डा० सर गंगानाथ झाक संग कएलन्हि। एहिमे मीमांसाशास्त्रक सकल महत्त्वपूर्ण पुस्तकक सूची विषयादिनिर्देशक संग देल गेल अछि। ई शोधछात्रक हेतु परम उपयोगी अछि। एहि प्रकारक दोसर कृति छन्हि शाबरभाष्यक म०म० सर गंगानाथ झाक अङरेजी अनुवादक अनुक्रमणिका (Index) जेसर झाक उक्त अनुवादक परिशिष्टमे देल गेल अछि। ई गायकवाड ओरिएन्टल सीरीज, बड़ोदा मे प्रकाशित अछि।

### (ङ) न्याय-दर्शन

न्याय-दर्शन पर म०म०मिश्रक एकमात्र स्वतन्त्र मौलिक ग्रन्थ अछि हिन्दीमे— 'भारतीय तर्कशास्त्र की रूप-रेखा' जे 1950 मे रामनारायण लाल, प्रयाग द्वारा प्रकाशित अछि। ई सरल हिन्दीमे साधारण पाठकक हेतु लिखल गेल अछि तें एहि मे कोनो शोधात्मक तत्त्व वा गहन विवेचन नहि अछि।

तर्कशास्त्रमे हिनक तीन गोट महत्वपूर्ण निवन्ध दृष्टिगत भेल अछि। पहिल थिक Smṛti Theory according to Nyāya-Vaiśeṣika, जे के०वी० पाठक स्मृति ग्रन्थ, पूना मे 1930 मे प्रकाशित अछि। एहिमे ई विचार कएल गेल अछि जे न्याय ओ वैशेषिक दर्शनक अनुसार स्मृत्यात्मक ज्ञान की थिक आ से कोन प्रक्रिया सँ होइत अछि। दोसर थिक Mahāmahopādhāya Candra and His views ई 'गंगानाथ झा स्मृति ग्रन्थ', प्रयाग, 1942 मे प्रकाशित अछि। एहिमे एक नव

ज्ञात मैथिल नैयायिकक परिचयक संग हुनक कतिपय विशेष मतक निरूपण कएल गेल अछि। तेसर थिक Tarkasūtra, जे 'बी०सी० लॉ स्मृतिग्रन्थ', पूना मे 1946 मे प्रकाशित अछि। एहिमे एक नव उपलब्ध न्यायशास्त्रीय प्राचीन ग्रन्थक परिचय अछि।

ई न्यायशास्त्रक पाँच गोट ग्रन्थक सम्पादन कएलन्हि। पहिल, महादेवकृत 'न्यायकौस्तुभ' जे पूर्वमे अप्रकाशित-अज्ञात छल। ई सरस्वती-भवन टेक्स्ट सीरीज वाराणसी, 1930 मे प्रकाशित भेल। दोसर, म०म० शंकरमिश्रकृत 'भेदरत्न'। इहो पूर्वमे प्रकाशित नहि छल। एहिमे शंकराचार्यक अद्वैतवादक खंडन कए न्यायशास्त्र-सम्मत द्वैतवादक समर्थन कएल गेल अछि। तेसर, गौतमक 'न्यायसूत्र', वात्स्यायन-कृत 'भाष्य' सहित। ई पूना ओरिएन्टल सीरीज मे 1942 मे प्रकाशित अछि। चारिम, गंगेशोपाध्यायकृत 'तत्त्वचिन्तामणि', म०म० पक्षधरमिश्रकृत 'आलोक' तथा म०म० महेश ठाकुरकृत 'दर्पण' टीका सहित। ई मिथिला रिसर्च इन्स्टिच्यूट, दरभंगा सँ 1957 मे प्रकाशित भेल। पाँचम, म०म० चन्द्रकृत 'न्यायरत्नाकार'। सम्भवतः ई एखनहु अप्रकाशिते अछि। एकरे सार पूर्वोक्त निवन्धमे वर्णित अछि।

## (च) वेदान्त-दर्शन

वेदान्तमे म०म० मिश्र कोनो स्वतन्त्र मौलिक ग्रन्थ नहि लिखलन्हि। निवन्ध पाँच गोट दृष्टिगत भेल अछि। पहिल, Dream Theory in Indian Thought इलाहाबाद यूनिभर्सिटी मैगजिनमे प्रकाशित अछि। एहिमे स्वप्न, जे वेदान्तक एक रोचक प्रसंग थिक, तकर भारतीय चिन्तनमे की स्वरूप छैक से देखाओल गेल अछि। दोसर, Bhāskara School of Vedānta, इहो ओही मैगजिनमे प्रकाशित अछि। तेसर, Background of Bādarāyaṇasūtra, 'कल्याण-कल्पतरु-गोरखपुरक वेदान्त-विशेषांकमे प्रकाशित अछि। चारिम, Jīva; Its Movement and Uplift बड़ोदाक ओरिएन्टल इन्स्टिच्यूटक जर्नलमे प्रकाशित अछि। एहिमे जीवात्माक गति ओ उद्धारक वर्णन अछि। पाँचम थिक Annihilation of Karman as the Cause of Mokṣa accodiny to Padmanābhācārya-ई अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन, 1933 मे पढ़ल गेल छल आ' ओकर प्रोसीडिङ्स मे प्रकाशित अछि। एहिमे पद्मनाभाचार्यक अनुसार कर्मक निवृत्ति सँ मोक्षक प्राप्ति प्रतिपादित अछि।

वेदान्तमे हिनक संकलित ओ सम्पादित ग्रन्थ विशेष महत्त्वक अछि। ई पूर्वोक्त 'मीमांसाकुसुमांजलि' क ढंग पर 'वेदान्त-कोश' नामक ग्रन्थसूची वनओलन्हि जे डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च इन्स्टिच्यूट, पूनामे प्रकाशनार्थ सुरक्षित अछि।

ई वेदान्तक तीन गोट ग्रन्थक सम्पादन कएल। पहिल, पद्मनाभाचार्यक 'विज्ञान

दीपिका'। एहिमे स्वोपज्ञ वृत्ति सहित एकहत्तरि गोट कारिका अछि, जकरा (एक श्लोक कें जँ प्रस्तावनामे बाद कए दी तँ) 'सांख्यकारिका'क ढंगक 'सप्ततिका' कहि सकैत छी। स्मरणीय जे उपर मीमांसामे हिनक पाँचम निवन्धक जे उल्लेख कएल गेल अछि ताहिमे एही वेदान्त ग्रन्थक समीक्षा ओ सार देल गेल अछि। एहि मे ई बुझाओल गेल अछि जे कोना-कोना कर्मक अपहारसँ मोक्ष प्राप्त कएल जाए सकैत अछि। इहो ज्ञातव्य जे इएह 'ब्रह्मसूत्र-शांकरभाष्य' पर 'पंचपादिका' टीका लिखने छथि। दोसर थिक गोविन्द भगवत्पादाचार्यकृत 'आत्मवोध'। ई एखन धरि प्रकाशित नहि भेल अछि। एकर सुसम्पादित प्रेस कापी तैआर अछि।

गीता ओ उपनिषद् पर हिनक दू कृति अछि। गीता पर अछि—A Critical Study of Bhagavadgītā, जे तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, प्रयागसँ दू खेप प्रकाशित भेल अछि। दोसर अछि छान्दोग्य उपनिषद् म०म० डा० सर गंगानाथ झाक अङरेजी अनुवाद सहित, जकर केवल सम्पादन ई कएने छथि।

### (छ) अन्यान्य दर्शन

म. म. मिश्रकें बौद्ध, जैन ओ चार्वाक दर्शनमे विशेष रुचि नहि छलन्हि। हिनक कट्टर सनातनी आस्तिकता तकर कारण रहल होएत। तथापि सर्वदर्शन सम्बन्धी ग्रन्थ ओ निवन्धमे एहू तीनू दर्शनक परिचय देलन्हि अछि, तथा एक निवन्ध बौद्ध दर्शन पर ओ एक चार्वाक दर्शन पर लिखने छथि। पहिल थिक Downfall of Buddhism in India, अर्थात् भारतमे बौद्ध धर्मक पतन। ई० 'गोडे स्मृति ग्रन्थ' मे तथा गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूटक जर्नलमे प्रकाशित अछि। दोसर थिक, Indian Materealism, अर्थात् भारतीय भौतिकतावाद, जे ट्वेन्टिएथ सेंचुरी, प्रयाग मे 1937 इ० मे प्रकाशित अछि।

### (ज) सर्वदर्शन

म०म० मिश्र एहन बहुत ग्रन्थ ओ निवन्ध लिखलन्हि जाहिमे सकल भारतीय दर्शनक विवेचन एकत्र कएल गेल अछि। हिनक गौरवग्रन्थ 'हिस्ट्री आफ इन्डिअन फिलासफी' एही कोटिक अछि। एहि प्रकारक दोसर ग्रन्थ अछि 'भारतीय दर्शन' ई हिन्दीमे अछि आ' उत्तर प्रदेश सरकारक हिन्दी समितिसँ 1960 इ० मे प्रकाशित अछि। एहिमे परम सरल भाषा ओ शैलीमे सभ भारतीय दर्शनक स्वरूप ओ मूलभूत तत्त्व वर्णित अछि।

हिनक सर्वदर्शनस्पर्शी निवन्धमे उत्कृष्ट ओ गम्भीर निवन्ध अछि Synthetic Gradation in Indian Thought, जे इलाहाबाद यूनिभर्सिटी स्टडीज मे प्रकाशित अछि। एहिमे सम्भवत: ओही सिद्धान्तक प्रतिपादन अछि जे म०म० डा० सर गंगानाथ झा द्वारा अपन मैथिली ग्रन्थ 'वेदान्तदीपक' मे सूत्र रूपें संकेतित अछि

आ' जकर विशद व्याख्या म०म० मिश्र अपन 'हिस्ट्री आफ इन्डिअन फिलासफी' मे कएने छथि। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मेरठ अधिवेशनमे धर्म ओ 'दर्शन विभागक अध्यक्षपीठसँ देल गेल भाषण 'भारतीय दर्शन की रूपरेखा' तथा 'विक्रमस्मृति ग्रन्थ', ग्वालियरमे प्रकाशित 'भारतीय दर्शनों का स्वरूप-निरूपण' एही प्रकारक लेख थिक।

उपर जे विवरण देल गेल अछि से एहि बातक पर्याप्त प्रमाण अछि जे म०म० मिश्र आजीवन भारतीय दर्शनक चिन्तन-मननमे संलग्न-निमग्न रहलाह आ' एहि क्रममे ई जे किछु लिखिकें हमरा लोकनिकें दए गेल छथि से भारतीय दर्शनक हेतु ओ सामान्यतः भारतीय विद्याक हेतु अमूल्य निधि अछि।

**अन्यान्य शास्त्र**

म०म० मिश्र दर्शनक प्रांगणकें कहिओ नहि छोड़लन्हि। अन्यान्य शास्त्रक विषयमे जे किछु काज कएलन्हि से एही मुख्य धाराक क्षेपक जेकाँ अछि; तें ओहू सभक विवरण एही अध्यायमे देल जाइत अछि।

ई बड़े यत्नसँ गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूटमे बहुत रास मूल्यवान पांडु-लिपिक संग्रह कएलन्हि आ तकर विलक्षण सूचीपत्र स्वयं बनओलन्हि। एकर प्रथम खंडक प्रथम ओ द्वितीय भाग प्रकाशित अछि। स्मरणीय जे ई हिनक ग्रन्थसूची विषयक तृतीय पुस्तक भेल; 'वेदान्तकोश' ओ 'मीमांसाकुसुमांजलि' क उल्लेख उपर कएल जाए चुकल अछि। आब ग्रन्थसूची Bibliography नामसँ एक स्वतन्त्र शास्त्रक रूप धारण कएने जाए रहल अछि। म०म० मिश्र एहू शास्त्रक एक विशिष्ट विद्वान् मानल जाइत छथि।

धर्मशास्त्रमे ई तीन ग्रन्थक सम्पादन कएलन्हि। मेधातिथिक 'मनुभाष्य' क उद्धार म०म० डा० सर गंगानाथ झा बड़े परिश्रमसँ कएने छलाह। एकर द्वितीय खंडक सम्पादन म०म० मिश्र कएलन्हि, जे बंगाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्तासँ 1939 इ० मे प्रकाशित भेल। एहिना सर झा वाचस्पति मिश्रक 'विवादचिन्तामणि' क जे अङरेजी अनुवाद कएने छलाह तकरो सम्पादन ई कएल। ई गायकवाड ओरिएन्टल सीरीज, बड़ोदासँ 1942 मे प्रकाशित अछि। हिनक धर्मशास्त्रक तेसर कृति अछि हरिनाथोपाध्यायक 'स्मृतिसारसंग्रह' क सम्पादन। ई काज ई एकसरे कएलन्हि। एकर प्रेस कापी गायकवाड ओरिएन्टल सीरीज कार्यालय, बड़ोदामे सुरक्षित अछि। ई सम्भवतः एखन धरि प्रकाशित नहि भेल अछि।

व्याकरणमे ई अपन पिता म०म० जयदेव मिश्रक लिखल तीन पोथीक सम्पादन ओ प्रकाशन कएलन्हि : (1) 'शास्त्रार्थरत्नावली', (2) नागेशभट्टकृत 'परिभाषेन्दु-शेखर' क 'विजया' व्याख्या, तथा (3) गदाधर भट्टकृत 'व्युत्पत्तिवाद'क 'जया'

व्याख्या। ई तीनू ग्रन्थ भारत भरिमे बहुत प्रचलित भेल। द्वितीय पुस्तकक चतुर्थ संस्करणक प्रूफ ई अपन जीवनक अन्तिमो दिन देखने रहथि।

काव्यक विषयमे हिनक तीन-चारि गोट छोट-छोट निबन्ध भेटैत अछि; जेना (i)'भवभूति', मिथिला मिहिर, दरभंगा, 1922;(ii) Kālidāsa's Supremacy 'अयोध्यासिंह उपाध्याय अभिनन्दन ग्रन्थ', आरा 1936; (iii) 'काव्य और कवि,' हिन्दुस्तानी, प्रयाग;(iv) 'दुष्यन्त का एक आंशिक चरित्र' किशोर, कालिदास अंक, पटना, 1944; (v) 'गोवर्धनाचार्य और उनकी सप्तशती', वैशाली, मुजफ्फरपुर, अंक 1। ई काव्यक केवल एक ग्रन्थक सम्पादन कएलन्हि 'विद्याकरसहस्रकम्'- जाहिमे विद्याकर मिश्र (उनैसम शताब्दीक आदि) द्वारा विभिन्न कविक नाम निर्देशपूर्वक एक हजार मुक्तक श्लोक संगृहीत अछि। एकर भूमिकामे ई बहुत रास अज्ञात ओ अल्पज्ञात कविलोकनिक काल ओ परिचय निर्धारित कएलन्हि अछि। ई प्रयाग विश्वविद्यालयसँ 1942 इ० मे प्रकाशित भेल अछि।

शुद्ध पुरातत्त्व ओ इतिहास पर सेहो हिनक एक गोट निबन्ध दृष्टिगत अछि : A Brief Note on the Kandaha Inscription of King Narasimha deva 1435 A. D.। ई इलाहाबाद यूनिभर्सिटी स्टडीज, खंड XII मे प्रकाशित अछि।

अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनक जे चौदहम शानदार अधिवेशन दरभंगामे 1948 इ० मे भेल, तकर स्थानीय सचिवक रूपमे ई तत्सम्बन्धी प्रोसीडिङ्स तथा अन्यान्य प्रकाशनक सम्पादन कएलन्हि जे छोट-पैघ 23 खंडमे प्रकाशित भेल अछि।

# 8

# सर गंगानाथ झाक चटिसारमे

पूर्वमे कहि आएल छी जे कोना-कोना म०म० मिश्रक पिता म०म० जयदेवमिश्रसँ म०म० डा० सर गंगानाथ झाकें बाल्यावस्थामे परिचय भेलन्हि आ' कोना दुनूमे पाछाँ गुरु-शिष्य सम्बन्ध एवं पारिवारिक घनिष्ठता स्थापित भए गेल। ई घनिष्ठता म०म० मिश्रक जीवन-धाराक मानू नियामक शक्ति सिद्ध भेल।

म०म० मिश्रकें अपन बाल्यकाल ओ छात्रत्व कालमे सर झासँ विशेष संगतिक अवसर नहि भेलन्हि। एकरा विचित्र संयोग कहबाक चाही। माताक स्वर्गीय भेलापर ई अपन पिताक संग 1902 इ० मे दरभंगा आएल छलाह आ' सम्भवतः ओही वर्ष सर झा दरभंगा छोड़ि म्योर कालेज, प्रयाग चल गेलाह। तकर अगिला वर्ष मिश्र-परिवार वाराणसी आएल। सर झाक संगति म०म० मिश्रकें नियमित रूपें तखन भेलन्हि जखन सर झा 1918 इ०मे गभर्नमेंट संस्कृत कालेजक प्रिन्सिपल भए प्रयागसँ वाराणसी अएलाह। इहो संयोगहिक बात जे सर झाक एहि पद पर अएबासँ दू वर्ष पूर्वहि 1916 इ० मे म०म० मिश्र गभर्नमेंट संस्कृत कालेजसँ नाम कटाए सेन्ट्रल हिन्दू कालेजमे प्रविष्ट भए चुकल छलाह। तें हिनका सर झाक विधिवत् शिष्य होएबाक सौभाग्य नहि प्राप्त भेलन्हि। ई अपन श्रद्धेय गुरु बनओलन्हि म०म० गोपीनाथ कविराजकें। आसन पर बैसि एहि गुरुसँ पढ़ैत हिनक एक विलक्षण फोटोचित्र उपलब्ध अछि, ओहने सन जेहन म०म० जयदेव मिश्रसँ पढ़ैत युवक गंगानाथ झाक अछि। विधिवत् गुरु रहथुन्ह वा नहि रहथुन्ह, जें मिश्र-परिवार आ झा-परिवारमे ठेहुन-छाबा आपकता छल तें वाराणसीमे अपन पिताक संग लागल म०म० मिश्र बहुधा सर झाक ओतए जाइत छल होएताह ओ हुनकासँ अपन अध्ययनक विषयमे दिग्दर्शन प्राप्त करैत छल होएताह। किन्तु विश्व-विद्यालय-परीक्षाक तैआरीमे तथा नियमित रूपें क्लास करबामे लागल रहबाक कारणे सर झासँ पढ़बाक अवसर हिनका नहि भेलन्हि। आ' जहिआ ई एम० ए० पास कएलन्हि ताही वर्ष सर झा कुलपतिक पद पर प्रयाग विश्वविद्यालय चल गेलाह।

सौभाग्यवश एके वर्षक बाद 1923 इ० मे ई ओही विश्वविद्यालयमे संस्कृत विभागमे व्याख्याताक पद पर नियुक्त भेलाह आ तहिनासँ जा धरि सर झा जिबैत रहलाह, म०म० मिश्र सभ काजमे हुनक सहायक रहलाह आ' हुनके चरण-

चिह्न पर चलैत महामहोपाध्याय सदृश उच्चतम पदवी ओ कुलपति-सदृश उच्चतम पद प्राप्त कएलन्हि।

व्याख्याताक पद पर अबितहिं ई अपन डी० लिट्० उपाधिक हेतु शोध-प्रबन्ध लिखब आरम्भ कएलन्हि। विषय एहन छल जाहिमे सर झा डेग-डेग पर सहायता कए सकैत छलथिन्ह, कारण जे ओहि समय धरि सर झा भारतीय दर्शनक अगाध समुद्रकें कोने-कोने थाहि चुकल छलाह। हिनक शोध-प्रबन्ध जखन प्रकाशित भेल तखन ओकर प्राक्कथन उचिते सर झा स्वयं लिखलन्हि आ' ताहिमे हिनका 'प्रतिभावान् विद्वान' होएबाक बड़का प्रमाणपत्र देलथिन्ह। ई जेटा साहित्यिक कार्य करैत छलाह ताहि सभमे सर झाक मार्गदर्शन हिनका सुलभ रहैत छलन्हि, कारण जे हुनक द्वार हिनका हेतु अपन घर जेकाँ सतत खुजल रहैत छलन्हि। सर झाक परिवारमे जे सुविधा,जे स्नेह डा०अमरनाथ झाकें भेटैत छलन्हि ताहिमे सोदर छोट भाए जेकाँ म०म० मिश्रक सेहो बखरा रहैत छल। एकर प्रतिफलमे म०म० मिश्र सर झाक शास्त्रीय ओ लौकिक काजमे अपन समाङ जेकाँ खटैत छलाह। शिष्यक कर्तव्य रूपमे कएल गेल एहि प्रकारक सहायताक हेतु ओहि समयमे कृतज्ञता प्रकाश करब ने गुरुक प्रतिष्ठाक अनुकूल बूझल जाइत छल आ' ने शिष्यक मर्यादाक अनुकूल। लिखबाक काल चाह-पान देनिहारि निरक्षर पत्निओक प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करब ताहि दिन की आइओ उपहासास्पदे होइत अछि। अतः म०म० मिश्र सर झाक काजमे, विशेषतः शास्त्रीय काजमे की-की सहायता कएलन्हि तकर प्रमाण पुस्तकमे सर्वदा कृतज्ञता-प्रकाशन रूपमे नहि भेटत, तथापि एहि सम्बन्धमे जे किछु निश्चित रूपें ज्ञात अछि तकर विवरण नीचाँ दैत छी।

सर झा पार्थसारथिमिश्रक मीमांसाग्रन्थ 'तन्त्ररत्न'क सम्पादन सम्भवतः 1927 वा 28 इ० मे कएने होएताह, कारण जे ई 1930 इ० मे सरस्वती भवन टेक्स्ट सीरीज,वाराणसीसँ प्रकाशित अछि। एकर सम्पादनमे म०म० मिश्र सहायक छलथिन्ह। एहिसँ ई प्रमाणित होइत अछि जे म०म० मिश्र साहित्यिक कार्यमे सर झाक सहायता करब 1927 इ० वा ताहूसँ पूर्वहि आरम्भ कएलन्हि। एही समय म०म० शंकर मिश्रक 'भेदरत्न'क सम्पादनमे सेहो हुनका संग देने रहथिन्ह- सर झाक 'मनुभाष्य'क संस्करण जे बंगाल रॉयल एशियाटिक सोसाइटीसँ प्रकाशित भेल तकर द्वितीय खंडक सम्पादनमे सेहो म०म० मिश्र संग छलथिन्ह।

बूझि पड़ैत अछि जे सर झा जखन वार्धक्य-वश किछु अस्वस्थ रहए लगलाह तखनसँ अर्थात् 1936-37 इ० सँ हुनक जे कोनो कृति प्रकाशित होइत छलन्हि तकर सम्पादन-कार्यक भार म०म० मिश्रहि पर सोलहो आना रहैत छलन्हि। सर झाक जे कतोक ग्रन्थ हुनक स्वर्गारोहणक बाद प्रकाशित भेल ताहि सभक सम्पादन तँ उचिते इएह कएने छथि। एहि क्रममे उल्खनीय अछि : (i) 'छान्दोग्य उपनिषद', सर झा कृत अङरेजी अनुवाद सहित, पूना ओरिएन्टल सीरीज 1942 इ० मे प्रका-

शित; (ii) वाचस्पति मिश्रकृत 'विवादचिन्तामणि';(iii)'मीमांसासूत्र शावर भाष्य' एहिमे म०म० मिश्रशाबरभाष्यविषयसूचीबनओने रहथि; तथा (iv) "मीमांसा' कुसुमांजलि,' जे सर झा ओ म०म० मिश्र दुनू मिलिकें बनओने छथि।

म०म० डा० सर गंगानाथ झा ओ म०म० डा० उमेश मिश्रक जीवनमे बहुत समानता अछि। ई समानता किछु तँ समान मार्गक पथिक होएबाक कारणें अछि मुदा बहुत-किछु असाधारण आ अद्‌भुत सेहो लगैत अछि। म०म० मिश्रक पिता म०म० जयदेव मिश्र बाल्यकालहिसँ सर झाक जीवन-क्रमक अवलोकन करैत रहलाह। सम्भवतः हुनका ई जीवन-क्रम, जाहिमे प्राचीनता ओ आधुनिकताक मणिकांचन योग छल, परम स्पृहणीय बूझि पड़लन्हि, ओ एकरहि आदर्श मानि अपन पुत्रकें हुनके चरण-चिह्न पर चलएबाक संकल्प कएलन्हि। सौभाग्यवश म०म० मिश्रकें बाल्य-कालमे जे चरण-चिह्न देखाओल गेलन्हि ताहि पर ई आजीवन सफलतापूर्वक चलैत रहलाह। दुनूक जीवनमे की-की साम्य अछि से संक्षेपमे देखल जाए। दुनू गन्धवारि डेओढ़ी ओ दरभंगा राजसँ सम्बद्ध रहलाह आ आजीवन दरभंगा महाराजक सम्मानभाजन रहलाह। दूनू स्कूल-कालेजमे आधुनिक रीतिसँ शिक्षा पओलन्हि आ घर पर प्राचीन रीतिसँ पढ़ैत रहलाह। दुनू संस्कृत साहित्य आ' भारतीय दर्शनकें मुख्य विषय बनओलन्हि। दुनू दरभंगा—काशी—प्रयाग एही तीन ठाम जीवन बितओलन्हि। दुनू सदा मैथिल परिधान ओ मैथिल आचारमे रहलाह। दूनू भारतीय दर्शनमे डी०लिट्०पदवी पओलन्हि। दूनू महामहोपाध्यायक सर्वोच्च उपाधिसँ अलंकृत भेलाह। दुनू आरम्भसँ वार्धक्य-प्राप्ति पर्यन्त प्रयाग विश्वविद्यालयमे रहलाह। दुनू कुलपतिक उच्चतम पदकें अलंकृत कएलन्हि। दुनू आजीवन मुख्यतः दर्शन ओ गौणतः अन्यान्य शास्त्रक मनन-चिन्तन एवं लेखनमे लागल रहलाह। दुनू संस्कृत शिक्षाकें, विशेषतः प्राचीन रीतिक शिक्षाकें जागृत करबाक ओ संस्कृत शिक्षामे सुधार अनबाक प्रयास एवं प्रयोग करैत रहलाह। दुनूकें प्राचीन पण्डितलोकनिक प्रति अपार श्रद्धा छलन्हि। दुनू मातृभाषा मैथिलीक अनन्य अनुरागी आ सम्पोषक छलाह। दुनू कट्टर सतातनी छलाह। दुनू प्रयागमे घर बनओलन्हि। सर झा अपन निवासक नाम 'मिथिला' रखलन्हि तँ म०म० मिश्र ओकरे पर्यायवाची 'तीरभुक्ति', आ दुनू भवनक द्वारस्तम्भ-लेख मिथिलाक्षर मे करओलन्हि। दुनूकें अनेक सुयोग्य पुत्ररत्न पएबाक सौभाग्य भेलन्हि। म०म० मिश्रकें छओ पुत्र आ सर झाकें पाँच पुत्र—सभ विद्वान्, सभ उच्च पद पर आसीन। दुनूक पुत्र डा० अमरनाथ झा ओ डा० जयकान्त मिश्र प्रयाग विश्वविद्यालयकें अलंकृत कएलन्हि। सर झाक आत्मकथा पढ़लासँ दुनूमे आओर अनेक साम्य लक्षित होएत।

तें उचिते म०म० डा० सर गंगानाथ झाक स्वर्गवास भेलापर मिथिलाक

पण्डितलोकनि-ओ उद्‌बुद्ध वर्ग म०म० मिश्रकें ओही श्रद्धा एवं आदरसँ देखए लगलाह जेना सर झाकें देखैत छलाह। ततवे नहि, संस्कृत विद्या ओ संस्कृतक विद्वानलोकनिक समस्त आकांक्षाक पूर्तिक आशा हिनकासँ कएल जाए लागल आ सौभाग्यवश ई ओहि आशा-आकांक्षाक पूर्तिमे जीवनक समस्त उत्तरार्ध लगाए देलन्हि। एहि बातक प्रमाण अछि दरभंगामे मिथिला-विद्यापीठक स्थापना, प्राच्य-विद्या सम्मेलनक अधिवेशन तथा अन्तमे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना, जकर कथा अगिला अध्यायमे आओत।

सर झाक पुत्रलोकनि मध्य म० म० मिश्रकें सभसँ अधिक स्नेह डा० अमरनाथ झासँ भेटलन्हि, जे हिनकासँ किछुए दिनक जेठ छलथिन्ह। दुनूक अध्ययन-क्षेत्र एवं आचारमे आकाश-पातालक अन्तर रहितहुँ दुनूमे परस्पर सोदरोपम स्नेह ओ आप्तता सदा वर्तमान रहलन्हि।

# 9

# संस्कृत शिक्षामे नव युगक अवतारणा

भारतमे अङरेजी शासकलोकनि जहिआ शिक्षाक नीति निर्धारित करए लगलाह तहिआ तीव्र विवाद उठल जे एतए पश्चिमीय नव्य ज्ञान-विज्ञानक शिक्षा अङरेजी भाषाक माध्यमसँ आधुनिक रीतिसँ चलाओल जाए, आकि भारतीय विद्याक जे शिक्षा शुद्ध संस्कृत भाषाक माध्यमसँ प्राचीन रीतिएँ परम्परासँ चल आ।बे रहल अछि तकरे विस्तार कएल जाए। एहि विवादमे आधुनिक शिक्षाक पक्षधरलोकनि विजयी भेलाह आ' तीव्र गतिएँ तथा विशाल मात्रामे आधुनिक शिक्षाक प्रसार आरम्भ कएल गेल। परन्तु संगहि इहो निर्णय कएल गेल जे प्राचीन भारतीय शिक्षा-पद्धति सेहो जिआएकें राखल जाए। ततःपर सरकार संस्कृत शिक्षाक रूपरेखा बनएबामे तथा ओकर कार्यान्वयनमे प्रवृत्त भेल।

1911 इ० मे भारत सरकारक शिक्षा-सदस्य बटलर साहेब शिमलामे प्राच्य-विद्लोकनिक एक सम्मेलन बजओने रहथि जाहिमे डा० थीबो, डा० भेनिस, सर रामकृष्ण भंडारकर, हरप्रसाद शास्त्री, डा० वुलनर, म०म० डा० सर गंगानाथ झा आदि महान् प्राच्यविद्याविशारदलोकनि उपस्थित छलाह। एहिमे अनुशंसा कएल गेल जे संस्कृतक प्राचीन परम्परानुसारी पठन-पाठनकें विशेष रूपें संवर्धित कएल जाए। पर्याप्त अनुदानक संग ई निर्णय प्रान्तीय सरकारकें सूचित कएल गेल। तदनुसार विहार सरकार 1913 इ० मे विहार प्रान्तमे संस्कृत शिक्षाक निमित्त तथा पटना विश्वविद्यालयक स्थापनाक निमित्त एक प्रतिनिधि समिति बनओलक जकर अध्यक्ष रहथि रोबर नाथन ओ सदस्यमे डा० थीबो तथा म०म० डा०सर गंगानाथ झा रहथि। ई लोकनि बहुत दिन धरि एकट्ठा भए-भए व्यापक योजना तैआर कएलन्हि। संस्कृत-शिक्षा सम्बन्धी प्रस्ताव मंजूर भेल। सम्भवतः एही क्रममे विहार संस्कृत एसोसिएशनक गठन भेल जे लघु विश्वविद्यालयक ढंग पर तीन काज हाथमे लेलक—संस्कृत पाठशाला सभकें मान्यता देनाइ, अध्यापक एवं छात्रकें वृत्ति देनाइ तथा परीक्षा लेनाइ। एकर फलस्वरूप एक तोड़ संस्कृत पढ़निहारक संख्यामे असाधारण वृद्धि भेल। परन्तु आधुनिक शिक्षाक सुविधा उपलब्ध होइतहिं फेर छात्र-संख्या घटए लागल आ' प्रतिभावान् छात्र तँ आओर दुर्लभ भए गेलाह, कारण जे आधुनिक शिक्षा अर्थकरी होइत छलैक। एहि समस्यापर विचार करबाक हेतु 1938 इ० मे बिहार सरकार संस्कृत शिक्षा

सुधार समितिक गठन कएलक। ओहिमे कोनो वैसकमे ई अनुशंसा कएल गेल जे प्राचीन रीतिक शिक्षाकें आधुनिक रीतिक शिक्षासँ जोड़ि देल जाए जाहिसँ संस्कृत पढ़निहारो सरकारी नोकरीमे लेल जाए सकथि। एहि प्रकारक शिक्षा चलएवाक हेतु दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करवाक प्रश्न पर विचार कएल गेल, परन्तु आर्थिक साधनक अभावमे कार्य स्थगित रहल।

1938 इ० मे जे विश्वविद्यालय-पुनर्गठन-समिति बनल ताहू मे ई अनुशंसा कएल गेल जे दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना होएवाक चाही।

एहि प्रकारें संस्कृत शिक्षाक सुधार हेतु दीर्घ काल धरि खाली विचारे-विचार चलैत रहल। 1943 इ० मे विहार सरकार म०म० उमेश मिश्रकें संस्कृत शिक्षा सुधार समितिक सदस्य बनओलकन्हि। तहिअहिसँ ई एहिदिस साकांक्ष ओ सक्रिय भेलाह। ई देखलन्हि जे संस्कृत सम्बन्धी काज केवल वित्तीय कठिनताक कारणें सरकार नहि कए रहल अछि। म०म० मिश्र उपयुक्त दाताक अन्वेषणमे लगलाह। एही वर्ष वाराणसीमे अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनक बारहम अधिवेशन भेल। एहिमे म०म० मिश्र धर्म ओ दर्शन विभागक अध्यक्ष छलाह। सौभाग्यवश मिथिलेश महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह सेहो एहिमे उपस्थित भेलाह। म०म० मिश्रकें ई बहुत मानैत रहथिन्ह। अनुकूल अवसर पावि म०म० मिश्र हुनका प्राच्य विद्या दिस आकृष्ट करबाक आन्तरिक भावनासँ हुनकासँ निवेदन कएलन्हि जे ओ एकर अगिला अधिवेशन दरभंगामे बजाबथि। महाराजाधिराज स्वीकृति दए देलथिन्ह। परन्तु अग्रिम अधिवेशनक हेतु पूर्वहि नागपुरसँ आएल आमन्त्रण स्वीकार कए लेल गेल छल, तें 1946 मे एकर अधिवेशन नागपुरमे भेल आ' म०म० मिश्र एहूमे धर्म ओ दर्शन विभागक अध्यक्षता कएलन्हि। एहिमे महाराजाधिराज मिथिलेशक आमन्त्रण स्वीकार कएल गेल।

1948 इ० दरभंगाक इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे लिखाएत जाहिमे चौदहम अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन एतए अभूतपूर्व सफलताक संग सम्पन्न भेल। महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह मानू अपन खजाने खोलि देलन्हि। डा० अमरनाथ झा स्वागताध्यक्ष भेलाह। म०म० मिश्र स्थानीय सचिव नियुक्त भेलाह। भारत भरिक दिग्गज विद्वानलोकनि ओ शीर्षस्थ प्राच्यविद्याविशारदलोकनिसँ दरभंगा जगमगाए उठल। एहि अवसर पर म०म० मिश्र कैक दिन धरि भूख, पिआस आ निद्राकें बिसरि अहर्निश काज करैत रहि गेलाह। हिनक ई परिश्रम देखि सभ चकित छल। शतशः सहायकक मंडल रहितहुँ प्रत्येक काजमे लागए जेना ई स्वयं उपस्थित रहथि। सम्मेलनक सफलता वर्णनातीत छल। महाराज आनन्दसँ गद्‌गद भए गेलाह ओ म०म० मिश्रक अद्‌भुत अनुपम कार्यक्षमता ओ कार्यपटुता देखि हिनका पर मुग्ध भए गेलाह। म०म० मिश्रक मनोरथ-पूर्तिक मार्ग प्रशस्त भए गेल।

वस्तुतः महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह स्वयं संस्कृत शिक्षा ओ भारतीय

विद्याक हेतु बहुत दिन पूर्वहिसँ किछु करबाक नेआर कए रहल छलाह। एहि प्रसंग म०म० डा० सर गंगानाथ झासँ तथा डा० हरिचाँद शास्त्रीसँ, जे सेवा-निवृत्तिक बाद कुमार जीवेश्वर सिंहकें पढ़एबाक हेतु बड़े आदरपूर्वक राखल गेल रहथि, तथा राजपण्डित बलदेव मिश्रसँ विचार-विमर्श कएने रहथि। ओ कोनो उपयुक्त संस्थाक रूपरेखा बनएबाक हेतु एक समिति बनओलन्हि जाहिमे डा० हरिचाँद शास्त्री, सर गंगानाथ झा ओ कुमार गंगानन्द सिंह रहथि। समिति रिपोर्ट देलक जे प्राचीन रीतिक पाण्डित्यकें जीवित रखबाक हेतु एक विद्यापीठ स्थापित कएल जाए जाहिमे विशुद्ध प्राचीन रीतिक दिग्गज पण्डितलोकनिकें राखि प्रचुर छात्रवृत्ति दए अगिला पीढ़ीमे हुनके लोकनिक तुल्य पण्डित बनाओल जाथि। विशेष परिस्थितिवश ई योजना कार्यान्वित नहि भेल छल, तखनहि उक्त दुनू विद्वान् स्वर्गीय भए गेलाह। महाराजक हृदयमे एहिसँ जे स्थान रिक्त भेलन्हि तकर पूर्ति म०म० मिश्र कएलन्हि। भारतीय विद्याक प्राचीन परम्पराकें जीवित रखबाक जे कामना तथा वाराणसीक गभर्नमेन्ट संस्कृत कालेजमे पोस्ट आचार्य कक्षा चलाए एतदर्थ जे प्रयोग पूर्वमे म०म० डा० सर गंगानाथ झा कएने छलाह, हुनक चरण-चिह्नपर चलनिहार म०म० उमेश मिश्र तकरा प्रवर्तमान रखबाक हेतु व्याकुल रहथि। अनुकूल अवसर पाबि महाराजसँ निवेदन कएलन्हि। महाराज हिनक निवेदन तुरन्त सहर्ष स्वीकार कए लेलन्हि। निर्णय भेल जे विहार सरकार संस्कृत इन्स्टिच्यूट बनएबाक जे नेआर कएने अछि भूमि ओ भवन दए तकरहि दरभंगामे स्थापित कराओल जाए। सरकार राजी भए गेल आ' एक वर्षक अभ्यन्तर 1949 इ० मे दरभंगा मे महेश-नगर ओ ताहि मध्य मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूटक स्थापना भए गेल। एकर प्रथम निदेशक बनाओल गेलाह म०म० डा० उमेश मिश्र।

ज्ञातव्य जे मिथिला-राज्य महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंहक पूर्वज म० म० महेश ठाकुर अपन विद्याक बलसँ अर्जित कएने छलाह, तें एहि संस्थाक प्रांगणक नाम महेश-नगर राखल गेल। संयोगवश ओहि समयमे मुजफ्फरपुरक एक रईस बाबू महेश सिंह बिहार सरकारक एक प्रभावशाली मन्त्री छलाह आ हुनका तत्कालीन मुख्यमन्त्री डा० श्रीकृष्ण सिंहसँ राजनैतिक स्पर्धा चलैत छलन्हि। श्री कृष्ण सिंह गुटक एक एम० एल० ए० विधान-सभामे प्रश्न कए देलन्हि जे एहि संस्थामे बाबू महेश सिंहक नाम किएक जोड़ल गेल। विधान-सभामे हुनका उत्तर भेटलन्हि जे ई महेश बिहार सरकारक मंत्री नहि, दरभंगा राजक संस्थापक छलाह, तँ विधान-सभा ठहाकासँ मुखरित भए उठल। मिथिलेशकें संस्कृत विद्याक प्रति जे एतेक अनुराग छलन्हि तकर मुख्य कारण इएह छल जे ई हुनक राज्य संस्कृत विद्याक बल पर अर्जित अछि। अस्तु, आब प्रकृत विषय पर आबी।

म०म० मिश्र जे एकर प्रथम निदेशक बनाओल गेलाह तकर एक कारण

आओर छल। 1941 ई० मे म०म० डा० सर गंगानाथ झा स्वर्गीय भेलाह। म० म० मिश्र तुरन्ते हुनक उपयुक्त स्मारक बनएबाक प्रयत्नमे लगलाह। उत्तर प्रदेश मे सर झाक जे प्रतिष्ठा छलन्हि से हिनक प्रयत्नमे बड़ साधक भेल। शीघ्रे गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट स्थापित भेल आ 1943 इ० मे म०म० मिश्र ओकर सचिव नियुक्त भेलाह। हिनक दृढ़ संकल्प, कठोर परिश्रम एवं गहन वैदुष्यक कारणें ई संस्था शीघ्रे देश ओ विदेशमे सुप्रतिष्ठित भए गेल आ एकर जर्नल प्राच्यविद्याक क्षेत्रमे एक नव उपलब्धि मानल जाए लागल। महाराजाधिराज जनैत छलाह जे ई एकटा इन्स्टिच्यूट स्थापित कए अद्भुत सफलताक संग चलाए चुकल छथि। एहन अनुभवी निदेशक आओर के भेटितन्हि ?

महाराजधिराज जें ई संस्था विहार सरकारक हाथमे देलन्हि तें विशुद्ध प्राचीन पद्धतिक विद्यापीठ चलएबाक जे परिकल्पना म०म० डा० सर गंगानाथ झा ओ डा० हरिचाँद शास्त्री बनओने रहिथ से ओहि रूपमे नहि चलि सकल, प्रत्युत एहिमे आधुनिक रीतिक एम० ए०, पी-एच०डी० अध्यापक मुख्य भेलाह आ' गौण रूपें कतिपय प्राचीन विद्यावयोवृद्ध पण्डितलोकनि सेहो राखल गेलाह, जेना महावैयाकरण दीनवन्धु झा, नैयायिकप्रवर शशिनाथ झा, ज्यौतिषी दयानाथ झा आदि। स्नातकोत्तर अध्यापन ओ शोध आरम्भ भेल। प्राचीन पांडुलिपिक संग्रह ओ सम्पादन-प्रकाशन सेहो आरम्भ भेल। एकर पाठ्यक्रम तँ अपन स्वतंत्र रहल, परन्तु एकर डिग्रीकें मान्यता सुलभ करएबाक उद्देश्यसँ ई संस्था परीक्षा-संचालनार्थ विहार विश्वविद्यालयसँ सम्बन्धित कराओल गेल। क्लास प्राचीन परिपाटीक अनुसार भरि वर्ष प्रातःकालहिमे चलए, म०म० मिश्रकें एहि बातक बड़ आग्रह छलन्हि। जा ओ एतए रहलाह ता क्लास प्रातःकाले चलैत रहल। जा धरि अध्यापकलोकनिक यथाविधि व्यवस्था नहि भेल छल ता धरि ओ स्वयं अध्यापन करैत छलाह। अपराह्णमे छात्रलोकनि प्राचीन पण्डितक आवास पर जाए पढ़थि वा शंका-समाधान करथि। प्राचीन पंडित क्लास नहि करैत छलाह, किन्तु ग्रन्थ-लेखन हुनकालोकनिक अनिवार्य कर्तव्य छल। म०म० मिश्र अपने बुझू तँ भरि दिन खटितहिं रहैत छलाह। पूर्वाह्णमे अध्यापन ओ अपराह्णमे आफिसक काज। पुनः सन्ध्याकाल छात्रावासक निरीक्षण, पण्डितलोकनिक खोज-पुछारी ओ हुनकालोकनिसँ शास्त्रीय गप्प।

एहि प्रकारें अथक परिश्रम करैत म०म० मिश्र एहि संस्थाक आरम्भिक कठिनताकें दूर कए चारि वर्ष धरि एकरा सफलतापूर्वक चलओलन्हि आ प्रथमे पदावधि समाप्त भेला पर 1952 इ० मे पुनः अपन पूर्व पद पर प्रयाग विश्व-विद्यालय चल गेलाह।

मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूट ओहि समयमे अनेकानेक निराश-निराश्रय प्रतिभावान् संस्कृत छात्रक हेतु वरदान सिद्ध भेल आ' शुद्ध प्राचीन रीतिक उपाधि-

वाला अनेक शास्त्री एवं आचार्य पास एहि संस्थासँ एम० ए० तथा पी-एच० डी० क डिग्री पावि व्याख्याता, रीडर आ' प्रोफेसर धरि भेलाह आ संस्कृतक डूबैत बेड़ा कें सुन्दर तट भेटि गेलैक। म०म० मिश्रसँ पचीस-तीस वर्ष पूर्व लाहौर विश्व-विद्यालयमे एम० ओ० एल० तथा शास्त्री परीक्षा चलाए जहिना डा० वुलनर संस्कृतक महान् उपकार कएने रहथि तहिना विहारमे एहि संस्थाक द्वारा म०म० मिश्र कएलन्हि।

परन्तु म०म० मिश्रक मनमे संस्कृत शिक्षाक उद्धारक जे कामना छलन्हि तकर पूर्ति एहिसँ आंशिके रूपें भेलन्हि। संस्कृत विश्वविद्यालयक अभिलाषा हुनका लगले रहलन्हि आ' ओ उपयुक्त अवसरक ताकमे लागल रहलाह। पूर्व पद पर प्रत्यावर्तित भेला पर ई एक तोड़ पुनः ग्रन्थलेखन आ तकर प्रकाशनमे लगलाह। 1957 इ० मे 'हिस्ट्री आफ इन्डिअन फिलोसफी' क पहिल खंड प्रकाशित कएलन्हि। एही वर्ष 'ए क्रिटिकल स्टडी आफ भगवद्गीता', 'भारतीय दर्शन', तथा 'मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता' सेहो प्रकाशित भेल। एम्हर संस्कृत विश्व-विद्यालयक स्थापनाक प्रयास सेहो तरहि तर चलैत रहल।

दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक कथा बड़ पुरान अछि। जहिआ म०म० मिश्रक जन्म भेलन्हि तहिअहिसँ एकर चर्चा अछि। वर्तमान शताब्दीक आरम्भसँ पूर्वहि कतोक प्राच्यविद्याप्रेमी विदेशी विद्वान्लोकनि अपन विचार व्यक्त कएने रहथि जे संस्कृत विश्वविद्यालयक हेतु भारतमे तीन स्थान बड़ उपयुक्त होएत—वाराणसी, मिथिला ओ नदिया-शान्तिपुर। तकरा बादसँ कैक बेर ई प्रश्न उठल। 1938 मे संस्कृत शिक्षा सुधार समिति बनाओल गेल। ओ अनुशंसा कएलक जे मिथिलाक मुख्यालय दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना होएबाक चाही। परन्तु आर्थिक कठिनताक कारणें विश्वविद्यालयक प्रस्ताव तँ सरकार अस्वीकृत कए देलक, मुदा ओकरा बदला संस्कृत शिक्षाक रक्षाक हेतु एक इन्स्टिच्यूटक स्थापनाक प्रस्ताव विचाराधीन रहल से कोना साकार भेल तकर कथा उपर आबि चुकल अछि। ओही वर्ष विश्वविद्यालय पुनर्गठन समिति गठित भेल। ओहो उक्त अनुशंसाक समर्थन कएलक। देश स्वतन्त्र भेला पर डा० सुनीति कुमार चटर्जीक अध्यक्षतामे भारत सरकार 1955 इ० मे संस्कृत शिक्षा आयोग गठित कएलक। ओकरो अनुशंसा एही प्रकारक भेल। एहि प्रकारें 1900 सँ लए 1955 धरि संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगामे स्थापित करबाक प्रश्न पर सरकार विचार करैत रहल।

एहि बीच मिथिलाक किछु उद्बुद्ध नागरिक दरभंगामे एक सामान्य शिक्षाक कालेज खोलबाक आवश्यकताक अनुभव कएलन्हि। एक शिष्टमंडल महाराजा-धिराज सर कामेश्वर सिंहसँ आर्थिक साहयताक याचना करए गेल। महाराज हृदय सँ टेकनिकल शिक्षाक आवेशी छलाह ओ प्रचलित शिक्षाकें देशमे निरर्थक शिक्षित

वेरोजगारक संख्या बढ़ओनिहार मानैत छलाह। अन्ततः महाराजहिक निकट सम्बन्धी बाबू चन्द्रधारी सिंहक सहायतासँ कालेज खुजल आ ओकर नाम पड़ल 'चन्द्रधारी मिथिला कालेज'। महाराजकें एहिमे किछु अयश भेलन्हि जकर दुःख हुनका मनमे नुकाएल पड़ल रहल।

पुनः एही बीच स्व० पं० गंगाधर मिश्र, पं० हरिनाथ मिश्र, प्रो० परमाकान्त चौधारी, प्रो० तन्त्रनाथ झा, प्रो० श्री कृष्णमिश्र आदि महानुभावलोकनि मिथिला विश्वविद्यायक स्थापनाक हेतु सक्रिय भेलाह। एहू बेर महाराजसँ सहायता माङल गेल। ओ उत्तर देलथिन्ह जे "साधारण ढंगक विश्वविद्यालय खोलि कोन लाभ होएत? ताहि हेतु आन-आन विश्वविद्यालय अछिए जँ संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना हो तँ हम सहायता देबाक विचार कए सकैत छी।" परन्तु सामान्य विश्वविद्यालयक माङ जोर पकड़ने छल तें ओहि हेतु श्री हरिनाथ मिश्र ओ डा० लक्ष्मण झाक नेतृत्वमे प्रयास चलैत रहल। संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करबाक मनोरथ महाराजक मनमे मुनले रहल।

प्रायः 1960 इ० मे कोनो समय महाराज साहेब अपन पैलेस आफिसर श्री हरिश्चन्द्र मिश्रकें फोन पर कहलथिन्ह जे आनन्द बाग पैलेस जल्दीसँ जल्दी 'टिपटौप कंडिशन' मे आनल जाए। बात की थिकैक से ककरहु बूझल नहि। महाराज साहेबक प्राइभेट सेक्रेटरी पं० गिरीन्द्र मोहन मिश्र पर्यन्त चकित छलाह। ओकर तेसरा दिन आदेश भेल जे दस बजे आनन्द बाग पैलेस आ ओकर उतरबारि फाटक, जे सामान्यतः बन्द रहैत छल, खोलिकें राखल जाए। दस बजे महाराज साहेब बरसातीमे गाड़ी लगओलन्हि कि उत्तर दिससँ पं० जवाहरलाल नेहरू, मुख्य मन्त्री डा० श्री कृष्णसिंह ओ शिक्षामन्त्री कुमार गंगानन्दसिंह पहुँचलाह। महाराज सभकें स्वागत कए भवनमे लए गेलथिन्ह आ घुमिकें सभटा देखओलथिन्ह। पं० नेहरू परिजन-सहित तुरन्त लहेरिआसराए भाषण करए गेलाह। कतोक दिनक बाद ई रहस्य खूजल जे महाराजाधिराज ई राजप्रासाद संस्कृत विश्वविद्यालय हेतु दान करए चाहैत छथि। एकर गतिविधि पूर्वमे तेना तरहि तर चलल जे बादहुमे ई दान कोना कोना भेल से बात विस्तारपूर्वक कमे लोक जनैत अछि। सम्भव अछि, एकर मुख्य प्रेरक म०म० मिश्र, कुमार गंगानन्द सिंह ओ राजपण्डित बलदेव मिश्र होथि। अस्तु, अन्ततः संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना अचानक भए गेल।

30. 3. 1960 कें आनन्द बाग (लक्ष्मीश्वर विलास पैलेस) क मुक्ताकाश प्रांगणमे एक भव्य आयोजनक बीच बिहारक तत्कालीन राज्यपाल (पश्चात् राष्ट्रपति) डा० जाकिर हुसैनक कर-कमलमे महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह बहादुर उक्त राजप्रासाद संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक हेतु समर्पित कएलन्हि। संगहि अपन समृद्ध पुस्तकालय आ संलग्न भूमि सेहो देववाणीक सेवामे

निछाउरि कए देलन्हि। ततःपर सरकार विधिवत् अधिनियम बनाए 'कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय' स्थापित कएलक। सरकार ओ महाराज साहेब दुनूक सहमतिसँ म०म० डा० उमेश मिश्र एकर प्रथम कुलपति बनाओल गेलाह। 26 जनवरी 1961 कें गणतन्त्र दिवसक अवसर पर सोल्लास एहि विश्व-विद्यालयक स्थापना भेल। पचास-पचपन वर्ष पूर्वसँ संचित प्राच्यविद्यानुरागी विद्वानलोकनिक, विशेषतः म०म० मिश्रक मनोरथ एहि तरहें पूर भेल।

म०म० मिश्र आब संस्कृत शिक्षाक उद्धारमे आओर जोर-शोरसँ द्विगुण उत्साहसँ कटिबद्ध भेलाह। सर्वप्रथम परीक्षामे कड़ाइ कएलन्हि। ई काज कतेक कठिन छैक से आब के नहि जनैत अछि। शास्त्री ओ आचार्य परीक्षाक केन्द्र जे यत्र-तत्र छल तकरा समेटि एक स्थानमे विश्वविद्यालय-भवन मात्रमे लए अनलन्हि। परीक्षाक समय अपने डंटाक हाथें आदिसँ अन्त धरि ठाढ़ रहैत छलाह। कोन छात्र वा पंडितक हिम्मति होएतन्हि जे कनेको गड़बड़ करथि। एहिसँ परीक्षोत्तीर्ण छात्रक संख्यामे किछु कमी तँ आएल मुदा सभ मिलाए एकर प्रभाव बहुत नीक पड़ल। जे पण्डित ओ छात्र केवल फाँकीवाजी मे विश्वास करैत छलाह आ ओही सँ अपन गोटी लाल करैत छलाह से सभ मुहे भरें खसलाह। छात्र पढ़ए लागल, अध्यापक पढ़ाबए लगलाह आ' पढ़एबाक हेतु स्वयं पढ़ए लगलाह। समस्त मिथिलामे एकटा वैदुष्यक वातावरण बनल।

मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूट सरकारक प्रत्यक्ष नियन्त्रणमे छल। म०म० मिश्र जाहि उत्साहक संग अपन काजमे आगाँ बढ़ए चाहैत छलाह ताहिमे सरकारी तन्त्रक उदासीनता वा अक्षमता हिनक मार्गमे गतिरोध करैत छल। एहि स्थितिसँ ई कखनहु-कखनहु दुखी सेहो होइत छलाह। परन्तु विश्वविद्यालयमे अएला पर हिनका ओहि प्रकारक कठिनता नहि भेलन्हि। शिक्षामन्त्री कुमार गंगानन्द सिंह रहथि। ओ विद्याक हेतु विख्यात बनैली राजक राजकुमार छलाह ओ चिरकालसँ दरभंगाक महाराज साहेबक प्राइभेट सेक्रेटरी रहि चुकल छलाह। हुनका मैथिली ओ संस्कृत साहित्यमे जहिना अबाध प्रवेश छलन्हि तहिना अगाध अनुराग। अतः म०म० मिश्रकें बिहार सरकारसँ अनुदान प्राप्त करबामे कठिनता नहि होइत छलन्हि। कठिनता ओएह छलन्हि जे कोनहु नव संस्थाकें आरम्भिक कालमे होइत छैक। एहि कठिनताकें ई सफलतापूर्वक पार करैत गेलाह आ संस्कृत विश्व-विद्यालयक नेओ खूब मजबूत कए पड़ल।

हिनका जँ कतहु अपना जीवनमे टक्कर भेलन्हि तँ एहि विद्यालयक सम्बन्धमे एक साधारण व्यक्तिसँ। नामक उल्लेख करब अनुचित होएत। ओ महानुभाव संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनासँ पूर्व बिहार सरकारक सेवामे सहायक शिक्षा-निदेशक (संस्कृत) क पद पर छलाह ओ बिहार संस्कृत समितिक पदेन सचिव छलाह। बिहार राज्यक सभ स्तरक समस्त संस्कृत शिक्षण-संस्था एही समितिक

अधीन छल आ वस्तुतः ओहि अधिकारीक हाथमे छल, कारण जे 'समिति' क अस्तित्व केवल कागज पर छल। विश्वविद्यालयक स्थापनाक बाद ई सर्वथा उचित छल जे राज्यक सभ स्वीकृत विद्यालय ओ महाविद्यालय विश्वविद्यालयक नियंत्रण मे आवए। से तँ आबि गेल, परन्तु अनुदान देबाक अधिकार विश्वविद्यालयकें समर्पित करबामे ओ बहुत दिन धरि आनाकानी करैत रहलाह। ओ किछु पंडित कें अपना पक्षमे मिलाए चेष्टा करए लगलाह जे अनुदान बँटबाक अधिकार हुनका हाथमे पूर्ववत् रहि जाए। ओहि पंडित-लोकनिक भक्ति उक्त अफसर-दिस देखि म०म० मिश्र एक अन्तरंग पंडितकें मुहहि पर पूछि देलथिन्ह—'अहाँ सहायक निदेशकक आगाँ-पाछाँ किएक करैत रहैत छी?' बेचारे पण्डित साफ-साफ कहि देलथिन्ह—'श्रीमन्, पाइ तँ ओ दैत छथि तखन हुनक आगाँ-पाछाँ कोना नहि करिऔन्ह। अपने पाइ देबाक अधिकार अपना हाथमे कए लेल जाओ तखन सभ पण्डित स्वतः अपनेक अनुगामी भए जएताह।' म०म० मिश्रकें हँसी लागि गेलन्हि। ओहि शिष्योपम पण्डितक पीठ ठोकैत कहलथिन्ह—'वाह, अहाँ तँ हमर गुरु भए गेलहुँ। आइ हमर आँखि खोलि देल।' आ' तकरा बाद म०म० मिश्र अपन समस्त शक्ति लगाए सरकारी अनुदान बँटबाक अधिकार प्राप्त कए लेलन्हि। म०म०मिश्र मे अप्रियो उचित कथा सुनबाक धैर्य छलन्हि तकर ई प्रत्यक्ष प्रमाण अछि। तहिआ सँ उक्त पण्डित सदा म०म० मिश्रक अनन्य भक्त रहलाह। एहन-एहन कतेक घटना अछि, जकर वर्णन एतए फाजिल बुझाइछ।

एहि तरहें ई कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयकें सुसंघटित एवं सुदृढ़ बनाए 1964 इ० क फरबरी मासमे पदावधि समाप्त भेला पर कुलपतिक पदसँ मुक्त भेलाह। दोसर तोड़ पुनः एहि पद पर टिकल रहबाक कोनो टा प्रयास नहि कएलन्हि।

पूर्वक उदाहरण सभसँ लक्षित होएत जे ई संस्था बनबए जनैत छलाह। संस्था कें बनाए ओकरा अपन अर्जित सम्पत्ति बूझि आजीवन अपन मुट्ठीमे रखने रहबाक जे दूषित प्रवृत्ति चलल अछि से हिनकामे एक रती नहि छल। ई अनेक संस्था बनओलन्हि, जेना गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट, मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूट, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति आदि, मुदा कोनहु संस्थाक हेतु चन्दा कहिओ नहि कएलन्हि। की तँ संस्थाक योजना बनाए सोझे सरकारकें सुपुर्द कए देलन्हि वा कोनो पैघ दातासँ उदार दान देआए संस्थाकें सरकारसँ स्वीकृत करओलन्हि।

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय जा धरि रहत ता धरि वैदुष्य-पूर्ण वातावरण, स्वच्छ प्रशासन, अदम्य उत्साहपूर्ण कर्मठता ओ संस्कृत भाषा एवं साहित्यक प्रति असीम अनुरागक कारण सदा हिनक स्मरण होइत रहत।

# 10

# जीवनक शीतल सन्ध्यामे

जहिआ म०म० मिश्र कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति पदसँ निवृत्त भेलाह तहिआ हिनक अवस्था लगभग सत्तरि वर्षक भए गेल छलन्हि। आब हिनक आत्मा ओ देह दुनू विश्राम करए चाहैत छल। किन्तु कर्मठ जीवन-बालाक विश्रामक अर्थ निष्क्रिय भए बैसल रहब नहि थिक। जीवनक शीतल सन्ध्या मे धर्म ओ विद्यामे रमल रहब हिनका-सन व्यक्तिक हेतु सभसँ उत्तम विश्राम थिक। ई सभ प्रकारक बन्धनसँ मुक्त भए शान्त चित्तसँ पुनः अपन गौरवग्रन्थ हिस्ट्री आफ इन्डिअन फिलासफीक द्वितीय भागक प्रकाशनमे लगलाह जे दू वर्षक बाद 1966 मे छपिकें तैआर भेल। पुनः एकर तृतीय खंडक तैआरीमे लागि गेलाह आ एकर लेखन समाप्त कए प्रेस कापी तैआर करओलन्हि। अपन जीवनक अन्तिम दिन धरि एहि प्रेस कापीकें शुद्ध करैत रहलाह। ई तँ भेल विद्यामे रमि विश्राम करब।

धर्म ओ सदाचार हिनक जीवनक मूल मन्त्र छल। हिनक पिताकें जे आशंका वा धारणा छलन्हि जे अङरेजी पढ़ने धर्म ओ सदाचारसँ च्युत भए जाइत अछि तकर ई ज्वलन्त अपवाद भेलाह। ठीक ओहिना जेना म०म० डा० सर गंगानाथ झा भेल छलाह। सहस्र गायत्रीजप, पंचदेवताक पूजा, त्रिकाल-सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकृत्य बाल्यकालहिमे जे आरम्भ कएलन्हि से निरपवाद रूपें जीवनक अन्त धरि निमाहैत रहलाह। साठि वर्षक अवस्था भेला पर एहि नित्य-कर्म ओ काम्य-कर्ममे स्वभावतः किछु वृद्धि भेल। साठि वर्षक भेला पर केवल गंगाजल पिअए लगलाह। एहि हेतु प्रवासमे वा यात्रामे बहुत कष्ट उठाबए पड़न्हि; तथापि एहि व्रतक पालन जीवनक अन्त धरि कए गेलाह। मोटर गाड़ी किनैत अछि लोक विलासक हेतु। इहो गाड़ी किनलन्हि, किन्तु विलासक हेतु नहि, नित्य त्रिवेणीमे स्नान करबाक हेतु।

पक्षीकें साँझ पड़ैत अपन खोता मन पड़ैत छैक। तहिना जीवनक सन्ध्यामे हिनक चित्तकें अपन गाम—अपन बाल्यकालक क्रीड़ास्थल—सहसा आकृष्ट कएलक। ओना ई गामकें कहिओ बिसरलन्हि नहि। सालमे एको बेर आबि गामक दर्शन अवश्य कए जाथि। गाम छलन्हि रेलवे स्टेशनसँ चारि कोस दूर, तथापि एतबा दूर चलबाक कष्टकें ई कष्ट नहि बूझथि। 1926 इ० मे हिनक पिता स्वर्गवासी

भेलाह। तकरा बाद तीन भाएमे सम्पत्तिक ओ घर-आङनक बाँट-बखरा भेल। 1934 इ० मे ई पहिने अपना गाममे मकान बनओलन्हि, तकर पाँच वर्षक बाद प्रयाग मे बनओलन्हि। गाममे पिता म०म० जयदेव मिश्र पोखरि कोड़ओने छलथिन्ह आ, चातुश्चरण विधिसँ ओकर यज्ञ करओने रहथिन्ह जाहिमे पुरोहित रहथि म०म० परमेश्वर झा। म०म० डा० सर गंगानाथ झा तथा अन्यान्य बहुत रास पण्डित आएल रहथि। म०म० मिश्रकें रहि-रहिकें ओ दृश्य मन पड़न्हि। 1964 मे कुलपति-पदसँ मुक्त होइतहि गजहरा जाए पिते जेकाँ एकटा पोखरि कोड़ओलन्हि। तकर दुइ वर्षक बाद 1966 इ० मे अपन गाममे अपन कोड़ाओल पोखरिक भीड़ पर शिव-मन्दिर बनबओलन्हि। ओहिमे अपन स्वर्गीय पिता ओ माताक स्मारक रूपमे दू गोट शिवलिंगक स्थापना कएलन्हि—एक पिताक नाम पर जयदेवेश्वर आ दोसर माताक नाम पर सूगेश्वर। जीवनक अन्तिम वर्ष 1967 इ० मे 16 मइकें अपन गाममे अठारहो पुराण कीनि जमा कएलन्हि आ अष्टादश-पुराण-पाठ स्वरूप महायज्ञ कएलन्हि। ई हिनक जीवनक अन्तिम कीर्ति सिद्ध भेल, कारण जे ओतहि एहि महायज्ञक कालहिमे ई पक्षाघातसँ पीड़ित भेलाह। ओतए सँ प्रयाग अएलाह। तकर लगभग चारि मासक बाद आठ सितम्बर 1967 इ० कें लगभग बहत्तरि वर्षक अवस्थामे विना कोनो पीड़ाक सहसा स्वर्गवासी भए गेलाह। मैथिलीमे लोकोक्ति अछि—करनी देखबह मरनी बेरि अर्थात् केवल पुण्यवान् पुरुष सुखपूर्वक प्राणत्याग करैत अछि। म०म० मिश्र एही जन्म जकाँ पूर्व जन्महुमे पुण्यात्मा छलाह।

जीवनमे कोनो लालसा शेष नहि रहलन्हि। छओ गोट एकसँ एक योग्यपुत्र, सभ प्रतिष्ठित पद पर आसीन। अपन जीवनमे सदा स्वस्थ रहलाह ओ प्रतिष्ठा पबैत गेलाह। एहिसँ बेसी आओर की लालसा भए सकैत छैक। हँ, हुनक मातृभाषा मैथिली ओ हुनक आराध्य विद्या हुनक लालसाक अनुरूप प्रगति नहि कए सकल एकर क्लेश हुनक परलोकस्थ आत्मामे रहि गेल होएतन्हि। एहि क्लेशक निवारण करब हुनक उत्तराधिकारीलोकनिक कर्तव्य थिकन्हि।

# 11

# व्यक्तिगत वैलक्षण्य

म०म० मिश्रक पूर्ववर्णित उज्ज्वल जीवन-चरित पढ़ला पर सहजहि जिज्ञासा होइत अछि जे हिनकामे एहन की-की गुग छलन्हि जाहिसँ ई जीवनमे सफलताक उच्चतम शिखर धरि पहुँचि सकलाह। हिनक व्यक्तिगत गुणधर्मक साकल्येन वर्णन एतए सम्भव नहि, अतः कतोक विलक्षण ओ विशेष आकर्षक गुण मात्रक वर्णन उदाहरण रूपमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

समयकें मूल्यवान् बूझव हिनक सभसँ पैघ गुण छल। शास्त्रीय गायक जेना ताल पर चलैत अछि, तहिना ई कालक ताल पर, घड़ीक सुइ पर चलैत छलाह। अमरकोशमे तालक विलक्षण परिभाषा देल गेल अछि—तालः काल-क्रिया-मानम् अर्थात् काल ओ क्रियाक मात्रात्मक सम्बन्ध ताल थिक। जेना संगीतमे एको मात्राक उपेक्षा नहि कएल जाइत अछि तहिना म०म० मिश्र अपन दिनचर्यामे एको क्षणक उपेक्षा नहि करैत छलाह। हिनक दिनचर्या एकदम वान्हल रहैत छल। प्रायः प्रत्येक विशिष्ट पुरुष किशोरावस्थहिमे अपन दैनिक चर्या वान्हि लैत छथि आ जीवनक अन्त धरि कोनो कष्ट वा कृत्रिम आयासक विनहि सहज भावें ओकर पालन दृढ़तापूर्वक करैत रहि जाइत छथि। एहि विषयमे ढिल्ली देनिहार व्यक्ति अपना जीवनमे कहिओ विशेष काज नहि कए सकैत छथि। दैनिक चर्यामे दू बात विशेष महत्त्वक होइत अछि, पहिल अल्पसँ अल्प निद्राकाल ओ अधिकसँ अधिक कर्तव्य-काल, आ दोसर छोटो-छोट दैनिक कृत्यमे समयनिष्ठता। म०म० मिश्रकें बाल्यावस्थाहिसँ अपन दिनचर्या पर अटल रहबाक जे अभ्यास लगाओल गेलन्हि से हिनक जीवनक अन्त धरि यथासम्भव रूपमे चलैत रहलन्हि।

हिनक दिनचर्या 1944 इ० क कोनो एक दिनक आधार पर देल जाइत अछि। ई साढ़े पाँच बजैत भोरमे उठथि। प्रातःस्मरण करथि। भोरहिमे त्रिवेणी मे जाए वा घरहिमे स्नान करथि। ई सभ सात बजैत धरि सम्पन्न होइन्ह। सात सँ आठ धरि पूजा, पाठ ओ जप करथि। ततःपर जलपान कए ग्रन्थक अवलोकन मे लागि जाथि। एहीमे अध्यापनार्थ तैआरी सेहो नित्य करथि। एगारह बजेसँ दू बजे धरि विश्वविद्यालयमे पढ़ाबथि। तखन डेरा पर आबि भोजन करथि। भोजनोत्तर तीन बजैत धरि कनेक आँखि मूनि विश्राम करथि। पुनः तीन बजैतसँ अस्त धरि स्वाध्याय वा लेखन-कार्य करथि। साढ़े पाँच बजैत गंगानाथ झा

रिसर्च इन्स्टिच्यूट जाथि, आ सात वजैत सन्ध्या धरि ओतए काज करथि। ओतएसँ घुरि डेरा आवथि। सायंसन्ध्या करथि आ तुरन्त अपन स्वाध्याय-कक्ष मे वैसि अध्ययन वा लेखनमे लीन भए जाथि। एही बीचमे जे-केओ भेंट-घाँट करए आवथि तनिकासँ गप-सप करथि। ततःपर ठीक नओ वजैत रातिमे परिवारक सकल पुरुषलोकनिक संग एक पंक्तिमे वैसि भोजन करथि। रात्रि-भोजनक वाद दस बजैत-वजैत निद्रित भए जाथि।

हिनक ई दैनिक चर्या ओही दिनसँ आरम्भ भेल जहिआ ई 1923 इ० मे प्रयाग विश्वविद्यालयमे अध्यापक भेलाह। भेद एतवे जे जा धरि म०म० डा० सर गंगानाथ झा जीवित रहलाह ता दिनान्तमे प्रायः प्रत्येक दिन हुनका ओतए जाथि आ हुनका संग काज करथि। ई क्रम लगभग जीवन भरि चलैत रहलन्हि। मुदा जखन 1949 सँ 1952 धरि मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूटमे रहलाह तखन एहिमे किछु अन्तर भेल। आठ वजेक वदला प्रातः साते वजैत अपन नित्यकर्म सम्पन्न कए लेथि। सात वजैतसँ एगारह वजैत धरि अध्यापन वा तकर पर्यवेक्षण करथि। एगारह बजैतसँ दू वजैत धरि आफिसक काज करथि। दू बजैत भोजन करथि। चारि वजैत धरि विश्राम करथि। चारिसँ पाँच धरि पुनः एक घंटा आफिसक काज देखथि। साँझ पड़ला पर सायंसन्ध्या करथि। तकरा वाद सात बजैत धरि गप-सप करथि। सात वजैत छात्रावासक निरीक्षण करथि, प्राचीन पण्डितलोकनिक खोज-पुछारी करथिन्ह, आ' हुनका सभसँ किछु शास्त्रीय ओ किछु लौकिक गप सेहो करथि। दस-पन्द्रह मिनटमे ई सभ सम्पन्न कए साढ़े सात बजैतसँ अपन स्वाध्यायमे लागि जाथि। नओ बजैत भोजन कए यथाभ्यास दस बजैत धरि निद्रित भए जाथि। 1961 सँ तीन वर्ष धरि जे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे कुलपतिक पद पर रहलाह, ताहू अवधिमे हिनक दिन-चर्या पूर्वोक्तानुसार चलैत रहल; अन्तर एतबे जे ओहिमे प्रातःकालक समय अध्यापनक बदला विश्वविद्यालयसम्बन्धी अन्यान्य कार्य देखैत छलाह। एहिसँ स्पष्ट अछि जे म०म० मिश्र अपन जीवनक एक-एक क्षणक मूल्य बुझलन्हि आ' तकर सदुपयोग कएलन्हि। हिनक दिनचर्याक अवलोकनसँ गीताक एक श्लोक स्मरण भए अवैत अछि :

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

हिनक प्रिय परिधान छल धोती, शेरवानी, तौनी आ मैथिल पाग। कहिओ-कहिओ कारी गोल टोपी सेहो पहिरैत छलाह। विश्वविद्यालयमे विशेष समारोहक अवसर पर ई कोट, पैंट, टाइ, सेहो पहिरैत छलाह। एहिसँ ई सिद्ध होइत अछि जे ई जतेक कट्टर आन विषयमे छलाह ततेक परिधानक विषयमे नहि।

एहूमे हिनक आदर्श सर गंगानाथ झा छलथिन्ह। भोजन अति साधारण किन्तु पूर्ण पोषक करैत छलाह। कोनो प्रकारक मादक द्रव्य कहिओ नहि छूलन्हि, चाह-काफी, पान-जरदा सेहो सभ नहि। भोजन केवल तीन वेर करथि। एहिमे वड़ निष्ठा रखैत छलाह। खाद्याखाद्य ओ स्पर्शदोषक विचार रखैत छलाह। बाट-घाटमे वा परदेशमे जतए मनःपूत भोजन नहि भेटन्हि ततए फलाहारे करथि वा निराहारे रहि जाथि। साठि वर्षक भेलापर सामान्य जल त्यागि केवल गंगाजल पीबाक व्रत लेलन्हि आ वहुत खर्च उठवैत तकर आजीवन पालन कएलन्हि।

आव हम हिनक जीवनक किछु एहन घटनाक वर्णन करव जाहिमे हिनक नाना प्रकारक वैयक्तिक गुण स्वतः स्पष्ट ओ प्रमाणित होइत अछि।

जखन संस्कृत विद्यालय सभकें अनुदान देवाक अधिकार शिक्षा-विभागसँ विश्वविद्यालयक हाथमे आवए लागल तखन अध्यापकलोकनिकें दू मास धरि वेतन नहि भेटि सकलन्हि। एक पंडित एकटा पोस्टकार्ड लिखलथिन्ह जे एहि आर्थिक संकटक समय परीक्षा-शुल्कक टाका जँ शीघ्र दए देल जाए तँ वड़ उपकार होएत। हुनका ओ टाका तार मनिआडरसँ तुरन्त पठा देलथिन्ह। एहिना मिथिला-संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूटक एक प्राचीन पण्डित महावैयाकरण दीनवन्धु झा इन्स्टि-च्यूटक सेवा करैत स्वर्गीय भए गेलाह। समाचार सुनितहि म०म० मिश्र अन्तिम दिन धरिक वेतनादि सकल प्राप्य राशि खजानासँ निकालि अपन चपरासी द्वारा अविलम्व हुनका घर पर पठवाए देलथिन्ह। एहि दुइ छोट-छोट उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे ई आनक व्यग्रताकें अपन व्यग्रता जकाँ बूझैत छलाह, कार्यालय एवं किरानी-वर्ग पर हिनका पूर्ण नियन्त्रण छलन्हि आ हृदयमे अपार दया छलन्हि।

सभसँ रोचक अछि हिनक धार्मिक कट्टरताक एक घटना। नैष्ठिक मैथिल ब्राह्मणलोकनि अंगा वा कोनो सीअल वस्त्र पहिरने खाएव निषिद्ध मानैत छथि। केहनो दाँत कटकटावएवाला जाड़ रहओ एहन नैष्ठिक व्यक्ति आइओ गोट-गोट कए अंगा खोलि हाथ-पाएर धोए भोजन करैत छथि। आव एहन लोकक संख्या नाममात्रे रहि गेल अछि। मुदा जाहि दिनक ई घटना थिक ताहि दिन अंगा पहिरने खएनिहार लोक बड़ थोड़ छलाह। म० म० मिश्रक सासुर पिलखवाड़मे कोनो उपनयन वा विवाह रहए। म० म० मिश्र मुख्य प्रबन्धकर्त्ता रहथि। बीझो भेल। नेआतहारीलोकनि पाएर धोए-धोए अपन-अपन पात पर वैसलाह। आब परसनाइ आरम्भ होएत कि म० म० मिश्र पाँतीमे घुमैत पहुँचलाह। देखलन्हि जे कतोक नव-युवक अंगा पहिरनहि पाँतीमे वैसल छथि। हिनका रहल नहि गेलन्हि। ई घोषणा कएलन्हि, जे अंगा पहिरने पाँतीमे बैसल रहताह तनिका पात मे भोजन नहि परसल जाएत। सुनैत देरी खलवली मचि गेल। किछु गोटए तँ झट दए उठि अंगा बहार कए लेलन्हि किन्तु किछु युवक अड़ि गेलाह। नहि परसल

जाएत तँ नहि खाएब से मंजूर, मुदा एना अपमान सहि अंगा नहि खोलब। आनो-आनो व्यक्ति एहि अपमानसँ उत्तेजित भए उठलाह। विचित्र स्थिति भए गेल। अन्तमे हिनक सासु ओ पत्नीकेँ हस्तक्षेप करए पड़लन्हि। ओ म० म० मिश्रकेँ आङन बजाए कहए लगलथिन्ह, "ई कोन लीला करैत छी? अपना जे नियम निष्ठा अछि, तकर पालन करू। आनकेँ जँ एहि नियममे निष्ठा नहि छैक तँ ओकरा अहाँ बलजोरी नैष्ठिक बनएबैक से होएत?"

म० म० मिश्र शान्त भए सुनलन्हि आ किछु गम्भीर भए उत्तर देलथिन्ह, "परोछमे जे करैत जाइत छथि से करथु। हमरा आँखिक समक्ष एना उच्छृंखलता करताह से हमरा कोना सह्य होएत!"

हिनक पत्नी बड़ व्यवहारचतुर रहथिन्ह, तुरन्त प्रत्युत्तर देलथिन्ह "से अहाँ ठीक कहैत छी। एकर उपाय ई छैक जे किछु काल अहीं कात चल जाउ, तखन अहाँक परोछमे जे होएतैक से होअए दिअौक।'

म० म० मिश्र अवाक् भए गेलाह। पत्नी जे कहलथिन्ह से छोड़ि आओर कोनो उपाय नहि छलन्हि। सोझे ओतएसँ कात चल गेलाह। नेओतहारीलोकनिक क्रोध शान्त भेल आ सभ डटिकेँ भोज खएलन्हि आ' एहि संगहि मैथिल समाजक एहि नियमहुकेँ खाए गेलाह जे भोजन सीअल वस्त्र पहिरिकेँ नहि करी।

एहन-एहन अनेक घटना भेलहु पर मैथिल ब्राह्मणमे ई नियम एखनहु धरि निर्मूल नहि भेल अछि; बहुतो परिवारमे एकर पालन आइ धरि भए रहल अछि। मैथिली साहित्यक दू महान् लेखक एखनहु एकर उदाहरण छथि, एक थिकाह उक्त म० म० मिश्रक जेठ पुत्र डा० जयकान्त मिश्र ओ दोसर श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'। आओर के-के साहित्यकार एहि नियमक अनुगामी छथि से हमरा ज्ञात नहि अछि।

ई घटना एहि बातक सूचक अछि जे म० म० मिश्र कतेक प्रौढ़, कतेक परम्परा-भक्त छलाह आ' उचित कथा पर कोना सहसा झुकि जाइत छलाह।

एहने सन एक आओर घटना अछि। कतहु कन्यादान छलैक। कन्यापक्षक लोकमे म० म० मिश्र उपस्थित छलाह। वर पहुँचलाह, हुनका परिछि कए महिलालोकनि आङन लए गेलथिन्ह। वरिआतीलोकनि द्वार पर पहुँचलाह। म० म० मिश्र देखलन्हि, कतोक बरिआतीक माथ पर पाग नहि छन्हि। एहन अवसर पर पाग पहिरब मैथिलक आचारमे आवश्यक। धर्मक व्यापक परिभाषामे 'वेद' ओ 'स्मृति' क बाद 'आचार' सेहो प्रमाण मानल गेल अछि, यदि ओ गर्हित नहि हो। पाग पहिरब गर्हित किएक होएत। सभ जाति ओ सभ देशमे कोनो ने कोनो रूपक शिरोवस्त्र प्रचलित छल। तेँ एहन अवसर पर पाग पहिरब म० म० मिश्र आचारमूलक धर्म बूझैत छलाह। एहि 'आचारप्रभवो धर्मः' वाक्यक बरोबरि उल्लेख करैत रहथि। अतः घोषणा कए देलन्हि जे जनिका माथ पर पाग नहि रहतन्हि तनिक पाएर नहि धोआओल जाएत। फेर ओहिना बम फूटल।

बरिआतीलोकनि एकरा अपमान बूझि घुरवा पर उद्यत भेलाह । कन्याक पिता पाएर पकड़ि-पकड़ि हुनकासभकें रोकलन्हि । तुरन्त साइकिल पर एक आदमी बजार पठाओल गेल । पाग किनिकें अनलक । बरिआतीक प्रत्येक व्यक्ति पाग पहिरलन्हि, तखन हुनकालोकनिक पाएर धोआओल गेल । एहि घटनामे म० म० मिश्र जितलाह, बेचारे बरिआतिएलोकनि कनेक लज्जित भेलाह ।

एहिना एक आओर घटना अछि जाहिमे म०म० मिश्र परम्पराक रक्षाक हेतु अटल डटल रहि गेलाह । ई वाराणसीमे पढ़लन्हि । हिनक पिता म०म० जयदेव मिश्र सेहो वाराणसीमे दरभंगा पाठशालामे अध्यापक रहथि । प्राचीन भारतमे वेदाध्ययन केवल प्रातःकालमे होइत छल । धर्मशास्त्रमे एहने विधान अछि । प्रातः कालमे पढ़एबाक परम्परा काशीक पण्डितलोकनि काएम रखलन्हि । म०म० मिश्र एहि 'आचार' कें अपना आँखिसँ देखने छलाह । ई जखन मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूटक निदेशक भेलाह तखन कठोर जाड़क मास रहए (जनवरी), तथापि ई नियम बनओलन्हि जे कक्षा प्रातःकाल सात बजैतसँ लागत । कतोक नवनियुक्त अध्यापक प्रातः विलम्बसँ उठबाक अभ्यासी रहथि, कतोक छात्रो एही प्रकारक रहथि । ई तँ अभ्यासक बात छल । अभ्यास बदलि लेताह । मुदा जाड़ ? एकर कोन समाधान ? बहुत विद्यार्थी गरीब रहथि । गरीबे संस्कृत पढ़ैत छल । हुनका पर्याप्त वस्त्र नहि रहन्हि । जाड़सँ देह कपबैत आ दाँत कटकटबैत क्लास करब आरम्भ कएलन्हि । दू-चारि दिनक बाद छात्र एवं अध्यापक सभ मिलि एक स्वरसँ निवेदन कएलन्हि जे कक्षा-काल बदलल जाए । म०म० मिश्र टससँ मस नहि भेलाह । हिनक कहब छलन्हि, विद्याभ्यास एक धार्मिक कृत्य थिक, जे प्रातःकाले विहित अछि; एतबो कष्ट जे नहि सहए चाहथि से संस्कृत-सन कठिन शास्त्रक विद्वान कोना भए सकताह । बेचारे गरीब विद्यार्थी वस्त्रक कठिनताःप्रकाश कएलन्हि । तँ म०म० हुनका अपन देहक ओढ़ना देबाक हेतु प्रस्तुत भए गेलाह; छात्र लज्जावंश ओ लेब स्वीकार नहि कएलक । कनिको कोनो तर्क नहि चललन्हि । सभ हारि गेलाह, म०म० मिश्र एकसरे विजयी भेलाह । जा धरि ई रहलाह, प्रातःकालिक पाठ-प्रणाली चलैत रहल; मुदा जाही दिन ई निदेशकक पदसँ मुक्त भेलाह ताही दिन छात्र ओ अध्यापकलोकनि सेहो एहि प्रातःकालिक पठन-पाठनक कष्टकर बन्धनसँ सर्वदाक हेतु मुक्त भए गेलाह ।

एहने दोसर प्रश्न उठल रविवासरीय छुट्टीक प्रसंग । कतोक अध्यापक ओ छात्रलोकनि म०म० मिश्रसँ निवेदन कएलन्हि जे इन्स्टिच्यूट जे पड़ीब ओ अष्टमी तिथिकें बन्द राखल जाइत अछि से रविकें बन्द होअए, कारण जे अन्यत्र काज कएनिहार वा पढ़निहार बन्धुवर्ग तथा बेटा-बेटी पर्यन्त रविए दिन छुट्टी पबैत अछि तें रविकें छुट्टी रहने सभसँ भरि पोख मिलन होएत । परन्तु एहिमे किछ पुरान

विचारक छात्र एवं अध्यापक सेहो सहमत नहि छलाह, कारण जे हुनका सभकें वाल्मीकिरामायणक सुन्दरकाण्डक ओ श्लोक कण्ठस्थे छलन्हि प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतांगता; आ' ई पक्का विश्वास छलन्हि जे जँ पड़ीवकें क्लास होइक आ पढ़त्र तँ जहिना रामक विरहमे सीता कृश भए गेलीह तहिना विद्या कृश भए जइतीह। तें रवि दिन छुट्टी रखवाक निवेदन सुविधापूर्वक खण्डित भए गेल। प्रसंगवश इहो उल्लेखनीय अछि जे रविकें वन्द राखल जाए वा पड़ीव-अष्टमीकें ई विवाद भारतक वहुत संस्कृत-शिक्षणसंस्थामे आइ धरि चलि रहल अछि। उदाहरणार्थ, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर व्याकरण-विभाग पड़ीव अष्टमीकें वन्द रहैत अछि तँ साहित्य विभाग तथा कार्यालय रविकें। म०म० मिश्र गप्पक प्रसंग एक दिन हमरा कहने रहथि जे इसाइ धर्ममे ई विधान छैक जे छओ दिन काज करू आ' केवल एक दिन पूजा करू। एही पूजाक हेतु रविकें छुट्टी देल जाइत छैक। हमरालोकनिक वैदिक ओ स्मार्त धर्ममे नित्य पूजाक विधान अछि, नित्य काज करवाक विधान अछि। पड़ीव ओ अष्टमी जें अनध्याय थिक तें क्लास वन्द रहैत अछि, विश्राम करवाक वा छुट्टी मनएवाक हेतु नहि। वास्तवमे म०म० मिश्र कहिओ थकलाह नहि, तें छओ दिनक थाकनि उतारव साप्ताहिक छुट्टीक प्रयोजन थिकैक ई बात हुनका कहिओ वोधगम्य नहि भेलन्हि। देखा चाही जे पड़ीव-अष्टमी वाला छुट्टी आओर कतेक दिन संस्कृत जगतमे चलैत अछि।

म०म० मिश्र पण्डितलोकनिक वड़ आदर-सत्कार करथि। तथापि वहुत तथा-कथित पण्डित हिनका समक्ष अएवामे वड़ धखाइत छलाह, कारण जे कोनो शास्त्रीय बात विना कोनो प्रसंगहु पुछि देवाक हिनका बिष्ट छलन्हि। जे पण्डित उत्तर नहि दए सकैत छलथिन्ह तनिका ई लज्जित नहि करैत छलाह, कारण जे ई जनैत छलाह जे सभ पण्डित सभ प्रश्नक उत्तर दए सकथि से सम्भवे नहि थिक। तथापि पण्डित स्वयं लज्जित भए जाइत छलाह। एहन पंडित एहि तरहें प्रश्न कए देव शिष्टाचारक विरुद्ध बूझि मनहि मन किछु रुष्ट सेहो होथि।

एक पण्डित, एहि प्रकारक प्रश्न पर रुष्टे नहि, क्रुद्ध भए म०म० मिश्रकें मुहहि पर ठाँहि-पठाँहि कहि देलथिन्ह, "अपनहुकेंजँ केओ एहिना पूछि देअए तँ केहन लागत?" क्रोधवश मुहसँ बात बहराए गेलन्हि; पण्डितजी डराए गेलाह, सोचैत रहथि जे एकर कोनो कुपरिणाम अवश्य भोगए पड़त। परन्तु म०म० मिश्रक मुह पर निश्छल हास देखि चित्त स्थिर भेलन्हि। म०म० मिश्र कहलथिन्ह, "जँ हमरा केओ पूछत तँ हमरा उत्तर देवामे ओतवे आनन्द होएत जतबा आनन्द पुछबामे होइत अछि। अपनेकें जखन जे प्रश्न करबाक हो से निःसंकोच कएल जाए, हम जनैत रहब तँ उत्तर कहब, आ जँ नहि तँ अपनहिसँ उत्तर जानि लेब। अपनेकें आइ किछु प्रश्न करहि पड़त।" बेचारे पण्डित लज्जित भेलाह आ' हिनक आग्रह पर दू-चारि छोट-सन प्रश्न पुछलन्हि तथा म०म० मिश्रसँ तुरन्त उत्तर सुनि चकित रहि गेलाह।

वास्तवमे केओ अध्यापक वा केओ छात्रो कोनहु कालमे कतहु हिनका कोनो शास्त्रीय विषय पूछन्हि तँ हिनका असीम आनन्द होइन्ह। ई थिक हिनक शास्त्र-रसिकताक उदाहरण।

एक दिन हम मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टिच्यूटक छात्रावास गेल रही जतए हमर पिता महावैयाकरण दीनवन्धु झा तथा नैयायिकप्रवर शशिनाथ झाकें आवास देल गेल छलन्हि। सन्ध्या समय दुनू विद्वान अपनामे गप्प कए रहल छलाह। म०म० मिश्र पहुँचलाह आ ओही पटिआपर बैसि गेलाह। हमर पिताकें विना कोनो भूमिकाक पुछलथिन्ह, "दीनवन्धु बाबू, जँ कोनो आचार शास्त्र-विरुद्ध आ तर्कविरुद्ध सिद्ध हो तँ तकर त्याग वा सुधार करव उचित होएत कि अनुचित?" महावैयाकरण उत्तर देलथिन्ह, "अनुचित किएक होएत।" एतवा पहिनहि स्वीकार कराए म०म० मिश्र वात खोललिन्ह, "वत्सगोत्रक प्रवराध्यायमे हमरालोकनिक पाठ अछि, वत्सगोत्रस्य और्वच्यवनभार्गवजामदग्न्याप्लवानेति पञ्च प्रवराः। अर्थात् वत्स गोत्रमे पाँच प्रवर ऋषि भेलाह—(1) और्व, (2) च्यवन, (3) भार्गव, (4) जामदग्न्य, तथा (5) आप्लवान। एहिमे हमरा शंका अछि जे जखन आन सभ गोत्रक प्रवराध्यायमे गोत्रक मूल ऋषिक नाम आरम्भहिमे अछि, जेना 'काश्यप गोत्रस्य काश्यपावत्सार, इत्यादि, 'शाण्डिल्यगोत्रस्य शाण्डिल्यासित' इत्यादि, तखन वत्सगोत्रक प्रवरमे स्वयं वत्स ऋषिक नाम किएक छूटल अछि?" नैयायिकप्रवर शशिनाथ झा वजलाह, "हुँ···अहाँक प्रश्न तँ खूव समीचीन अछि, मुदा उत्तर देव कठिन लगैत अछि।" महावैयाकरण पुछलथिन्ह, "की, अहाँक मत जे एहिमे वत्स जोड़ि देल जाए? तखन तँ वत्स गोत्रक छओ प्रवर भए जाएत।" म०म० मिश्र एहि आपत्तिकें स्वीकार कएलन्हि। तत्काल तीनू पण्डित कोनो उत्तर नहि वहार कए सकलाह। म०म० मिश्र एहि विषयक अनुसन्धानमे लागि पड़लाह आ' एकर समाधान शास्त्रसँ निकालिए लेलन्हि। समाधान ई छल जे उक्त गोत्राध्यायमे 'भार्गव' शब्द कोनो ऋषिक नाम नहि थिक, ई जामदग्न्यक विशेषण थिक। जामदग्न्य नामक दू ऋषि छलाह तें भेद करवाक हेतु अपत्यवाचक 'भार्गव' विशेषण लगाओल गेल अछि। फलतः वत्स शब्द जोड़लहि पर पाँच प्रवर पुरैत छथि, नहि जोड़ने चारिए भए जाइत छथि। अतः वत्स शब्द जोड़व आवश्यक। जखन एहि वातक सत्यापनक हेतु अधिकाधिक प्राचीन ताड़पत्रक लेख सभ देखलन्हि तँ म०म० मिश्र हर्ष ओ विस्मयसँ चौंकि उठलाह। तुरन्त महावैयाकरणकें राज लाइब्रेरीमे वजाए ओ तालपत्र देखाए देलन्हि जाहिमे वास्तवमे 'वत्स' शब्द आरम्भहिमे समाविष्ट छल। एहि विषय पर म०म० मिश्र एक निवन्ध लिखलन्हि ताहिमे ई तर्क देलन्हि जे केओ अनभिज्ञ पुरोहित 'भार्गव' लगाए गनने होएताह तँ छओ प्रवर भए गेल होएतन्हि, तें पाँच करबाक हेतु अपन दुर्बुद्धिसँ ओहिमे वत्स शब्द हटाए देने होएताह आ से गतानुगतिकतया प्रचलित भए गेल होएत।

ज्ञातव्य जे आन-आन प्रश्नमे म०म मिश्र स्वयं परम्परावादी होइत छलाह, परन्तु एहि विषयमे परम्पराकें बदलवाक पक्षमे छलाह जकर स्वीकृति महावैयाकरणसँ ई पूर्वहि लए चुकल छलाह। आव ओ अगत्या म०म० मिश्रक पक्षक समर्थक भेलाह। लोकव्यवहारमे एहि भ्रममूलक गतानुगतिकताक अन्त तँ नहि भेल परन्तु म०म० मिश्रक सूक्ष्म दृष्टि एवं तत्त्वानुसन्धानपरायणताक सभ पण्डित प्रशंसा कएलन्हि।

एकटा एहने आओर परम्पराकें म०म० मिश्र शास्त्रविरुद्ध घोषित कएलन्हि। मैथिल ब्राह्मणमे वा मैथिल मात्रमे प्रत्येक शुभकर्मक अवसर पर "आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्" इत्यादि वैदिक मन्त्र पढ़ि माथ पर दूर्वाक्षत (दूबि ओ अक्षत) छीटल जाइत अछि। एहि विधिमे कतोक ब्राह्मण-परिवारमे 'अक्षत' शब्दक अर्थ अरवा चाउर बूझल जाइत अछि आ' बहुत परिवारमे धान। म०म० मिश्र एहि द्वैमत्यकें उठाए शास्त्रीय प्रमाणसँ ई सिद्ध कएलन्हि जे 'अक्षत' क अर्थ चाउर नहि, धान होइत अछि, कारण अक्षत शब्दे कहैछ जे प्रकृत हो, कोनो प्रकारें क्षत-विक्षत नहि हो से तँ धाने थिक, चाउर त कूटल-छाँटल भेने क्षत भए जाइछ। अतः धार्मिक कृत्यमे जतए-जतए 'अक्षत' क प्रयोग अछि ततए-ततए धान लेल जाए, चाउर नहि। परन्तु हिनक ई मत आन केओ पण्डित नहि मानलन्हि। हुनकालोकनिक कहब छलन्हि जे समस्त देशमे मन्दिर ओ घरमे अक्षतसँ जे पूजादि कर्म विहित अछि से चाउरसँ होइत अछि, धानसँ कतहु नहि। अतः अक्षत शब्दक अर्थ धान ओ चाउर दुनू थिक, जतए जे व्यवहार पूर्व कालसँ चल आबि रहल अछि ततए तदनुसारे चाउर वा धानक व्यवहार उचित। तथापि म०म० मिश्र अपन मत पर अटल आ डटल रहलाह; ततवे नहि, व्यवहारतः सेहो चाउर छाड़ि देवपूजो धानहिसँ करए लगलाह। हिनक परम्पराविरुद्ध शास्त्र सम्मत मार्ग अपनएबाक ई दोसर उदाहरण भेल।

एहि उदाहरण सभसँ लक्षित होइछ जे ई अपन मतमे केहन कट्टर छलाह, कतेक शास्त्ररसिक छलाह, कतेक परम्पराग्रही छलाह तथा शास्त्रक आधार पाबि कतेक परम्परा-भंजक छलाह, केहन उदार छलाह, केहन दयालु छलाह, अधीनस्थ कर्मचारी पर वा अध्यापक एवं छात्रमंडल पर नियन्त्रण रखबामे कतेक समर्थ छलाह। एतेक गुण एक ठाम भेटब कदाचिते सम्भव अछि। इएह गुण सभ हिनका एतेक ऊँच तक पहुँचएबाक सीढ़ी छल।

# म०म० उमेश मिश्रक कृतिक विवरण

## 1. मौलिक ग्रन्थ

### (क) अङरेजीमे

History of Indian Philosophy, Vol. I (1957), Vol. II (1966); Vol. III (Manuscript); Tirabhukti Publications, Sir P. C. Banerji Road, Allahabad.

Concept of Matter According to Nyāya Vaiśeṣika (1936); Tirabhukti Publications, Allahabad.

Mīmāṁsā kusumāñjali or Critical Bibliography of Mīmāṁsā (Joint author with M. M. Dr. Ganganatha Jha); Benares Hindu University.

A Critical Study of Bhagavadgītā, 2nd edition (1966); Tirabhukti Publications, Allahabad,

Index to the English Translation of Sābara bhāsya by M. M. Dr. Ganganatha Jha; Gaikwad's Oirental Series. Baroda, No. C111.

### (ख) हिन्दीमे

सांख्य-योग दर्शन, 1958; तीरभुक्ति प्रकाशन, प्रयाग।

भारतीय तर्कशास्त्र की रूपरेखा, 1950; राम नारायण लाल, प्रयाग।

भारतीय दर्शन, 1960; हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ।

विद्यापति ठाकुर, चतुर्थ संस्करण; हिन्दुस्तानी अकेडमी, मोती लाल नेहरू पार्क, प्रयाग।

### (ग) मैथिलीमे

मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता, दू भाग, 1961, वैदेही समिति, लाल बाग, दरभंगा।

कमला (लघु उपन्यास); मिथिला मिहिर (प्राचीन सीरीज) दरभंगा।
नलोपाख्यान तथा अन्य उपाख्यान; 'वटुक' कार्यालय, प्रयाग।
सांख्यकारिका, मैथिली व्याख्या (अप्रकाशित)।
साहित्यदर्पण, मैथिली अनुवाद (अप्रकाशित)।
अतिचारनिर्णय; वैदेही-प्रकाशन, दरभंगा।

2. **संकलित सम्पादित ग्रन्थ**

(क) संस्कृत ओ अङ्गरेजीमे

Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Ganganatha Jha Research Institute, Allahabad (Vol. I, part 1 and 2).

Vedāntakośa; compiled for the Post-graduate Research Institute, Deccon College, Poona (to be published.)

न्यायकौस्तुभ, महादेवकृत; प्रिन्स आफ वेल्स सरस्वती भवन टेक्स्ट सीरीज, वाराणसी, 1930।

मीमांसाशास्त्रसर्वस्व, हलायुधकृत; बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी,पटना, 1934।

एकादशाद्यधिकरण, मुरारिमिश्रकृत; भंडारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टिच्यूट, पूना।

मेधातिथिभाष्य, खंड II; रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, वंगाल, कलकत्ता, 1939।

विज्ञानदीपिका, विवृतिसहित, पद्मपादाचार्यकृत; इलाहाबाद यूनिभर्सिटी संस्कृत सीरीज, खंड I, 1940।

विद्याकर-सहस्रक; इलाहाबाद यूनिभर्सिटी संस्कृत सीरीज, खंड II, 1942।

परिभाषेन्दुशेखर, म०म० जयदेव मिश्र कृतविजया सहित, तृतीय संस्करण, प्रयाग, 1941।

व्युत्पत्तिवाद, म०म० जयदेव मिश्र कृत जया टीका सहित, द्वितीय संस्करण, प्रयाग, 1940।

शास्त्रार्थरत्नावली, म०म० जयदेव मिश्रकृत, तृतीय संस्करण, प्रयाग, 1940।

तन्त्ररत्न, भाग I, पार्थसारथि मिश्रकृत; सरस्वती भवन टेक्स्ट सीरीज, बनारस, 1930 (म०म० डा० सर गंगानाथ झाक संग)।

भेदरत्न, शंकरमिश्रकृत; सरस्वती भवन टेक्स्ट सीरीज, बनारस, 1930 (सर गंगानाथ झाक संग)।

गौतमन्यायसूत्र, वात्स्यायनकृत भाष्य सहित; पूना ओरिएन्टल सीरीज 58, 1939।

निवन्धसारसंग्रह, चतुर्दश प्राच्यविद्या सम्मेलन, दरभंगामे पठित निबन्धक सारांश, पूना।

तत्त्वचिन्तामणि, गंगेश उपाध्याय कृत, पक्षधर मिश्र कृत आलोक एवं महेश ठाकुर कृत दर्पण टीका सहित; मिथिला रिसर्च इन्स्टिच्यूट, दरभंगा, 1957।

छान्दोग्योपनिषद्, डा० गंगानाथ झा कृत अङरेजी अनुवाद सहित; पूना ओरिएन्टल सीरीज नं० 78, 1942।

विवादचिन्तामणि, वाचस्पतिमिश्रकृत, सर गंगानाथ झा द्वारा अङरेजीमे कएल अनुवाद सहित; गायकवाड ओरिएन्टल सीरीज, वड़ोदा, नं० 99, 1942।

स्मृतिसारसंग्रह, हरिनाथ उपाध्यायकृत; गायकवाड ओरिएन्टल सीरीजक हेतु सम्पादित (पांडुलिपि)।

आत्मबोध, गोविन्द भगवत्पादाचार्यकृत (पांडुलिपि)।

न्यायरत्नाकर, म०म० चन्द्रकृत (अप्रकाशित ?)।

चतुर्दश अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन, दरभंगा, 1948क प्रोसीडिङ्स, खंड 1 सँ 23।

(ख) मैथिलीमे

कृष्णजन्म, मनवोधकृत, प्रथम संस्करण; पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, दरभंगा, 1938 इ०; द्वितीय संस्करण, तीरभुक्ति प्रकाशन, प्रयाग।

मैथिली गद्य-कुसुमांजलि; अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा, 1936।

मैथिली कुसुमांजलि; अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा, 1936।

कीर्तिलता, विद्यापतिकृत, मैथिली अनुवाद सहित, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति. प्रयाग, 1960।

कीर्तिपताका, विद्यापतिकृत (डा० जयकान्त मिश्रक संग); अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, प्रयाग, 1960।

3. **निबन्ध**

(क) अङरेजीमे

Dream Theory in Indian Thought; Allahabad University Studies.

Physical Theory in Indian Thought; Allahabad University Studies.

Bhāskara School of Vedānta; Allahabad University Magazine.

Synthetic Gradation in Indian Thought; Allahabad University Studies.

Caṇḍeśvara Thākura and Maithili; Allahabad University Studies.

Gauḍapāda and Māṭharavṛtti; Allahabad University Studies.

Meaning of the term Parārdha and Indian Numerical Notation; Princess of Wales Sarasvati Bhavana Series, Government Sanskrit College, Benares, 1929.

Maithili and Rucipati Upādhyāya; JBORS, 1928,

Maithili and Jagaddhara; JBORS, 1928.

Murāres Tṛtīyaḥ Panthāḥ; Procedings of the All India Oriental Conference, 1928.

Annihilation of Karman as the Cause of Mokṣa according to Padmapādācārya; Proceedings of the All India Oriental Conference, 1983.

Smṛti Theory according to Nyāya-Vaiśeṣika; K. B. Pathak Commemoration Valume, Poona, 1930.

Mahāmohopadhyāya Candra and his Views; Ganganatha Jha Commemoration Volume, 1942.

Background of Bādarāyaṇasūtras; Vedānta Number of Kalyāṇa-Kalpataru, Gorakhpur.

Introduction to Indian Philosophy; Twentieth Century, Allahabad, August, 1936.

A Brief Note on the Kandaha Inscription of King Narasiṁha deva 1435 A. D.; Allahabad University Studies. Vol. XII.

Stray Thoughts on the Great Vācaspati Miśra and his Tattvakaumudī; Proceeding of the All India Oriental Conference, Mysore, 1935.

A Critical Study of Bhagavadgītā; Mithilā Mihira, 1922.

Tarkasūtra; B. C. Law Commemoration Volume, Poona, 1946.

Law of Karman in the Vedic Saṁhitās; Allahabad University Magazine.

Kālidāsa's Supremacy; Ayodhyāsiṁha Commemoration Volume, Arrah, 1936.

Maithili 1900-1945; The Indian Literature Today, All India P.E.N. Center, Bombay.

Indian Materialism; Twenticth Century, Allahabad, 1937.

A Review of Philosophy and Religeon 1940; Modern Review, 1944.

Review of Professor Radhakrishnan's Second Volume of Indian Philosophy; Journal of the Bihar and Orissa Research Society, 1928.

The Missing Kārikā of Sāṅkhyasaptati; Vidyā Bhavan Patrikā, Bombay.

Jīva-Its Movement and Uplift; Journal of the Oriental Institute, Baroda.

The Nature of Physical World according to Nyāya-Vaiśeṣika; Ram Krishna Mission's Cultural Heritage of India, Vol. iv.

Downfall of Buddhism in India; Gode Commemoration Volume, and Journal of the Ganganatha Jha Research Institute, Allahabad.

Law of Karman; Hiralall Khanna Commemoration Volume, Kanpur.

Pramāṇa in Sāṅkhya; Sampurnanand Commemration Volume, 1950.

## (ख) हिन्दीमे

प्राचीन वैष्णव सम्प्रदाय; हिन्दुस्तानी, प्रयाग।

भारतीय दर्शन की रूप-रेखा; अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक मेरठ अधिवेशन, 1948क अध्यक्षीय अभिभाषण।

मैथिली साहित्य; हिन्दुस्तानी, प्रयाग।

ऋग्वेद में कर्मविचार; श्रीकृष्णसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ, मुंगेर।

भारतीय दर्शनों का स्वरूपनिरूपण; विक्रम स्मृति ग्रन्थ, ग्वालियर, 2001 विक्रमाब्द।

प्राचीन भारत में शल्यविद्या; विक्रम स्मृति ग्रन्थ, निबन्ध-संग्रह, हिन्दू संघ, कानपुर।

काव्य और कवि; हिन्दुस्तानी, प्रयाग।

त्याग; श्री राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ, आरा, 1950।

दुष्यन्त का आंशिक चरित्र; किशोर, कालिदास-अंक, पटना, 1944।

गोवर्धनाचार्य और उनकी सप्तशती; वैशाली, मुजफ्फरपुर, अंक 1, तथा मनोरमा, प्रयाग।

(ग) मैथिलीमे

चोरि विद्या; मिथिला-मोद, वाराणसी, 1922।

तिरहुता लिपि; मिथिला-मोद, वाराणसी, 1923।

शंकरमिश्र ओ हुनक कृति; मिथिला-मोद, वाराणसी।

मिथिला मैथिल मैथिली; मिथिला-मिहिर, मिथिलांक, प्राचीन सीरीज, दरभंगा 1935।

अध्यक्षीय अभिभाषण; मैथिली साहित्य परिषद्, पटना, मिथिला-मिहिर 1938।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिपदक घोंघरडीहा अधिवेशन, 1933 क अध्यक्षीय भाषण; पुनर्मुद्रण, भाषणत्रयी, मैथिली अकादमी, पटना, 1982।

मैथिली लेखशैली; चतुर्थ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, मुजफ्फर-पुर, 1936।

मैथिली लेखक सम्मेलन, दरभंगा, 1944 मे देल गेल भाषण।

शास्त्रार्थ-परिपाटी; मिथिला-मोद, 1923।

देशदशा; मिथिला-मिहिर, दरभंगा।

ऋतुवर्णन; स्वदेश, दरभंगा; मैथिली इण्टरमीडिएट गद्यपद्य संग्रह, मैथिली अकादमी, पटना, 1981 मे पुनर्मुद्रित।

आनन्द की थिक; जीवनक अन्तिम लेख; उमेश मिश्र स्मृति अंक, बटुक, इलाहाबाद, 1967।

## म०म० डा० उमेश मिश्रक वंशावली

(23) हलायुध >(22) महोदधि> (21) जाइक> (20) महाधुर>
(19) गाऊ>(18) वागीश्वर (17) म०म० रत्नेश्वर>(16) म०म० सुरेश्वर
(15) म०म० विश्वनाथ

↓

म०म० रविनाथ : म०म० लक्ष्मीनाथ : म०म० रघुनाथ : रतिनाथ : रामनाथ

→

म०म० जीवनाथ : (दिगोन) म०म० भवनाथ : (सरिसव) म०म० देवनाथ (सरिसव) ↓ (13) जोरा (दिगोन) ↓ डालू (कटका) ↓ वाराहनाथ (भौआल)

↓ म०म० शंकर शुचिपति : ↓ (12) रुचिपति ↓ गादू ↓ म०म० हरिनाथ

हरिहर : ↓ (11) नरहरि ↓ बीसू ↓ गुणे

(10) रामनाथ : श्रीनाथ : ↓ दुर्लभ ↓ म०म० केशव ↓ म०म० पक्षधर

↓

(9) लक्ष्मीनाथ : गौरीनाथ : भवानीनाथ

↓

(8) मधुसूदन

↓

(7) बदरी

↓

(6) म०म० हरिनन्दन

↓

(5) छोटा

↓

(4) वैयाकरण कालिकादत्त

↓

↓

(3) चित्रनाथ प्रसिद्ध वखेड़ी

↓

(2) म०म० जयदेव : वासुदेव : जनार्दन : मधुसूदन : मुकुन्द : ज्यौ० केशव

↓

(1) म०म० उमेश : रमेश प्रसिद्ध मिसरी : डा० श्रीकृष्ण

↓

डा० जयकान्त : डा० विजयकान्त : श्री कृष्ण कान्त : श्री रमाकान्त : श्री प्रभाकान्त : श्री सुधाकान्त ।

□□

# भारतीय साहित्यक निर्माता

भारतीय साहित्यक इतिहास-यात्रामे अपन महत्त्वपूर्ण पदचिह्न जे केओ छोड़ि गेलाह अछि—पुरना किंवा नवका साहित्यनिर्मातालोकनि तनिका सभक परिचय देबाक लक्ष्य सोझाँ राखि एहि ग्रन्थमालाक आयोजन कएल गेल अछि।

एहि मालाक प्रत्येक पोथीमे कोनो एकटा एहन विशिष्ट भारतीय लेखकक जीवन ओ कृतित्वक बखान कएल जाइछ जे अपन भाषाक माध्यमसँ भारतीय साहित्यक उन्नति ओ विकासमे स्थायी एवं मूल्यवान योग देने छथि।

एहि क्रममे मैथिली लेखक पर ओ मैथिली भाषामे एखन धरि जे पुस्तक प्रकाशित भेल अछि तकर विवरण नीचाँ देल जाइत अछि :

## मूलतः अङरेजीमे

| | |
|---|---|
| **विद्यापति** | रमानाथ झा |
| **चन्दा झा** | जयदेव मिश्र |

## मूलतः मैथिलीमे

| | |
|---|---|
| **सीताराम झा** | भीमनाथ झा |
| **उमेश मिश्र** | गोविन्द झा |

## मैथिलीमे अनूदित

| | |
|---|---|
| **नामदेव** | माधव गोपाल देशमुख<br>अनु० : सोमदेव |
| **ईश्वरचन्द विद्यासागर** | हिरण्यमय वैनर्जी<br>अनु० : उदयनारायण सिंह नचिकेता |
| **काजी नजरुल इस्लाम** | गोपाल हालदार<br>अनु० : रमाकान्त झा |
| **जयदेव** | सुनीतिकुमार चटर्जी<br>अनु० : शैलेन्द्रमोहन झा |
| **चण्डीदास** | सुकुमार सेन<br>अनु० : गोविन्द झा |

117142
9.12.04

सुनीतिकुमार चटर्जी कहने छथि—हमर विद्वान्लोकनि संस्कृत-सदृश अगाध साहित्यक रसमे ततेक सराबोर भए जाइत अछि जे हुनका अपन मातृभाषा-दिस कन-डेरियो तकबाक पलखति नहि होइत छन्हि। एकर विपरीतो उदाहरण अछि। मिथिलामे मध्य युगहिसँ कतोक एहनो दिग्गज विद्वान् भेलाह अछि जे संस्कृत तथा अपन मातृभाषा दुनूक सेवा कएलन्हि अछि। एहन विद्वत्परम्पराक आरम्भ हलायुध ओ ज्योतिरीश्वरसँ होइत अछि। एही परम्पराक एक उज्ज्वल रत्न भेलाह महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र। ई चिर-कालसँ बरैत मैथिली-साहित्यक अखंड दीपकें कालक विपरीत वायुसँ बचबैत आ' नवीन आज्यसँ भरैत-भरबैत रहलाह आ संगहि देशमे संस्कृत शिक्षाक प्रचार-प्रसार करैत रहलाह।

प्रस्तुत पुस्तकमे म०म० मिश्रक जीवनक मुख्यतः सारस्वत पक्ष पर प्रकाश देल गेल अछि जाहिमे एक विशिष्ट अंग अछि मैथिली-साहित्यक निर्माण। तथापि चेष्टा राखल गेल अछि जे इंगित रूपहुँ हिनक परिपूर्ण छवि विविध परिपार्श्व ओ परिप्रेक्षमे परिस्फुट हो। वास्तवमे हिनक जीवनमे ने उतार-चढ़ाओ अछि आ ने कोनो विशेष घटना। अतः एहिमे रोचकताक बदला भेटत दृढ़तापूर्वक एक निश्चित मार्गपर चलनिहार विद्यातपस्वी, प्रकाण्ड प्राच्यविद्याविद्, आदर्श भारतीय आत्मा, खाँटी मैथिल पण्डित आ मैथिली-साहित्यक सफल निर्माताक एक उज्ज्वल प्रतिमूर्ति मात्र।

एकर लेखक पं० गोविन्द झा संस्कृतक विद्वान् ओ मैथिलीक साहित्यकार छथि आ' तें म०म० मिश्र कें यथार्थ रूपमे चिन्ह

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 M 687 J
00117142

रेखांकन : प्रमोद गणपत्ये

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00